धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

मई–2016 | संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

रतलाम में चातुर्मास करने की घोषणा करते हुए
पू. आचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

रतलाम चातुर्मास विनती करते हुए लाभार्थी एवं विधायक
श्री चैतन्यजी काश्यप

दिशादर्शक-धर्म चक्रवर्ती राष्ट्रसंत गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

युग प्रभावक सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में शासन प्रभावना के कार्यक्रम

- दि. 4 से 12 मई तक सियाणा नगर में दीक्षा महोत्सव ।
- सियाणा में दीक्षोत्सव समाप्ति के पश्चात मालवा की ओर विहार
- पूज्य गुरुदेवश्री ने भीनमाल स्थित बहत्तर जिनालय के परिसर में चातुर्मास पर्व पर अपना चातुर्मास रतलाम (म.प्र.) में करने की घोषणा की।

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्र सूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

हमारे गौरव

इस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा.तगराजजी जेठमलजी हिराणी रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत खिमेल, मुम्बई

शा.जेठमलजी लादाजी चौधरी गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सानेचा धाणसा, बैंगलोर

संघवी मांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर बैंगलोर

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी नेल्लोर

चंपालालजी बालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगाणी, मुम्बई भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन बागरा

हमारे गौरव

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटुर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोतंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्टूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्टुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोराउ

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सूरत

शा. कालूचंदजी हंजाजी सकलेचा

शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी

शा. उत्तमचंदजी दरगाजी सकलेचा

हमारे गौरव

श्री नरेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

श्री सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

श्री उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

श्री ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

श्री मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

संघवी भेमतजी जेठाजी
मालवाड़ में अमरसर (सत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

श्री फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेंकाजी कटारिया
संघवी, धानसा

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नर्सीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

संघवी श्रा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धापसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाधाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पांधेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

श्रा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

श्रा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पुष्पादेवी दुधमलजी
कबदी, सायला

श्री दुधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तोलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाथेडी

शा. वगराजजी रसाजी
झोटा, दाधाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

श्री धींगड़ामलजी
भंवरलालजी पटवारी, मेंगलवा

गुजरात

बोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैनावा

बोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी धमाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडुवाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
भोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई थराद

संघवी चिमनलाल खेमचंद थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद थराद

श्री पुखराजजी ओरा थराद

वोहेरा श्री माणकलाल भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

अदाणी अमृतलाल मोहनलाल थराद

श्री चन्दूमल मफतलालजी वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक कुक्षी

स्व. समरथमलजी लहेरा कर्मठवाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी रतिचंदजी सालेचा ओरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी भंडारी, पारा

स्व. भव्य हेमांग लुणावत दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी सेठिया, कुशलगढ़

दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी मेहता, कुशलगढ़

हमारे गौरव

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
, भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपड़ा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आल्सासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
कावदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री सिरवचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कवदी, बीजापुर (कर्नाटक)

शाह सोहनलाल
मिश्रीचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
खाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक
शाश्वत धर्म
मई-2016 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
पू. राष्ट्र संत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 64 अंक 5
वीर सं.2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2072

इस अंक का मूल्य	-	15 रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150 रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600 रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100 रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुरेन्द्र लोढ़ा	(सम्पादक)
श्री अशोक श्रीश्रीमाल	(महामंत्री)
श्री. ओ.सी जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए सुरेन्द्र लोढ़ा, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग 3007

दूसरी महिला से सदैव भ्रातृवत व्यवहार करना

भूदेव ने महाराजा की अनुपस्थिति में महल में प्रवेश किया।

उसने महारानी शिवा का हाथ पकड़कर भोग याचना की।

शिवारानी गुस्से में लाल हो गई। उसने झटके से हाथ छुड़ाया तथा वहाँ से महल के दूसरे खंड में चली गई।

भयभीत भूदेव जान बचाकर अपने निवास गया। वहां वह बीमार हो गया। शिवा उज्जैन के प्रखर राजा चन्द्रप्रद्योत की रानी थी। वह महाराजा चेटक की पुत्री थी। भूदेव चण्द्रप्रद्योत का मित्र था। वह शिवारानी के साथ भाई के समान व्यवहार करता था लेकिन उसकी नियत विकृत हो गई। शिवादेवी ने तीर्थंकर के आगमन पर उनकी देशना सुनकर व्रत लिया था। चन्द्रप्रद्योत एक दिन बाहर गया था।

चन्द्रप्रद्योत ने लौटकर भूदेव को बुलाया। उसने बीमारी की सूचना दी। इस पर चन्द्रप्रद्योत शिवरानी के साथ उसका स्वास्थ्य पूछने गया। मौका देखकर शिवारानी ने उससे कहा कि 'तू मेरा भाई है। बहिन भाई को अच्छे रास्ते पर रखती है। भाई! परस्त्री को सदैव बहन मानना, उससे हमेशा भ्रातृवत व्यवहार करना। इसी में तेरा भला है।' भूदेव उसके चरणों में गिर गया। शिवारानी पूर्णतः पतिव्रता बनी रही। समय आने पर इसकी उसने परीक्षा भी दी और उसमें खरी उतरी। शिवा ने भूदेव को आत्मकल्याण की राह दिखाई। न केवल आत्मग्लानि से बचाया बल्कि चन्द्रप्रद्योत के क्रोध से भी बचा लिया। उसे प्राणदान दिला दिए।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

संचालक- अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्

अनुक्रम

32330

क्र.		पृष्ठ संख्या
1.	सर्वनाशकारकः लोभ (2) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	11
2.	गणधरवाद (लेखांक-34) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	14
3.	स्वर्णप्रभा (लेखांक-34) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	16
4.	प्रश्नोत्तरी	19
5.	श्रीसंघ अध्यक्ष की पाती (वाघजीभाई वोरा)	20
6.	अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरू)	21
7.	सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा)	22
8.	संयम ही सुखी जीवन की आधारशिला (श्री भुवनेन्द्रसिंह)	24
9.	तीर्थंकर श्री ऋषभदेवजी (मुनिराज डॉ.श्री सिद्धरत्न विजयजी म.सा.)	28
10.	अक्षय तृतीया-वर्षीतप पारणा (समरथमल लुणावत, पुणे)	30
11.	चिंतन की चांदनी-2	32
12.	मेरी आस्था के केन्द्र मेरे गुरुदेव (श्री अचलचन्द जैन, सायला)	33
13.	धर्मः कल्याण का मार्ग (डॉ. श्री सुभाष जैन)	35
14.	जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा.)	38
15.	शुक्ल ध्यान के योग से भरत चक्रवर्ती ने... (श्री शांतिलाल सगरावत, मन्दसौर)	40
16.	मृत्यु जीवन की पूर्णता की घोषणा है (मुनि डॉ. वैभवरत्न विजय म.सा.)	41
17.	आखातीज एक पावन पर्व (साध्वी आत्मदर्शनाश्री)	43
18.	परम हितकारिणी गुरु सेवा (साध्वी श्री रुचिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	45
19.	कर्म सत्ता-धर्म सत्ता (आचार्य श्री रत्नसेन सूरिजी म.सा.)	48
20.	नवग्रहों के रत्न रहस्य (श्री दिनेश जैन)	50
21.	अक्षय तृतीया (श्री गणेशमुनि शास्त्री)	52
22.	सफेद पेठाः रामबाण औषधि (श्री अनोखीलाल कोठारी, उदयपुर)	53
23.	महिला शाश्वत	55
24.	प्रश्नोत्तरी (मुनिराजश्री तारकरत्न विजयजी)	56
25.	आत्मविश्वास महान शक्ति (श्री पारस गोलेच्छा)	57
26.	गीत (विभाषाएं जैन, पारा)	58
27.	'नवकार करे भवपार' प्रश्नावली के उत्तर (साध्वी प्रीतिदर्शनाश्रीजी)	59
28.	गुजराती संभाग	63-88
29.	कुमकुम सने पगलिये	89-91
30.	श्री संघ सौरभ	92-122
31.	वर्ग पहेली	123
32.	परिषद् प्रांगण से	125-129
32.	जैन विश्व	131
33.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	133-134

प्रवचन

सर्वनाशकारकः लोभ (2)

(गतांक से आगे)

सुविशाल गच्छाधिपति युग प्रभावक राष्ट्रसंत
जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

4. संज्वलन लोभ– यह जीव के यथाख्यात के चारित्र में बाधा डालता है। पतंग के रंग के समान इसका रंग जल्दी ही उड़ जाता है। इसकी स्थिति अंतर्मुहूर्त मानी गई है। इसकी उपस्थिति में जीव केवलज्ञानी नहीं बन सकता। इस कषाय में जिस जीव का शरीर छूटता है, उसकी देवगति होती है। मरकर वह स्वर्गवासी होता है। देवलोक में उत्पन्न होता है।

लोभ के 'लालच', 'तृष्णा' आदि बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। भृर्तहरि ने कहा था कि तृष्णा को बुढ़ापा नहीं आया, हमें ही आ गया–

तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः।
लोगों का शरीर बूढ़ा हो जाता है, परन्तु तृष्णा तरुणी बनी रहती है।
वलिभिर्मुखमाक्रान्तं पलितैरंकित शिरः।
गात्राणि शिथिलायन्ते, तृष्णैका तरुणायते।।
जीर्यन्ते जीर्यतः केशाः, दन्ता जीर्यन्ति जीर्यतः।
जीर्यतश्चक्षुषी श्रोत्रे, तृष्णैका तरुणायते।।

मुखमंडल पर झुर्रियाँ पड़ गई हैं, मस्तक सफेद बालों से भर गया है, शरीर ढीले हो गये हैं, परन्तु अकेली तृष्णा ही है जो जवान होती जा रही है (शरीर की दुर्दशा का तृष्णा पर कोई प्रभाव ही नहीं पड़ा) ज्यों-ज्यों व्यक्ति बूढ़ा होता जाता है, त्यों-त्यों उसके बाल (केश), दाँत, आँखें और कान भी जीर्ण होते जाते हैं, परन्तु अकेली तृष्णा ही है, जो जवान होती जाती है।

जिसके पास नौ रुपए होते हैं,वह सोचता है कि कहीं से एक रुपया और मिल जाये तो एक पूरा दस का नोट बन जाए। दस वाला बीस, बीस वाला पचास, सौ वाला एक हजार रुपए एकत्र करने के चक्कर में पड़कर परेशान है। फिर हजार वाला क्या चाहता है? सन्त कवि सुन्दरदास के मत्तगयन्त सवैये के माध्यम से सुनिये–

जो दस बीस पचास भये सत, होई हजार तु लाख मँगेगी।
कोटि अरब्ब खरब्ब असंख्य, धरापति होने की चाह जगेगी।।
स्वर्ग–पाताल का राज्य करूँ, तृसना मन में अति ही उमगेगी।
'सुन्दर' एक संतोष बिना सठ! तेरी तो भूख कभौं न मिटेगी।।

इसी से मिलती–जुलती बात एक संस्कृत के सुभाषित में भी कही गई है–

निःस्वो वष्टि शतं शती दश शतं, लक्षं सहस्राधिपो,
लक्षेशः क्षितिराजतां क्षितिपतिश्चक्रेशतां वाञ्छति।
चक्रेशः सुरराजतां सुरपति–ब्रह्मास्पदं वाञ्छति,
ब्रह्मा विष्णुपदं हरिः शिवपदं, तृष्णावधिं को गतः ?

निर्धन सौ रुपयों की इच्छा रखता है, इसी प्रकार सौ वाला हजार की, हजार वाला लाख की, लखपति राजा बनने की, राजा चक्रवर्तित्व की, चक्रवर्ती इन्द्रत्व की, इन्द्र ब्रह्मा की, ब्रह्मा विष्णु पद की, और विष्णु शिवत्व (शंकर बनने) की इच्छा करता है। तृष्णा की सीमा किसने पाई है? किसी ने भी नहीं।

हिन्दी के कवि केशवदास ने तो अपने महाकाव्य 'रामचन्द्रिका' में एक जगह तृष्णा की तुलना अंधेरी रात से कर डाली है। अँधेरी रात में जिस प्रकार आँखवाले भी अंधे हो जाते हैं और धैर्यशालियों के भी छक्के छूट जाते हैं, उसी प्रकार तृष्णा में भी व्यक्ति अंधे (विवेकहीन) हो जाते हैं तथा धैर्यहीन (धन के लिए अधीर) हो जाते हैं–

आँखिन आछत आँधरो, जीव करे बहु भाँति।
धीरन धीरज बिन करे तृष्णा कृष्णा राति।।

हम देखते हैं कि चाँद को जैसे राहु ग्रस लेता है, उसी प्रकार अच्छी–अच्छी वस्तुएँ विकृत हो जाती हैं। यौवन अच्छा है, परन्तु वार्धक्य आकर उसे नष्ट कर देता है। रोग स्वास्थ्य को नष्ट कर देते हैं (अच्छे से अच्छे पहलवान को भी यदि उदरशूल या मलेरिया हो जाय तब उसे खाट पकड़नी पड़ती है।) जीवन के अंत में मृत्यु लगी रहती है (सभी जन्म लेने वाले प्राणियों को अनिवार्य रूप से मरना पड़ता है।) परन्तु तृष्णा एक ऐसी चीज है, जिस पर कोई उपद्रव नहीं होता।

यौवनं जरया ग्रस्तमारोग्यं व्याधिभिर्हतम्।
जीवितं मृत्युरभ्येति, तृष्णैका निरुपद्रवा।।

तृष्णा निरुपद्रव होने से वह दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती जाती है। संत कवि भूधरदास क्या कह रहे हैं? देखिये–

रूप को त्यों खोज रह्यो, तरु ज्यों तुषार दह्यो,
भयो पतझार कैधों, रही डार सूनी-सी।
कबूरी भई है कटि, दूबरी भई है देह,
ऊबरी इतैक आयु, सेर माँहि पूनी-सी।
जोवन ने विदा लीनी, जरा नै जुहार कीनी,
हीन भई सुधि-बुधि सबै आत ऊनी-सी।
तेज घट्यो ताब घट्यो, जीतबेको चाव घट्यो,
और सब घट्यो एक तृष्णा दिन दूनी-सी।।

यह तृष्णा तन की भी होती है और मन की भी। भूख-प्यास आदि तन की तृष्णा तो सीमित है, परन्तु धनसंग्रह, यश आदि मन की तृष्णा असीम होती है। वह मेरु जैसे महापर्वत को भी निगलकर भूखी रह जाती है।

तन की तृष्णा तनिक है, तीन पाव या सेरु।
मन की तृष्णा अमित है, गिलै मेरु को मेरु।।

जितनी तृष्णा बढ़ती जाती है, उतनी ही सामग्री बढ़ती जाती है और जितनी सामग्री (परिग्रह) में वृद्धि होती है, उतनी ही दुःख में वृद्धि होती है, इसलिए यदि हमें दुःख से बचना है तो पहले तृष्णा से बचना होगा। महात्मा बुद्ध ने ऐसा उपदेश दिया था-

ये तण्हं बड्ढेन्ति ते उपधिं वड्ढेन्ति।
ये उपधिं बड्ढेन्ति ते दुक्खं वड्ढेन्ति।। संयुत्तनिकाय 2/12/66

तृष्णा को दौलत और इज्जत से तृप्त करने का प्रयास समुद्र जल से प्यास बुझाने का प्रयास करने के समान है। प्यासा समुद्र जल को जितना अधिक पीता है, उतना ही अधिक अपने को 'प्यासा' अनुभव करता है और निरन्तर जल पीते-पीते, पीने वाला अपने प्राण छोड़ देता है। धन और यश का पीछा करने वाला भी अशांति और अतृप्ति में अपने जीवन का अंत कर देता है, अपनी आयु पूरी कर देता है, परन्तु सुख का स्वाद कभी चख नहीं पाता।

-क्रमशः....

अंतर में ज्योत जगमगा रही है,
व्यर्थ ही मत मटको जहाँ-तहाँ ।
स्वाध्याय है सफलता का सोपान,
इससे सफल करो मानवातार ।

-जयचंद्र बाफना

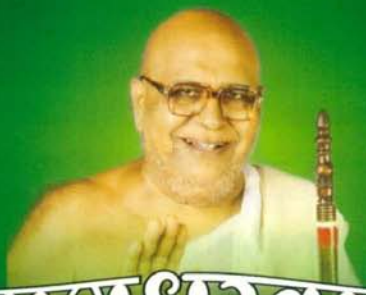

गणधरवाद

सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.
प्रवचनकार

अपने आचार्य के हृदयोद्गारों एवं शिष्य दीक्षा देने की प्रार्थना को सुनकर सहगत पाँच सौ शिष्यों को आश्चर्य नहीं हुआ। वे भी भगवान महावीर की वीतरागता, सौम्यता एवं युक्ति संगत तत्व प्रतिपादक शैली से प्रभावित होकर गौतम के साथ ही भगवान महावीर के शिष्य बन गये। सब ने पंच महाव्रत युक्त चरित्र ग्रण कर भगवान के शासन में प्रवेश किया।

मानसिक संकल्प विकल्प

इन्द्रभूति गौतम के भगवान महावीर का शिष्य बनने और श्रामण्य दीक्षा अंगीकार करने का संवाद क्षण मात्र में विद्युत्प्रवाहवत् सर्वत्र फैल गया। यज्ञ आयोजन में उपस्थित विशाल ब्राह्मण समुदाय में एक प्रकार का सन्नाटा छा गया और सब दिग्मूढ़ से सोचते रह गये-अरे, यह क्या? इन्द्रभूति जैसे उद्भट वेदवेत्ता विद्वान भी वर्धमान के इन्द्रजाल में फंस गये? इन्द्रभूति ही नहीं, उनका पूरा शिष्य परिकर भी प्रव्रजित हो गया?

इन्द्रभूति के कनिष्ठ भ्राता अग्निभूति ने जब इन्द्रभूति के दीक्षित होने के समाचार सुने तो क्रोधाभिभूत होकर वे मानसिक संकल्प विकल्प में उलझ गए और येन-केन-प्रकारेण श्रमण महावीर को पराजित कर इन्द्रभूति को वापस लाने का निश्चय सा कर लिया। उन्होंने सोचा कि शास्त्रार्थ में उन्हें छल कपट से भ्रमित किया होगा। यह श्रमण निश्चित ही कोई ऐन्द्रजालिक मायावी होना चाहिए। इन्द्रभूति के साथ इसने न जाने क्या किया होगा? मैं स्वयं वहाँ पहुँच कर यह सब देखूँ और उसके कपट जाल का भेदन कर यथार्थता को उद्घाटित कर दूँ। संभव है कि उसने इन्द्रभूति को पराजित किया हो; किन्तु देखता हूँ कि वह मेरे पक्ष का कैसे समाधान करता है। यदि उसने मेरा समाधान कर दिया तो मैं भी उसका शिष्य बन जाऊँगा। अन्यथा उसे ही अपना शिष्य बना कर यहाँ लाऊँगा।

अमर्ष से अभिभूत अग्निभूति भी शिष्य

परिकर से परिवेष्ठित हो, जनसमूह के साथ यज्ञ आयोजन की प्रतिष्ठा को प्रस्थापित करने हेतु श्रमण वर्द्धमान के सन्निकट वाद-विवाद करने चल पड़े। यद्यपि मुख पर विजिगीषा का आवरण, लेकिन मन में जिज्ञासा के द्वंद्व के साथ वे समवसरण के प्रवेश द्वार पर आ पहुँचे।

प्रवेश के लिए द्वार की देहली पर पग रखा ही था कि एक धीर-गंभीर स्वर उन्होंने सुना- येन-केन प्रकारेण श्रमण महावीर को पराजित कर इन्द्रभूति को वापस लाना चाहिए। 'हे अग्निभूति गौतम! तुम आये हो, भले आये।'

संबोधन सुन कर अग्निभूति चौंके। फिर उन्होंने अपने को स्वस्थ सा बनाते हुए सोचा- 'आखिर कौन है ऐसा, जो मेरी विद्वता और प्रसिद्धि से अपरिचित हो? अतः नाम और गोत्र से मुझे संबोधित कर लिया तो इसमें कौन सी विशेषता है? प्रसिद्ध व्यक्ति को तो सभी जानते हैं। मनोगत भावों को जानकर यदि उनका समाधान-निराकरण कर दे; तो मैं मानूंगा कि उसमें इनका कुछ अनोखापन और आश्चर्य करने जैसा अवश्य है।'

संशय का संकेत

विकल्पों का यह वर्तुल संभवतः और भी विस्तृत होता जाता; लेकिन इसके पूर्व ही भगवान महावीर ने कहा-'आयुष्मन् अग्निभूति गौतम! अभी तक भी कर्म के अस्तित्व -नास्तित्व विषयक अपने संदेह का समाधान नहीं कर सके हो? सब शास्त्रों का पारायण कर के भी शंकित-मना हो? वेदज्ञ होकर भी वेद पदों का वास्तविक अर्थ नहीं समझ पाये हो? और यथार्थ अर्थ न जानने से संदेहशील हो रहे हो? मैं उनका यथार्थ अर्थ समझाता हूँ।'

'हे अग्निभूति! कर्म के अस्तित्व में इसीलिये तुम्हें सन्देह है क्योंकि तुम मानते हो कि प्रत्यक्ष आदि किसी भी प्रमाण द्वारा ग्राह्य न होने से कर्म का अस्तित्व सर्व प्रमाणातीत है। खर विषाण की तरह कर्म के भी अतीन्द्रिय होने से वह प्रत्यक्ष नहीं है और जो प्रत्यक्ष प्रमाण सिद्ध नहीं; वह अनुमान आदि अन्य प्रमाणों द्वारा भी कैसे सिद्ध हो सकता है? इन्द्रभूति ने जैसे आत्मा को प्रत्यक्षादि सभी प्रमाणों द्वारा अग्राह्य सिद्ध किया था;उसी प्रकार तुम भी किसी प्रमाण का विषय न होने से कर्म के अस्तित्व को सम्पूर्ण प्रमाणातीत सिद्ध करते हो और स्वमत की पुष्टि में वेद के- 'पुरुष एवेंद सर्व...' इत्यादि वाक्यों का आश्रय लेकर 'कर्म नहीं है' ऐसा मानते हो। किन्तु वेद में ऐसे भी वाक्य विद्यमान हैं, जिनके कर्म का अस्तित्व स्वयमेव सिद्ध है। जैसे -'पुण्यः पुण्येन कर्मणा पापः पापेन'- पुण्य कर्म से जीव पवित्र होता है और पाप कर्म से अपवित्र ..इत्यादि। यही कारण है कि इन परस्पर विरोधी वाक्यों को देखने से तुम्हें सन्देह है कि वस्तुतः कर्म का अस्तित्व है या नहीं।'

-क्रमशः.....

लेखांक 34

स्वर्णप्रभा

सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

स्वर्णप्रभा ने बताया– 'यह सामान्य उपहार नहीं है। यह चिंतामणि रत्न से भी बढ़कर है। इसे सदैव अपने हृदय में रखना और इसका स्मरण करते रहना। यह उपहार हर संकट में तुम्हारी सहायता करेगा।' इतना कहकर स्वर्णप्रभा ने नवकार महामंत्र का पाठ कर सुनाया और दस्युओं से उसे दोहराने के लिए कहा। थोड़े से प्रयास से सभी दस्युओं को नवकार महामंत्र कंठस्थ हो गया। चूंकि प्रतिक्रमण का समय हो गया था, इसलिये स्वर्णप्रभा वहां से अपने तंबू में चली गई। सभी दस्यु भी उसे तथा नगर श्रेष्ठी को प्रणाम कर वहां से अनजान दिशा की ओर चले गये। जाते समय वे अपने अस्त्र–शस्त्र नगर श्रेष्ठी के चरणों में समर्पित कर गए। शेष यात्रा निर्विघ्न सम्पन्न हुई....

स्वर्णप्रभा ने फूलकुंवर के सम्बन्ध में जो भी जानकारी प्राप्त की थी, उससे जो कथानक बना उस कथानक के आधार पर स्वर्णप्रभा ने फूलकुंवर को सन्मार्ग पर लाने का उपाय भी खोजने का प्रयास किया और उसमें सफल भी हुई।

आसपुर में अमरचंद नामक एक वैष्णव मतावलम्बी व्यक्ति अपने परिवार के साथ सुखपूर्वक रहा करता था। अमरचंद और उसका परिवार ठाकुरजी के पक्के भक्त थे। ठाकुरजी की भक्ति में यह परिवार एक तरह से डूबा हुआ था। प्रतिदिन ठाकुरजी के दर्शन–पूजन आदि के लिए मंदिर न जाना पड़े और जब चाहें तब ठाकुरजी के दर्शन हो जाएं, इसलिये अमरचंद ने अपने मकान के एक कक्ष में ठाकुरजी की प्रतिमा की स्थापना करवाकर उसे मंदिर का स्वरूप प्रदान कर दिया था।

अमरचंद के पाँच पुत्र थे। पाँचों पुत्र रूप-गुण से सम्पन्न थे। उनके व्यवहार से आसपुर में सभी प्रसन्न थे। अपने पुत्रों के गुणों की प्रशंसा सुनकर अमरचंद और उसकी पत्नी फूले नहीं समाते थे। किन्तु इन दोनों के हृदय में एक बात शूल की भांति चुभती रहती थी। बात यह थी कि अमरचंद और उसकी पत्नी का यह मानना था कि वे अन्य परिवारों से तो अपने यहाँ पुत्रवधु बनाकर पांच कन्याओं को ले आए किन्तु उनके यहाँ एक भी पुत्री नहीं है। पुत्री के न होने को वे एक प्रकार से अपने ऊपर एक ऋण भार महसूस कर रहे थे। इसके अतिरिक्त वे अपनी पुत्री की चाह भी रखते थे। उनकी इच्छा थी कि उनके भी एक प्यारी सी सुन्दर पुत्री होती। उसका वे ठाट से लालन-पालन करते और अपार धनराशि खर्च कर शान-शौकत के साथ उसका विवाह करते। किन्तु जब पुत्री ही नहीं है तो वे अपनी इच्छा की पूर्ति किस प्रकार कर सकते थे। सर्वप्रकार से सम्पन्न और सुखी होने पर भी पुत्री न होने का दु:ख उन्हें सालता रहता था।

'स्वामी! पुत्री की बिदाई के समय माता को कितनी पीड़ा होती है। जमाई राजा कैसे रूठते हैं और उन्हें कैसे मनाया जाता है। इसकी अनुभूति मुझे नहीं है। इसके लिए मन तरस रहा है।' अमरचंद की पत्नी अक्सर ऐसा कहा करती।

'ऐसी अनुभूति तो मुझे भी नहीं है। जो स्थिति इस विषय में तुम्हारी है, वही स्थिति मेरी भी है। धैर्य रखो भाग्यवान। ठाकुरजी की कृपा से सब कुछ ठीक ही होगा।' अमरचंद अपनी पत्नी को ऐसा कहकर समझाते रहते थे। किन्तु वे स्वयं भी एक पुत्री के लिए अधीर हो रहे थे। पुत्री की कामना अति तीव्र थी। इसके लिए वे दान-पुण्य करते। देवी-देवताओं की मनौती मनाते, भक्ति करते, अनुष्ठान करते। यही नहीं पुत्री की प्राप्ति के लिए उन्हें जो भी मार्ग बताता उसका अनुसरण करते। किन्तु यदि ऐसे ही पुत्र-पुत्री का जन्म होने

लगे तो लोगों की मनोकामना सहज ही पूरी हो जाती। पुत्र अथवा पुत्री का होना एक संयोग के साथ ही पूर्व जन्म कृत कर्मों का फल होता है। इसके लिए भी एक समय निश्चित होता है। समय आने पर सब कुछ स्वाभाविक रूप से हो जाता है।

अमरचंद को एक दिन उसकी पत्नी ने जो कुछ बताया, उससे वह प्रसन्न हो गया। उसे विश्वास हो गया कि इस बार उसके यहाँ पुत्री का ही जन्म होगा। हाँ, उसकी पत्नी ने उसे बताया कि वह माँ बनने वाली है। उसकी पत्नी ने पूर्ण सावधानीपूर्वक अपने गर्भ का पालन किया और इस अवधि में अमरचंद ने भी अपनी पत्नी का, उसकी इच्छाओं का पूरा-पूरा ध्यान रखा। गर्भकाल पूर्ण हुआ और मध्यरात्रि में अमरचंद की पत्नी ने सुखपूर्वक एक सुंदर फूल सी कन्या को जन्म दिया। कन्या के जन्म का समाचार सुनकर अमरचंद प्रसन्न हो गया।

क्रमशः....

* गर्भ गृह की मूर्तियों का इतिहास *

1116 प्राचीन जिन प्रतिमाओं को बीकानेर में सदियों पूर्व यहाँ के दीवान कर्मचंद बच्छावत बादशाह अकबर से लेकर आए थे । घटना के अनुसार ये प्रतिमाएं सिरोही के जैन मंदिरो मे स्थापित थीं लेकिन अकबर के सेनापति तुरसमखान ने सिरोही पर आक्रमण किया तथा प्रतिमाओं को सोने की होने की आशंका से उठा लाया । वह इनको गलाने के लिए फतेहपुर सीकरी (राजस्थान) ले गया। इस बात की जानकारी तत्कालीन बीकानेर रियासत के दीवान कर्मचन्द बच्छावत को मिली और वे बहुमूल्य उपहार लेकर अकबर के दरबार में पेश हुए । उन्होंने बादशाह से निवेदन कर इन मूर्तियों को वापस ले लिया और इन्हें बीकानेर लाकर श्री चिंतामणि जैन मंदिर के गर्भ गृह में रखवा दिया। मूर्तियों के बदले कर्मचन्द ने बादशाह को बड़ी मात्रा में सोना भी दिया था ।

इन मूर्तियों को कभी-कभार ही निकाला जाता है । अब से पहले इन्हे 1976 में निकाला गया था ।

-छगनलाल भुगड़ी

उत्तरदाता

प्रश्नोत्तरी

निद्रा के प्रकार

प्रश्नकर्त्ता

पू. श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

पू. मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

प्र. अचक्षुदर्शनावरणीय कर्म किसे कहते हैं?

उ. चक्षु के अतिरिक्त दूसरी इन्द्रियों से होने वाला सामान्य ज्ञान जिससे आच्छादित हो, उसे अचक्षु दर्शनावरणीय कहते हैं।

प्र. अवधिदर्शनावरणीय किसे कहते हैं?

उ. जिससे अवधि दर्शन आच्छादित हो, उसे अवधि दर्शनावरणीय कहते हैं।

प्र. केवल दर्शनावरणीय किसे कहते हैं?

उ. जिससे केवलदर्शन आच्छादित हो, उसे केवल दर्शनावरणीय कहते हैं।

प्र. निद्रा किसे कहते हैं?

उ. सुख से सोवे, सुख से जागे ऐसी नींद को निद्रा कहते हैं।

प्र. निद्रा निद्रा किसे कहते हैं?

उ. आवाज देने से टूटे ऐसी नींद को निद्रा निद्रा कहते हैं।

प्र. प्रचला किसे कहते हैं?

उ. बैठे बैठे नींद आवे, ऐसी निद्रा को प्रचला कहते हैं।

प्र. प्रचलाप्रचला किसे कहते हैं?

उ. घोड़े की तरह चलते-फिरते नींद आवे, ऐसी निद्रा को प्रचला प्रचला कहते हैं।

प्र. स्तयानगृद्धि निद्रा किसे कहते हैं?

उ. दिन में सोचे हुए कार्य को नींद में कर डाले, ऐसी निद्रा को स्तयानगृद्धि कहते हैं।

प्र. वेदनीय के कितने भेद हैं?

उ. वेदनीय के दो भेद हैं-1. साता वेदनीय, 2. असातावेदनीय।

प्र. सातावेदनीय किसे कहते हैं?

उ. जिससे साता (सांसारिक सुख) वेदा जाय उसे साता वेदनीय कहते हैं।

प्र. असाता वेदनीय किसे कहते हैं?

उ. जिसके कारण दुःख वेदा जाय उसे असाता वेदनीय कहते हैं?

प्र. मोहनीय कर्म के कितने भेद हैं?

उ. मोहनीय कर्म के दो मुख्य भेद हैं-1. दर्शन मोहनीय और 2. चारित्र मोहनीय।

प्र. दर्शन मोहनीय कर्म किसे कहते हैं?

उ. यथार्थ श्रद्धा को दर्शन कहते हैं। इस दर्शन को जो मोहित (विकृत) करे, उसे दर्शन मोहनीय कर्म कहते हैं।

मालवा के मोतियों के मध्य

वाघजीभाई वोरा
(राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीसंघ)

परम पूज्य सुविशाल गच्छाधिपति, संगठन के सूर्य, जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञा के पालन में मैंने अपने साथियों श्री अरविन्दभाई देसाई तथा श्री रमेशभाई वोरा नड़ियाद वाले के साथ मालव प्रदेश के श्रीसंघों के दर्शन करने का कार्यक्रम निश्चित किया तथा स्वास्थ्य-अस्वास्थ्य की स्थितियों के मध्य प्रस्थान किया। वर्तमान में श्रीसंघ में सक्रिय रहने तथा अध्यक्ष पद का दायित्व संभालने एवं पूर्व में अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के पदों से जुड़ा रहने के कारण मालवा में मुझ से स्नेहतंतु विस्तृत करने वाले कई महानुभावों से परिचय रहा है, मालवा के श्रीसंघों की नगरवीर/ग्रामवार गणना भी है लेकिन निकट पहुंचकर अध्ययन करने तथा उनके स्वभाव को पहचानने का अवसर प्रथम बार था अतएव कई प्रश्न स्वाभाविक थे। मुझे यह तो ज्ञात है कि मालवा गच्छाधिपति जैनाचार्य राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के प्रति अटूट निष्ठा से ओतप्रोत है, साथ ही उनकी आज्ञाओं का पालन पूरे मनोयोग से करना मालवा की विशेषता है। स्व. श्री तगराजजी हीराणी ने अपने अध्यक्षीय कार्यक्रम में जब श्री मांडवपुर अधिवेशन में मालवा के निष्ठावान परिषद् कार्यकर्ताओं के समूह को 'मालवा के मोती' कह कर सम्बोधित किया था तब मालवावासियों के करतल जोरों से गड़गड़ाहट कर बैठे थे। ऐसे मालवा का भ्रमण करना मेरे लिये सौभाग्य था।

मेरा दौरा श्रीसंघ के साथी पदाधिकारियों तथा परिषद के सहयोगी आगेवालों के साथ पारा (जि. झाबुआ) से प्रारंभ हुआ तथा बीस नगरों के भ्रमण के पश्चात चौथे दिन मंदसौर (म.प्र.) में आयोजित कार्यक्रमों के साथ पूर्ण हुआ। उपरांत सड़क मार्ग से अहमदाबाद लौटते हुए विशेष आग्रह पर कुछ समय निम्बाहेड़ा श्रीसंघ के महानुभावों से चर्चा हुई। चार दिनों के प्रवास में निकटता से मालवा तथा मालववासी गुरुभक्तों के मध्य रहा। मुझे उनमें जिस आत्मियता, सन्मान तथा प्रेम के दर्शन हुए वह अद्वितीय हैं। मालवा की उज्ज्वल परम्परा ने मेरे हृदय को प्रकाश से भर दिया। हर नगर में गुरुभक्ति का इतना प्रबल उत्साह दिग्दर्शित हुआ कि हमारा मानस आश्चर्य में डूब गया। मालवा तो मालवा ही है। पग-पग कोटी, डग-डग नीर वाला मालवा पग-पग मोती, डग-डग प्रेम वाला बन गया है। जय जिनेन्द्र ! जय राजेन्द्र ! जय जयंत !

स्थापित करें अस्थाई नीर-केन्द्र

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष
नवयुवक परिषद

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् संस्थाजनों की समर्पणता सेवा भावना के कारण समाज सेवा के क्षेत्र में नित नये आयामों के साथ अपने लक्ष्य की लकीर को स्पर्श कर रही है। निश्चित रूप से सेवा कर सफर की सफलता परम पूज्य गुरुदेव, वचनसिद्ध, आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरिश्वरजी महाराज साहब की सद्प्रेरणा का परिणाम है। परिषद् को परम पूज्य गुरुदेव का शुभाशीर्वाद सदैव प्रेरणा पुंज बनकर हमें पुष्ट बना रहा है। परिषद्जन नदी के अविरल बहाव की भांति निरंतर संस्था के प्रकल्पों/कार्यक्रमों को मूर्तरूप प्रदान करने में जुटे हुए हैं। सेवा की इस धारा को निर्बाध रूप से गति प्रदान करने के लिए आप सभीजनों की सेवा भावना को इसी प्रकार बनाए रखने की विनंती है।

मौसम में परिर्वतन के साथ वातावरण में ग्रीष्मकाल ने लू के थपेड़ों की बयार शुरू कर दी है। परम पूज्य आचार्यश्री सूर्य की उष्णता को परिष्कृत कर मरूधर में सतत् उग्र विहाररत् हैं। उष्णता की धारा पर कदमबोशी करते हुए आचार्य देवेश ग्राम-ग्राम में जिन शासन की पताका फहराते हुए श्रीसंघ को आत्मोत्थान के लिए प्रेरित कर रहे हैं। हमें भी ग्रीष्म ऋतु में सेवा के प्रकल्पों को निर्धारित कर लक्ष्य पूर्ति की दिशा में आगे बढना है।

परिषद शाखाओं के सन्मुख एक महत्वपूर्ण कार्य ग्रीष्मकाल में पेयजल उपलब्ध करने के लिये श्री जयंत मधुकर नीर केन्द्रों की स्थापना करना है। ये प्याऊओं के स्वरूप में है। ग्रीष्मकाल में मार्गों पर निकलने वाले यात्रियों को शीतल छाया तथा शीतल जल की सदैव चाहत रहती है। हमारा कर्त्तव्य दया, करूणा, प्रेम तथा मैत्री की प्रवृत्तियों का संचालन है। श्री जयंत मधुकर नीर केन्द्र निश्चित रूप से शीतल जल की पूर्ति कर बटोरियों को राहत देंगे।

प्रसन्नता है कि कई परिषद शाखाओं ने ये नीर केन्द्र स्थापित कर दिये हैं जिनसे हजारों यात्री लाभान्वित हो रहे हैं। जिन शाखाओं ने ये नीर केन्द्र स्थापित किये हैं, वे उन्हें व्यवस्थित बनाएं तथा उनकी उपयोगिता बढावें। जिनने अभी प्रारंभ नहीं किये हैं, वे शीघ्र उनकी स्थापना करें।

आशा है सभी शाखाएं सेवा के महायज्ञ को सफल बनाने में जुट जाएंगी।

संपादकीय

पू. गच्छाधिपतिश्री का इस वर्ष रतलाम चातुर्मास

सुविशाल गच्छाधिपति, युग प्रभावक, प्रतिष्ठा शिरोमणी, ज्ञान उदधि, राष्ट्रसंत श्रीमद विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. का आगमी चातुर्मास (याने ईस्वी सन 2016 का वर्षावास) रतलाम में होगा । यह घोषणा स्वयं गच्छाधिपतिश्री ने एक विशाल चातुर्मास पर्व समारोह के मध्य की । देश भर से एकत्र कोई साठ से पैंसठ श्रीसंघों के प्रतिनिधियों ने आपसे इस वर्ष धर्माराधना करवाने के लिये अपने – यहां चातुर्मास करने की विनतियां की थीं । अंतत: अंजल तथा योग की प्रबलता दृष्टिगत कर एवं द्रव्य क्षेत्र – काल –भाव की कसौटी पर खरा उतार कर आपने रतलाम में चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान की । रतलाम से विनती करने के लिये पांच बसों के माध्यम से गुरु भक्त नरनारी भीनमाल के बहत्तर जिनालय तीर्थ परिसर में व्यवस्थित एकत्र हुए थे । विनती अभा श्री सौधर्मबृहत्पोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ के परामर्शदाता विधायक श्री चैतन्यजी काश्यप ने रतलाम श्रीसंघ की ओर से की थी । इससे एक सप्ताह पूर्व रतलाम श्रीसंघ की रतलाम में आयोजित बैठक में विधायक श्री चैतन्यजी काश्यप के परिवार को पूरे चातुर्मास का लाभार्थी बनने की स्वीकृति देती थी । श्री चैतन्यजी काश्यप की अपने परिवार की ओर से चातुर्मास करवाने की विनती कई वर्षों से थी । उनकी पूज्य माताजी की तीव्र भक्ति इच्छा चातुर्मास का लाभ लेने की रही है, इस वर्ष भी है, इनते सुपुत्र विधायक तथा सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री चैतन्यजी को इस वर्ष हृदयकारी धर्म ईच्छा पूर्ण करने का अवसर तथा लाभ प्राप्त हो गया है ।

सुरेन्द्र लोढा
सम्पादक

रतलाम श्रीसंध वर्षों से युग प्रभावक राष्ट्रसंत गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के चातुर्मास हेतु अपनी विनती करना चला आ रहा है । इससे पूर्व विक्रम संवत 1980 में स्व. पूज्य गुरुदेव श्रीमद विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा (तब उपाध्याय श्री यतीन्द्रविजयजी म.सा) का चातुर्मास

यहां हुआ था । इसी वर्ष में पीत वस्त्र धारण करने के मुद्दे पर शास्त्रार्थ हुआ । सात माह तक शास्त्रार्थ का क्रम जारी रहने पर प्रतिद्वन्दी आचार्यजी पराजय के आवरण में बिना अपने पक्ष को सूचित किये दिन निकलने से काफी पहिले रतलाम से विहार कर गये थे । इससे आपश्री (श्री यतीन्द्रविजयजी म.) की कीर्ति वायुवेग से चहुं दिशा में फैल गई । आपको पीताम्बर विजेता की उपाधि दी गई । इस चातुर्मास के पश्चात विक्रम संवत 2034 (ईस्वी सन 1977) में मुनिराजश्री जयंतविजयजी महाराज 'मधुकर' का चातुर्मास मुनिराज श्री विनयविजयजी म. तथा मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म. के साथ हुआ था । इस चातुर्मास के उपरांत आज तक दीर्घकाल व्यतीत हो जाने पर श्री त्रिस्तुतिक समाज के मुनिवर / आचार्य महाराज का चातुर्मास नहीं हुआ । याने पू. जैनाचार्य श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के चातुर्मास के 93 वर्ष पश्चात एवं स्वयं मुनिराज श्री जयंतविजयजी महाराज के चातुर्मास के 38 वर्ष उपरात यह चातुर्मास हो रहा है। दादा गुरुदेव योगीराज जैनाचार्य श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. ने विक्रम संवत 1954 (ईस्वी सन 1897) में रतलाम में चातुर्मास किया था । यह उनका रतलाम में पांचवां चातुर्मास था । दादा गुरुदेव ने क्रियोद्धार वि.सं. 1925 में किया था, जबकि दफ्तरीजी के रूप में उनने वि.सं. 1920 में ही रतलाम में चातुर्मास कर लिया था ।

इतिहास इन तथ्यों का साक्षी है कि दादा गुरुदेव जैनाचार्य श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा त्रिस्तुतिक अवधारणा की पुर्नप्रतिष्ठापना के पश्चात रतलाम श्रीसंघ फौलादी समर्थन के रूप में उनके आज्ञावाहक के स्वरूप में प्रकट हुआ । हर मौके पर उनकी आज्ञा शीरोधार्य कर तन-मन-धन से समर्पण भाव जीवित रखा । वि.सं. 1960 के दादा गुरुदेव के सूरत चातुर्मास में रतलाम के कई परिवार सूरत जानकर रहे तथा इनने व्यवस्था संभाली थी । सेठ श्री रूपचंद रखबदास के मालिक सेठ श्री भागीरथजी पोरवाल ने सूरत में स्वर्ण अशार्फियों की प्रभावना वितरित की । उपरांत दादा गुरुदेव के कालधर्म के बाद अभिधान राजेन्द्र कोष के मुद्रण कार्य के लिये रतलाम में प्रिण्टिंग प्रेस की स्थापना हुई, जहां कोष के सातों भागों का मुद्रण हुआ तथा प्रकाशन हुआ । श्री मोहनखेडा तीर्थ के प्रथम विकास के समय फर्म वीसाजी जवरचंद पोरवाल के श्री कन्हैयालालजी काश्यप ने सभागृह का निर्माण करवाया । श्रीमद राजेन्द्रसूरि जन्म सार्ध - शताब्दी पर 'राजेन्द्र ज्योति' ग्रंथ का प्रकाशन रतलाम में हुआ । अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की संस्थापना की पृष्ठभूमि रतलाम ने तैयार की ।

त्रिस्तुतिक समाज के अभी तक के जीवन दौर में रतलाम का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान रहा है ऐसी में सुविशाल गच्छाधिपतिश्री द्वारा रतलाम में आगामी चातुर्मास करने की घोषणा न केवल सम्पूर्ण मध्यप्रदेश (मालवा) की महत्वाकांक्षा की तृप्ति है बल्कि इस पूरे क्षेत्र को चेतना तथा उर्जा से परिपूर्ण कर पाने का स्वर्ण अवसर है । रतलाम व मध्यप्रदेश श्रीसंघ आपके प्रति विनयावनत हैं ।

संयम ही सुखी जीवन की आधारशिला

(श्री भुवनेन्द्रसिंह एम.ए., बी.एड.)

संयम हमें सन्मार्ग की ओर उन्मुख होने, सत्पथ पर चलने की प्रेरणा देता है। मानव के चंचल मन और निरंकुश इन्द्रियों पर विवेक पूर्ण नियंत्रण का ही नाम संयम है। तत्त्वदर्शी विद्वानों का कथन है कि संयम के बिना संतुलित एवं सुखी जीवन संभव नहीं है। संयम ही सुखी जीवन की आधारशिला है।

इस संसार में सभी व्यक्ति सुख चाहते हैं। सभी सुख के लिए ही भाग-दौड़ करते हैं। फिर भी उन्हें सुख नहीं मिलता। अतः प्रश्न उठता है कि ऐसा क्यों है? इसका मुख्य कारण है- जीवन में संयम का अभाव। संयम शब्द सुनते ही लोग कहने लगते हैं कि संयम तो साधु-संतों , महात्माओं, त्यागी और वैरागियों का विषय है, उनके पालने की वस्तु है; किन्तु यह कथन सर्वथा भ्रामक और मिथ्यापूर्ण है। संयम की आवश्यकता तो हर गृहस्थ, विद्यार्थी, युवक, स्त्री, पुरुष, बालक, बालिका और जीवित प्राणी को है।

जीवन में संयम के अनुपालन में कमी के कारण आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की समस्याएं मुँह बायें खड़ी हैं। इनका समाधान करने में मनुष्य बेबस और लाचार है। यदि मनुष्य खान-पान, बातचीत, कामकाज में संयम को अपना ले तो उसकी अधिकांश या लगभग सभी समस्याओं का आसानी से समाधान हो जाए और वह सुखपूर्वक जीवनयापन करने लगे।

संत-महात्माओं के अनुसार शाश्वत सुख, संयम में ही निहित है। मनुष्य विभिन्न पदार्थों के संग्रहण में, विषय-भोग में सुख की तलाश करता है, लेकिन उसे सुख नहीं मिलता। विभिन्न पदार्थों का संग्रह और विषय भोग बाहरी तौर पर सुखदायी प्रतीत होते हैं किन्तु इनके परिणाम विष से भी बढ़कर दुःखदायी सिद्ध होते हैं। विषयानन्द तो एक प्रकार से मीठा जहर है, जो मनुष्य को असमय ही मृत्यु के मुख में ढकेल देता है।

संयम को जीवन की आधारशिला बताते हुए संत कबीर ने कहा है-

संतो सुख संतोष है, रहहु तो हृदय जुड़ाय।
जब लग दिल पर दिल नहीं, तब लग सब सुख नाहिं।।
जो तू चाहै मुझको, छाँड़ सकल की आस।
मुझ ही ऐसा हो रहो, सब सुख तेरे पास।।

अर्थात् हे सन्तों! संतोष और संयम में ही सच्चा सुख है। यदि मनुष्य संतुष्ट हो जाए तो कामनाओं से जलता हुआ उसका तन-मन शीतल हो जाएगा। सब तक मन संयमित नहीं होगा, तब तक सच्चा सुख नहीं मिल सकता। अतः अपने मन को वश में करो।

सारे सुखों की प्राप्ति तुम्हें स्वतः हो जाएगी।

यही नहीं, संयम और संतोष में परम सुख का वास भी है। जो मनुष्य आत्मशान्ति, परमानन्द और शाश्वत सुख को पाना चाहता है, उसे संयमी और निष्कामी (संतोषी) बनना ही होगा। गीता (6।17) में भगवान कृष्ण ने कहा है-

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।।

अर्थात् इस संसार में जो व्यक्ति योगपूर्वक यानि संयम से जीता है, वह दुःखों को नष्ट कर देता है। जैन धर्मशास्त्र में भी कुछ इसी प्रकार की बातें कही गई हैं-

जयं चरे जयं चिट्ठे जयं मासे जयं सये।
जयं भुञ्जतो भासन्तो पापकम्मं व बन्धई।।

अर्थात् जो यत्नपूर्वक यानी संयम से तथा विवेक और अत्यन्त सावधानी के साथ उठता-बैठता, सोता-जागता तथा आहार-विहार करता है, वह पापकर्मों से कभी भी नहीं बँधता।

आध्यात्मिक उन्नति के लिए जहाँ संयम की आवश्यकता है, वहीं व्यावहारिक जीवन को सरस, मधुर और सुखी बनाये रखने के लिए, पारस्परिक प्रेम, सहयोग, सद्भाव की भावना विकसित करने में भी संयम की महत्ता अविवादित है।

महापुरुषों के मतानुसार जीवन का प्रयोजन पारमार्थिक प्रगति है, किन्तु प्रश्न उठता है कि जिसके जीवन का व्यावहारिक पक्ष अव्यवस्थित एवं असंतुलित हो, वह पारमार्थिक प्रगति कैसे करे? इस प्रश्न के उत्तर में हम कह सकते हैं कि पारिवारिक और सामाजिक मर्यादाओं का पालनकर तथा संयमित जीवनयापन करके ही हम पारमार्थिक प्रगति कर सकते हैं।

संयम को प्राथमिकता देते हुए जीवन को हम निखार सकते हैं-

1. वाणी में संयम :- वाणी प्रकृति का एक अनुपम वरदान है। असत्य, कटु तथा असामायिक बातें न कर सत्य, प्रिय और सामयिक बातें करना ही वाणी का संयम है। संत कबीर ने भी कहा है-

ऐसी बानी बोलिये, मन ना आपा खोय।
औरन को सीतल करे, आपहुँ सीतल होय।।

2. स्वार्थ में संयम :- मनुष्य स्वभाव से ही स्वार्थी है। वह सबसे पहले सबसे अच्छी वस्तु चाहता है। इसी से पारस्परिक द्वेष, असंतोष और कलह को बढ़ावा मिलता है। अतः आपस में एकता, प्रेम, सहयोग बनाये रखने के लिए संयमित रहना (त्याग की भावना रखना) अति आवश्यक है।

3. खानपान में संयम :- भोजन जीवमात्र की प्राथमिक आवश्यकता है। इसके बिना जीवन चल नहीं सकता। लेकिन प्रायः उलटा-सीधा और अनाप-शनाप खाना खाकर लोग स्वयं को अनेक रोगों का शिकार बना लेते हैं। खानपान में संयम का अर्थ है- उचित समय पर उचित मात्रा में

उचित ढंग से सात्विक और सुपाच्य भोजन ग्रहण करना।

4. काम में संयम:- आज के युग में काम में भी संयम की आवश्यकता है। ऐसा काम किस काम का जिससे जीवन का सुख-चैन ही नष्ट हो जाए। प्राप्त धन का उपभोग भी न किया जा सके। रात-दिन दौड़-भागकर खूब धन-दौलत बटोर लेने से ही मनुष्य सुखी नहीं हो जाता। मनुष्य सुखी होता है अपने सत्कार्यों तथा संतुलित आचरण से। अतः सदाचरण, सद् व्यवहार और सत्कार्य ही काम में संयम का द्योतक हैं।

5. कामना में संयम:- मानव मन कामनाओं का घर है। घर-परिवार के वातावरण को सरस और सुखी बनाये रखने के लिए कामनाओं पर संयम आवश्यक है। अनावश्यक इच्छाओं का दमन ही कामनाओं पर संयम पाना है।

6. व्यवहार में संयम:- हमारा व्यवहार सबके साथ सरस और मधुर होना चाहिए। यद्यपि सभी के विचार, स्वभाव और संस्कार और फलस्वरूप काम करने की शैली एक जैसी नहीं होती। फिर भी एक-दूसरे के मध्य प्रेम, सहिष्णुता और क्षमा की भावना का विकास करना व्यवहार में संयम के लक्षण हैं। ध्यान रहे कि हमारा व्यवहार सहिष्णुता, सहनशीलता एवं विश्वसनीयता पर आधारित होना चाहिए।

7. मैत्री में संयम:- संसार में प्रत्येक व्यक्ति का कोई न कोई मित्र अवश्यक होता है, जिसके साथ वह उठता-बैठता है तथा अपने मन की बातें करता है। मैत्री में संयम का अर्थ है- मैत्री संबंध का स्वार्थ से रहित होना। अन्य शब्दों में हमारी मैत्री स्वार्थ पर आधारित कदापि न हो;क्योंकि स्वार्थ पर आधारित मैत्री कभी भी मन को संतुष्ट, सुखी और प्रसन्न नहीं रखती। इसलिए मित्रता हमें सोच-विचारकर, संस्कार और समानरूचि वाले व्यक्तियों से ही करनी चाहिए। इससे मित्रता में स्थायित्व आता है।

संयम कोई स्वतः प्रसूत प्रक्रिया नहीं है। इसे धारण करना पड़ता है। संयम से असम्भव प्रतीत होने वाले अनेक कार्य सम्भव हो जाते हैं। दुर्गम मार्ग को सुगम बनाने का एकमात्र साधन संयम ही है।

जीवन में संयम का वही स्थान है, जो सेना में अनुशासन का होता है। संयम और अनुशासन व्यक्ति में कार्य करने की क्षमता उत्पन्न करते हैं, जो रचनात्मक कार्यों के सृजन में सहायक सिद्ध होती है। यदि संघर्षमय जीवन में दुर्लभ वस्तु पाने की इच्छा बलवती हो जाए तो हमें संयम और साधना का सहारा लेना चाहिए। यही सफलता का सिद्धयोग है।

संयम भारतवर्ष का आदर्श है। यह आदर्श भोग के मार्ग पर चलकर नहीं, अपितु त्याग के मार्ग पर चलकर प्राप्त हुआ है। चूँकि भारतवर्ष में सदैव संयम की रक्षा हुई है, इसलिए वर्तमान में संयमित जीवनयापन करते हुए हमें भविष्य के लिये भी संयम की

रक्षा का संकल्प लेना चाहिए तथा भारत देश को एक आदर्श एवं गौरवशाली देश बनाने का यथाशक्ति प्रयास करना चाहिये। इसी में जीवन की सार्थकता तथा हम सबका कल्याण निहित है।

प्रतिक्रमण याद करने के लाभ

डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई (निर्देशक-अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र)

जो व्यक्ति प्रतिक्रमण कण्ठस्थ कर लेता है, वह जाने-अनजाने अनेक उपयोगी ज्ञानवर्द्धक आगमिक बातों का जानकार हो जाता है। प्रतिक्रमण मूलतः प्राकृत में है। प्राकृत संस्कृत दिव्य भाषाएँ मानी जाती हैं। उनका उच्चारण मंगलकारी माना जाता है। जहाँ नियमित सामायिक प्रतिक्रमण की आराधना होती है, वहाँ अनेक अशुभ टल जाते हैं। केवल प्रथम सामायिक आवश्यक को ही द्वादशांगी का सार और चौदह पूर्व का अर्थपिण्ड कहा गया है तो छह आवश्यक सहित सम्पूर्ण प्रतिक्रमण का महत्व निःसन्देह बहुत अधिक है। जिसे प्रतिक्रमण याद है - (1) वह सगर्व यह कह सकता है कि उसे एक आगम कण्ठस्थ है। (2) आगमों के नाम उसे कण्ठस्थ हो जाते हैं। (3) वह पंच परमेष्टी के स्वरूप और अनेक गुणों का जानकार हो जाता है। (4) वह छह आवश्यकों का जानकार हो जाता है। (5) वह यह जान जाता है कि अठारह पाप कौन से होते हैं। (6) उसे प्रत्याख्यान का पाठ याद हो जाता है, जिससे वह किसी को भी प्रत्याख्यान करवा सकता है अथवा स्वयं भी प्रत्याख्यान पूर्वक कोई नियम ले सकता है। (7) वह श्रावक के बारह व्रतों (3 गुणव्रत व 4 शिक्षाव्रत सहित) का जानकार हो जाता है। (8) वह बारह व्रतों का स्वरूप और उनके दोषों (अतिचारों) का जानकार हो जाता है। (9) वह रत्नत्रय (सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन व सम्यक्चारित्र) के स्वरूप को समझ सकता है। प्रतिक्रमण के सूत्रों व पाठों में ज्ञान, ध्यान, विनय, अनुशासन, नैतिकता और प्राणीमात्र से मैत्री के सन्देशों की अनुगूंज है। प्रतिक्रमण में अनेक विषय समाविष्ट हैं। प्रतिक्रमण जानने वाला कहीं भी विचार व्यक्त करना चाहे तो वह प्रतिक्रमण में से कई तथ्य उद्धृत कर सकता है और उसकी अभिव्यक्ति को प्रभावशाली व प्रामाणिक बना सकता है। अर्थ को समझते हुए प्रतिक्रमण याद किया जाए और उसकी सही रूप से आराधना की जाए तो जीवन में नई रोशनी पैदा होती है। माता-पिता को चाहिये कि वे अपनी सन्तान को अन्य चीजों के अलावा प्रतिक्रमण भी अवश्य कण्ठस्थ कराएँ। बाल किशोरवय में याद किया गया प्रतिक्रमण जीवन भर की पूंजी बन जायेगा।

तीर्थंकर श्री ऋषभदेव जी

(मुनिराज डॉ.श्री सिद्धरत्न विजयजी म.सा.)

विपुल सौन्दर्य के स्वामी, स्वर्णकमल के समान शोभित प्रभु श्री ऋषभदेव सर्वार्थ सिद्ध नामक अनुत्तर विमान से च्यवन के समय से ही मति, श्रुति और अवधिज्ञान के धनी भी थे। उनकी बाल लीलाएं अद्‌भुत और जनमानस को आत्मविभोर कर देने वाली थीं। देवगण भी बालरूप धारण कर प्रभु के साथ क्रीड़ा करने आते थे।

इधर भगवान ऋषभदेव अपनी मनमोहक बाल लीलाओं से अपने माता-पिता, परिजनों, देवताओं को अलौकिक आनन्द से निःमग्न कर रहे थे, उधर दूसरी ओर उन्हीं दिनों में एक यौगलिक बालक-बालिका के जोड़े में वन में बालक्रीड़ा कर रहे थे। वन में बालक्रीडा में रत बालक के मस्तक पर ताड़वृक्ष का फल गिरता है, जिससे उसकी मृत्यु हो जाती है। बालिका वन में अकेली रह जाती है। वन में बालिका को अकेला देख विस्मित हुए यौगलिक उसे नाभिराजा के पास ले गए। नाभिराजा ने उसे अपनी पुत्री के रूप में ग्रहण कर उसका नाम सुनन्दा रखा। इस प्रकार अब ऋषभकुमार अपनी भार्या सुमंगला के साथ ही साथ सुनन्दा के साथ बाल-लीलाएं करते हुए बढ़ने लगे।

प्रभु ने किशोर वय में प्रवेश किया। उन्हें देखते ऐसा प्रतीत होता था मानों संसार का समस्त सौन्दर्य प्रभु के रूप में प्रकट हो गया है। किशोरावस्था के बाद भगवान ने युवावस्था में प्रवेश किया। युवावस्था एवं विवाहयोग्य वय में प्रवेश करने पर इन्द्र ने लोकव्यवहार चलाने के लिए प्रभु से विनती की। बड़ी धूमधाम से सुनंदा और सुमंगला के साथ भगवान का ब्याह हो गया। उस समय मानव समाज के लिए विवाह संस्कार की बात पूर्णतः नई थी। भगवान ऋषभदेव के विवाह के पूर्व यौगलिक काल में एक माता की कुक्षी से जन्म ग्रहण करने वाले बालक-बालिका भी युवावस्था में प्रवेश करने पर पति-पत्नी के रूप में जीवन निर्वाह करने लगते थे। भगवान ऋषभदेव ने ही सर्वप्रथम विवाह की परम्परा का सूत्रपात किया। इस रूप में काल प्रभाव से बढ़ती विषय वासना को विवाह संबंधों में सीमित कर मानव जाति को वासना की भट्टी में गिरने से बचाया। जब भोगभूमि के अन्त और कर्मभूमि के उदय का संधिकाल आया तो प्रकृति में परिवर्तन हुए। कालप्रभाव से कल्पवृक्षों के मात्र अवशिष्ट ही रह गए। तब लोग प्रभु ऋषभदेव के निर्देशानुसार अधिकांशतः कंदमूल, फल-

फूल आदि का भक्षण कर जीवनयापन करने लगे। आगे चलकर प्रभु ने लोगों को मिट्टी के बर्तन बनाने, भोजन पकाकर खाने की कला सिखाई, जिससे लोग उन्हें धाता एवं प्रजापति कहने लगे।

अवश्यमेव भोक्तव्य कर्म को अनासक्त रूप से भोगते हुए जब भगवान ऋषभदेव की वय 6 लाख पूर्व की हुई तब देवी सुमंगला ने पुत्र और पुत्री युगल के रूप में भरत और ब्राह्मी को जन्म दिया। देवी सुनंदा ने भी बाहुबली और सुन्दरिका की जोड़ी को जन्म दिया। कालान्तर में देवी सुमंगला ने 49 पुत्र युगलों को जन्म दिया। इस प्रकार भगवान ऋषभदेव के 100 पुत्र एवं दो पुत्रियां हुईं। सभी सर्वाङ्ग सुन्दर एवं उत्तम गुणों से सम्पन्न थे। प्रभु के विवाह के बाद ही दूसरे के पुत्र अथवा पुत्री के साथ विवाह करने की व्यवस्था आरम्भ हुई। चूड़ा उपनयन आदि व्यवहार भी उसी समय से चले। प्रभु ने अपनी संतानों को विभिन्न कलाएं सिखाईं, जिनका धीरे-धीरे विकास हुआ।

प्रभु के 83 लाख पूर्व ग्रहस्थ पर्याय में बीतने पर नौ प्रकार के लोकान्तित देवों द्वारा प्रभु के पास आकर दीक्षा की विनती की गई। तब प्रभु ने महल में आकर भरत को राज्य ग्रहण करने का आदेश दिया एवं अन्यान्य पुत्रों को भी अलग-अलग देशों का राज्य दे दिया। उन्होंने विशाल राज्य वैभव व भव्य भोग सामग्री को तिलाञ्जली देकर देव-मानवों के विशाल समुदाय के साथ दीक्षा स्वीकार की। प्रभु मौन धारण कर पृथ्वी पर विचरण करने लगे। पारणे वाले दिन प्रभु को कहीं से भी आहार नहीं मिल पाता, क्योंकि उस समय लोग आहार दान की विधि से अपरिचित थे।

इसी प्रकार विचरण करते हुए लगभग एक वर्ष से अधिक समय व्यतीत हो गया। अंत में हस्तिनापुर पधारे जहाँ सोमप्रभ राजा के पुत्र श्रेयांस कुमार ने भगवान ऋषभदेव को विचरण करते हुए देखा। प्रभु को देखते ही उसे जातिस्मरण हुआ। परम प्रसन्न हो स्वयं इक्षु रस का घड़ा लेकर आये तथा त्रिकरण शुद्धि से प्रतिलाभ देने की भावना से प्रभु का पारणा उन्होंने कराया। प्रभु के पारणे का वैशाख शुक्ल तृतीया का वह दिन अक्षयकरणी के कारण लोक में आखातीज या अक्षय तृतीया के नाम से प्रसिद्ध हुआ जो आज भी सर्वजन विश्रुत पर्व माना जाता है। प्रवज्या ग्रहण करने के पश्चात् प्रभु एक हजार वर्ष तक ग्रामानुग्राम विचरते हुए तपश्चरण द्वारा आत्मस्वरूप को प्रकाशित करते रहे। विहार करते हुए अयोध्या नगरी पहुँचे। यहाँ पुरिमताल नामक उपनगर के शकटमुख नामक उद्यान में एक हजार बरस बीतने पर फाल्गुन मास की कृष्णा एकादशी के दिन उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के योग में प्रभु ध्यानारूढ़ हुए और क्षपक श्रेणी के चार घातिक कर्मों को नष्ट कर केवलज्ञानी बने। इन्द्रादिक देवों ने आकर प्रभु का केवलज्ञान कल्याणक किया। समवसरण की रचना हुई। सब प्राणी धर्मदेशना सुनने के लिए बैठे।

-क्रमशः

अक्षय तृतीया -वर्षीतप पारणा

(लेखक- समरतल लुणावत, पुणे)

प.पू.भगवान आदिनाथ से अक्षय तृतीया का पावन व मंगल प्रसंग जुड़ा हुआ है। आदिनाथ भगवान को दीक्षा के उपरान्त शुद्ध आहार न मिलने के कारण उनका उपवास लगातार चलता रहा आखिर तेरह माह और दस दिन के बाद 'इक्षुरस' ग्रहण करके पारणा किया, तभी से 'वर्षीतप' और अक्षय तृतीया के दिन इक्षुरस से पारणे की परंपरा का आरंभ हुआ। जैन परंपरा में अक्षय तृतीया एवं वर्षीतप की साधना का ऐतिहासिक महत्व है। इस तिथि पर जो भी कार्य किये जाते हैं, वे कार्य शुभ और पवित्र माने जाते हैं। श्रमण संघ की स्थापना का दिवस भी अक्षय तृतीया ही है। आदिनाथ प्रभु ऋषभदेव की महिमा हम सब गाते हैं, श्रद्धाभाव से उन्हें याद करते हैं, वंदन करते हैं। अक्षय तृतीया अमर है, वर्षीतप का पूर रहता है। जो वर्षीतप करते हैं, धर्म, त्याग से झोली भरते हैं, उनके जन्मों के दुख हरते हैं।

'वर्षीतप ' मन का संताप और शरीर का ताप घटाकर आत्मा का प्रताप बढ़ाने वाला है। वर्षीतप से जीवन सरसाता, दिव्य भव्य तेज प्रकटाता है। यह एक दिव्य साधना है, भक्ति का कलकल करता, बहता झरना है, जिसमें समर्पण की धारा बहती है और वैराग्य के स्वर गूंजते हैं। वर्षीतप से बड़ा कोई तप नहीं। इसका पारणा अक्षय तृतीया के पावन मंगल पर्व पर उत्कृष्ट भावों के साथ सुसंपन्न होता है। वर्षीतप से माया मद मिटता है, अभिमान मुक्ति के सोपान की निर्मिति वर्षीतप से होती है और सदा तपस्वियों का मान होता है। अक्षय तृतीया तप और दान का विशिष्ट पर्व है। अक्षय तृतीया पुण्योपार्जन का अक्षय स्रोत है। ज्ञानी, दानी और तपस्वी होने से जिंदगी में कभी परेशानी नहीं आएगी। दान से पुण्य होता है, संयम से, तप (वर्षीतप) से कर्म की निर्जरा होती है। दान हृदय की सरलता, संयम हृदय की शुद्धता है। कहा भी है 'दोगे दान तो मिलेगा वरदान।' यह पर्व दान का भी है। क्षमादान, अभय दान, अन्नदान, जल दान करें तो यह महान पर्व सार्थक हो जाएगा। आज के मंगलमय पावन दिवस पर हम तपस्वी आत्माओं को 'रसदान' द्वारा तृप्ति कराते हैं एवं उनका बहुमान, अभिनंदन करते हैं। त्यागी-तपस्वी आत्माओं का हार्दिक वंदन, जय जिनेन्द्र कर सुखसाता पूछते हैं।

भ. ऋषभदेव धर्म-कर्म की शुरुआत या आदि करने के कारण 'आदिनाथ' भी कहलाते थे और ज्ञान, कृषि, उद्योग, समाजव्यवस्था, सभ्यता एवं संस्कृति आदि के प्रथम प्रणेता भी थे। वर्षीतप करने वाले महान त्यागी-तपस्वी बारह मास की कठिन तपस्या में तन, मन को खूब तपाते हैं, इक्षु

रस के भरे घट अहोभाव से बहराते हैं। अक्षय तृतीया अक्षय दिवस जन-मन में मंगल मनाते हैं। पारणा प्रसंग पर अक्षय तृतीया आनन्द बरसता है। वर्षी तप से जो तपस्वी तपता है, वही निखरता है। वर्षी तप ही जज्बा जगाता है, डूबी नैया को तारता है। अग्नि में तपकर सोना शुद्ध बनता है, वैसे ही सहने वाला सदा ही आगे बढ़ा है। तपस्वियों का बहुमान करना हमारा कर्त्तव्य है। धर्म में दान का महत्व प्रथम स्थान पर है। 'धन को परहित में प्रवाहित करो', 'दान की धारा धन लक्ष्मी बनेगी', 'धन का संग्रह मत करो, जनहित में दान करो' का संदेश भी हमें मिलता है।

श्रेयांस कुमार को 'दान' का प्रथम प्रवर्तक कहा जाता है। उनका दान अक्षय दान बन गया। आत्मा को परमात्मा बनाने के सूत्र तप और दान में निहित है। मान्यता यही है कि पाया है तो देना आवश्यक है और देने वाला सम्यक्त्व प्राप्त करता है। दानपर्व अक्षयतृतीया का पर्व मंगलमय हो, घोर तपस्वी समता सिंधु ऋषभदेव की सदा जय हो। इस वर्ष अनेक क्षेत्रों में अकाल, दुष्काल पड़ा है। स्थिति बहुत ही भयावह है। हम सबके लिए यह बड़ी भारी चुनौती है। 'दान' के रूप में हम कुछ ना कुछ योगदान अवश्य करें। गौशालाओं के लिए घास एवं चारे की व्यवस्था करें, गौमाता की वेदना को सुन, उन्हें बचाने, छुड़ाने का प्रयास करें। धरती सूख रही है। बड़ी संख्या में लोग पलायन कर रहे हैं। ऐसे में प्यासों को जल भूखों को अन्न उपलब्ध कराते हुए मानवता का परिचय देते हुए अक्षय तृतीया को सार्थक बनायें।

पारणा प्रसंग वर्षी तप का,
श्रद्धाभाव से इक्षुरस बहरायें।
पावनपर्व अक्षय तृतीया आनन्द बरसाये,
मिलकर अहोदानं का मंगल नाद गूंजाएँ।।

परित्राण

दुनिया के तमाम लोगों के जीवन में एक ऐसा वक्त आता है, जब उसे अपने पूरे अतीत की परिक्रमा करने की इच्छा होती है । आदमी को अतीत की तभी याद आती है जब उसका भविष्य छोटा होने लगता है । कम उम्र में आदमी के लिए अतीत कोई अहमियत नहीं रखता है । उस समय उसके लिए भविष्य ही सब कुछ होता है । तब उस कम उम्र के दौरान वह सब कुछ प्राप्त करने की कामना करता है । सुख, समृद्धि, सौभाग्य की कामना करता है । उसकी इन दुर्लभ कामनाओं के बीच एक शक्तिशाली प्रत्याशा जुड़ी रहती है । ऐसी प्रत्याशा जो उसे तमाम बाधा-विघ्नों को पार करने की सीख देती है । यही वजह है कि दुनिया के तमाम लोगों का जीवन प्रत्याशा और प्रत्यय का समन्वय है ।

चिंतन की चांदनी-2

आत्मज्ञान न होने की स्थिति संसार के सर्व दुःखों का मूल है। दुःख दूर करने का राजमार्ग है ज्ञानप्राप्ति। **–आ.श्री जयन्तसेन सूरिश्वरजी**

शुभ कर्म करोगे तो यह जिन्दगी मिलेगी;
सद्गुणों की आए बहार तो हर कली खिलेगी।
जिंदगी है पुण्य कर्मों की तेल और बाती,
रोशन एक होगी, दूसरी खुद ही जलेगी।

–डॉ.मुनि सिद्धरत्न विजय

पौतानुपासे घणु छे ऐ विचार गर्व तरफ है ने...
बिजा पासे छे ऐ विचार दिनता तरफ लई जाए छे।

–मुनि अपूर्वरत्नविजय

परमात्मा के उपदेश और गुरु की आज्ञा का पालन ही सच्ची प्रभु भक्ति और सच्ची गुरु भक्ति है। **– मुनि चारित्ररत्न विजय**

सुन्दर चक्षुवाला व्यक्ति भी जैसे प्रकाश के बिना वस्तु को देख नहीं सकता वैसे ही ज्ञानी व्यक्ति भी गुरु की सहायता के बिना धर्म को नहीं समझ सकता।

– मुनि निपुणरत्न विजय

धन संग्रह करने से नहीं, दान करने से बढ़ता है। **– मुनि प्रसिद्धरत्न विजय**

आध्यात्मिक जगत का एक नियम है कि शरीर को जितना कष्ट देते हैं, उतनी आत्मा बलवान बनती है। बलवान आत्मा ही अच्छी आराधना कर मोक्ष प्राप्त कर सकती है।

– मुनि जिनागमरत्नविजय

सान्निध्य में सद्भाव और समभाव में क्षमा के गुण का निहत होना आवश्यक है। इसके बिना प्रगति नहीं होती। **– मुनि पवित्ररत्न विजय**

अच्छे बनने का विचार क्षायोपशमिक भाव है और अच्छे दिखने का मन हो तो यह औदायिक भाव है। **–मुनि प्रत्यक्षरत्न विजय**

मेरी आस्था के केन्द्र मेरे गुरुदेव

(श्री अचलचन्द जैन, सायला-राज.)

सृष्टि की फुलवारी में अनेक प्राणी जन्म लेते हैं लेकिन जीवन उन्हीं का सार्थक होता है जिनका व्यक्तित्व दूसरों को सदैव सही राह दिखाता है। जिनके पास सत्य, अहिंसा, दया, परोपकार, प्रेम और सदाचार जैसे संस्कारों का खजाना होता है, वे अपने जीवन को उज्जवल बनाने के साथ ही साथ दूसरों के जीवन को भी उज्जवल बनाते हैं। ऐसे अनमोल रत्नों में से एक रत्न हैं-पूज्य आचार्य श्रेष्ठ श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा.।

आपका जन्म विक्रम संवत् 1993 मार्गशीर्ष वदी 13 को पेपराल (गुजरात) में ओसवाल वंश में हुआ। माता का नाम पार्वतीदेवी और पिता का नाम श्री स्वरूपचन्दजी धरु था। इनके जन्म का नाम पूनमचंद था। आपने 16 वर्ष की अल्पायु में ही गुरुदेव श्री यतीन्द्र सूरिश्वरजी म.सा. के वरदहस्त से संयम व्रत अंगीकार किया और जयन्तविजय नाम पाया।

आपने संयम जीवन के अपने 62 वर्षों में शासन प्रभावना के अनेक कार्य सम्पन्न किए। संक्षिप्त में बिंदुवार विशेषताओं का वर्णन इस तरह कर सकते हैं- 1. सभी प्रपंचों से दूर रह आगमों एवं प्रमुख जैन ग्रन्थों की तलस्पर्शी अध्ययन किया। 2. अनेक जिनालयों और जिन बिंबों की प्रतिष्ठा करवाई, जिनमें भीनमाल का 72 जिनालय भी सम्मिलित है। 3. अनेक प्राणियों को संयम का मार्ग दिखा उन्हें दीक्षित किया। आप विशाल साधु-साध्वियों के समुदाय के गच्छाधिपति हैं।4. आपने संयम जीवन में 2 लाख कि.मी. से अधिक दूरी की पैदल यात्रा की और जैन धर्म के सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार किया। 5. आप पिछले 55 वर्षों से निरन्तर नवकार मंत्र का जाप करवा रहे हैं। प्रतिवर्ष हजारों साधक नवकार मंत्र के जाप में सम्मिलित होकर अपना आत्म कल्याण कर रहे हैं।

अब तक आपश्री के द्वारा 100 करोड़ नवकार मंत्र के जाप करवाये जा चुके हैं, जो अपने आप में एक रिकार्ड है। 6. आप प्रत्येक प्रसंग को सरल भाषा में समझाते हैं जिससे आपके व्याख्यानों में जबर्दस्त भीड़ रहती है। सभी लाभान्वित होते हैं। 7. आप उच्च कोटि के विद्वान एवं साहित्यकार हैं। आपने अनेक ग्रन्थों की रचना की है। आप के द्वारा रचित साहित्य ने मानवीय मूल्यों की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आपकी विद्वता की तारीफ सभी लोग करते हैं। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि त्रिस्तुतिक समाज में आप अद्वितीय विद्वान हैं। 8. आप शक्ति के पुंज और प्रेरणा के स्रोत हैं। 79 वर्ष की आयु में भी आपकी लेखनी और आराधना निरन्तर चल रही है। 9. गुरुदेव का सान्निध्य सुखदायी है। आपके सान्निध्य मात्र से लोग उत्साह से भर जाते हैं। यही कारण है कि हजारों लोग आपके पास मार्गदर्शन प्राप्त करने हेतु आते हैं और आपका मार्गदर्शन प्राप्त कर प्रसन्न होते हैं। 10. गुरुदेव आत्मसाधक के साथ ही साथ समाज सुधारक भी हैं। आप जहाँ कहीं पधारते हैं, समाज में व्याप्त विषमता पर प्रहार करते हैं। समाज संगठन के शिल्पी एवं विलक्षण बुद्धि के धनी हैं। आपने विभिन्न संघों के आपसी मतभेदों को दूर कर एकता की मिसाल कायम की है। 11. आचार्य श्रेष्ठ का जीवन ही उनका संदेश है। आपके स्वभाव की तुलना किससे की जाए? यह तुलना चांद की कला से, सागर की गंभीरता, सूरज की रोशनी से ही की जा सकती है, क्योंकि ये सभी गुण आपमें विद्यमान हैं। गुरु जयन्त में गुरु राजेन्द्र का प्रतिबिंब झलकता है। अर्थात् आपका व्यक्तित्व अनन्त आकाश के समान है, जिसे मापना असंभव है।

मैं आपके संयम जीवन की अनुमोदना करते हुए आपके शतायु होने की कामना करता हूँ। मेरी आस्था के केन्द्र मेरे गुरुदेव के चरणों में वंदन करते हुए अंत में निम्न पंक्तियों से उन्हें नमन करता हूँ कि -

शत शत नमन, जिनशासन के सरताज,
अजर-अमर रहें, मेरे गुरुवर जयन्तसेन महाराज।

ऑफिस से लौटने पर अजय ने देखा, पत्नी रो रही है। पति के पूछने पर उसने कहा मैंने जो केक बनाया था, उसे टॉमी खा गया।

अजय ने दिलासा देते हुए कहा-रोती क्यो हो मैं तुम्हें दूसरा कुत्ता खरीद दूंगा।

बेटा-पापा, एक आदमी एक से अधिक शादी क्यों नहीं कर सकता ?
पिता-बड़े होकर तुम समझ जाओगे कि जो अपनी रक्षा खुद नहीं कर सकता, उसे कानून बचाता है।

धर्म : कल्याण का मार्ग

(डॉ.श्री सुभाष जैन)

वर्तमान संक्रमण काल में जीवन शैली में जितना बदलाव आया है वैसा पिछले 5000 वर्षों में भी नहीं हुआ है। जीवन में स्वच्छंदता, निरपेक्षता, स्वीकृत जीवन मूल्यों का तीव्र विघटन, हिंसा, विचारों का द्वंद्व , समझ का अभाव दृष्टिगोचर हो रहे हैं। इनसे जो परिणाम उत्पन्न हुए हैं,वे भी अपूर्व हैं। आचरण की धुरी राष्ट्रीय स्तर से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक आश्चर्यजनक ढंग से बदली है। क्या यह सब मानव में हुए बदलाव का परिणाम है, या समय के बदलाव से यह सब हो रहा है? दोषी कौन है?

यह तो निश्चित है कि इसके लिए समय को दोष नहीं दिया जा सकता। समय तो स्वयं ही अनन्तकाल से स्वप्रवाहित घटना है जो भविष्य में भी यूँ ही घटित होती रहेगी। वास्तव में तो समय के अनुसार हुए व्यापक परिवर्तन और परिवर्तित दृष्टिकोण के साथ मानव व्यवहार ने जीवन को बदल कर रख दिया है। हम एक ऐसे युग की संतान हैं जो वास्तविक रूप से अविश्वासी है। यही कारण है कि मानव के हृदय में दरार पड़ गई है। मानव मन की यह एक आन्तरिक अव्यवस्था है, मानसिक गठन की एक बड़ी खोट है। वास्तव में हम इस कालखंड में हुए व्यापक विकास और तकनीकी परिवर्तन को अपने जीवन में या तो सही रूप में ग्रहण नहीं कर पाये अथवा उसके साथ सही तालमेल नहीं बैठा पाये हैं। हमने अपने आपको समय से भी अधिक तेजगति से बदल लिया और दोष समय के माथे मढ़ दिया है। जबकि समय का इससे कोई लेना-देना नहीं है।

आधुनिक समय उन्नति की चरम सीमा का है, परन्तु आने वाले कल के लोग इससे कहीं आगे निकल जाएंगे। विकास और ज्ञान के क्षेत्र में व्यापक उन्नति दर्ज करने के साथ ही हम मानवीय संवेदनशीलता के आधार पर पिछड़े लगते हैं। स्वार्थपूर्ण स्वचिंतन, धर्मभीरुता और हिंसा के मार्ग पर बहुत ही आगे बढ़े हुए दिखाई देते हैं। यह क्या है? हम क्या थे, क्या होना चाहिए और हम क्या हो गए हैं? बुराइयों का आविर्भाव कोई आकस्मिक नवीन घटना नहीं है। हिंसा, अत्याचार, विद्वेष की भावना एकता, भ्रातभाव और मानवीय संवेदना में कमी को रेखांकित करते हैं। इस अव्यवस्था में एक दूसरे के प्रति रोष, लड़ाई के अतिरिक्त किसी अच्छी बात की आशा नहीं की जा

सकती। चारों ओर एकदूसरे के प्रति घृणा, अव्यवस्था, बल प्रयोग, भय, असत्य और निष्ठुरता का प्रदर्शन मानव की विशेषता दिखाई देने लगे हैं तो यही लगता है कि हम मान्य परम्पराओं और मूल्यों के सुनिश्चित अधःपतन की ओर आगे बढ़ रहे हैं। यह एक बड़ी चिंतनीय बात है।

आज के मानव की सबसे बड़ी समस्या यह है कि उसके पास सम्पत्ति-सत्ता से प्राप्त होने वाली सभी सुख-सुविधाएं होने के बावजूद उसका जीवन जीने योग्य नहीं है। कहीं न कहीं जीवन में उसे रिक्तता का अनुभव हो रहा है। यह खालीपन ही खतरे की घंटी है। यह आधुनिक जीवन की दुर्बलता, विसंगतियों और निर्बलता की ओर इशारा करता है। आश्चर्य होता है कि मानव कैसे जी रहा है? हालांकि हम जानते हैं कि मानव में अजेय आशाएं, सृजनशील ऊर्जा और आध्यात्मिक शक्तियाँ निहित हैं। आध्यात्मिक चिंतन भी भूले-बिसरे रूप में उसके पास है। बस इसके आधार पर ही जीवन की वास्तविकता की खोज की जाना चाहिए।

विज्ञान और टेक्नोलॉजी के इस युग में विकास और प्रगति की अनेक कहानियां लिखने वाला मानव आज जितनी अर्थहीनता और निरर्थकता का अनुभव कर रहा है, उतना उसने कभी नहीं किया होगा। संकटपूर्ण युग के हम साक्षी बन रहे हैं. ऐसे युग में भी मनुष्य अपने को बहुत ऊपर उठा सकता है। जीवन में रूकावट पैदा करने वाली परिस्थितियों पर वह विजय पा सकता है। मानव जीवन में दुःख का आरंभ उस समय होता है जब हम उस बात और काम पर न केवल विश्वास करते हैं जो पूर्णतः गलत है, वरन् उसी पर चलना भी आरम्भ कर देते हैं। हमें इस बात को हृदय में उतार लेना चाहिए कि परमात्मा की कृपा किसी जाति, व्यक्ति, सम्प्रदाय पर विशेष रूप से नहीं होती। यदि आपका आचरण अच्छा है तो निश्चित रूप से प्रभु का आशीर्वाद प्राप्त होगा। धर्म इस मत को अच्छी तरह से प्रस्तुत करता है।

धर्म मानव को अनुशासित करने वाली एक शक्ति है। बाधाएं और विकृतियाँ जो पैदा होती हैं वे मानवीय स्वभाव के दुर्गुणों यथा लालच, अहं, पद, सम्मान, सत्ता, सम्पत्ति की भूख, संघर्ष की होड़ से पैदा होती है। धर्म इन्हीं बातों के झूठे आकर्षण, ऐसी राक्षसी प्रवृत्तियों को त्याग कर सुखी एवं शांत जीवन बिताने का मार्गदर्शन देता है। हमारे आचरण के लिए दिशादर्शक कोई बाहरी सत्ता नहीं है बल्कि परमात्मा की वाणी है जो हम सबकी आत्मा में ही बसती है। धर्म, परम मूल्यों को उपलब्ध कराने वाली जीवनपद्धति का प्रतीक है। धार्मिक विश्वास हमें अपनी जीवन पद्धति पर डटे रहने की ऊर्जा प्रदान करता है। इसी से

जीवन व्यवस्थित होगा।

जो यह समझते हैं कि अब धर्म के दिन बीत चुके हैं, उन्हें एक बार फिर अपने अन्दर झांकना होगा। धर्म एक अनुशासन है जो अन्तरात्मा को स्पर्श करता है, नैतिक बल को बढ़ाता है। मनुष्य की धर्मयात्रा तब तक नहीं रुके, जब तक मनुष्य मात्र के जीवन में प्रेम और न्याय का आधिपत्य नहीं हो जाता।

तो आईये! समय के फेर में हम नहीं पड़ें और अपने अन्दर ही झांककर देखें कि मेरे कल्याण का मार्ग कौन सा है? धर्म या अधर्म।

कविता

(श्री चम्पालाल बोथरा)

इक्षुरस का किया पारणा, आखा तीज महान,
जय-जय आदिनाथ भगवान ।
श्रेयांसकुमार ने दिया भाव से, आज सुपात्र दान,
जय-जय आदिनाथ भगवान ।
ऐसा कर्म उदय में आया, बारह मास लग आहार न पाया,
सूखी कल्पवृक्ष सी काया, फिर भी दिल में नहीं घबराया,
घर-घर में नित जावे गोचरी, देवे सब सम्मान ।।
कोई हाथी-घोड़ा लाये, रत्न थाल कोई बहराये,
कोई कन्या भेंट चढ़ावे, प्रभु देख पाछा फिर जावे,
बारह घड़ी अंतराय की कीनी, बारह मास भुगतान ।।
विचरत-विचरत महल में आया, भोजन दोष रहित नहीं पाया
प्रभु लौट कर बाहर आये, श्रेयांस कहे हे मुनिराया!
इक्षुरस निर्दोष है स्वामी, यह तो कृपा निधान ।।
आज प्रभु कर पात्र बढ़ाया, कुंवर सेलड़ी रस बहराया,
किया पारणा सब मन भाया, तीन लोक में आनंद छाया,
घर-घर हर्ष सवाया गाया सुर-नूर मंगलगान ।।
आज भी जो वर्षी तप करते, इसी दिवस पर पारणा करते,
आरंभ और कषाय को तजते, वहीं सच्चा फल तपका पाते,
कर्म काटने को है, अक्षय तप सुमार्ग महान ।।

आचार्य श्री समन्तभद्र

(मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.)

आचार्य समन्तभद्र एक महान प्रभावक आचार्य थे। वे अपने काल के उच्च कोटि के विद्वान, महान तार्किक, अजेय, अप्रतिम कवि एवं ग्रंथकार थे। पं. श्री युगलकिशोर द्वारा आचार्य श्री समन्तभद्र के विक्रम की दूसरी शताब्दी के पूर्वार्द्ध का दिगम्बर आचार्य माना गया जबकि जैन ग्रंथ और ग्रंथकार नामक एक ऐतिहासिक पुस्तक के अनुसार उन्हें विक्रम की 7 वीं शताब्दी का ग्रंथकार माना है । ''जैन परम्परा नो इतिहास'' पुस्तक में मुनि श्री दर्शनविजयजी आदि मुनियों ने वनवासी परम्परा के प्रणेता श्वेताम्बर आचार्यश्री समन्तभद्र और दिगम्बर आचार्यश्री समन्तभद्र को वीर निर्वाण की 7 वीं शताब्दी का एक ही आचार्य बताया है जो श्वेताम्बर एवं दिगम्बर दोनों ही परम्पराओं के मान्य आचार्य थे । जिन्होंने दोनों परम्पराओं के भेद को मिटा उन्हें एक करने का प्रयास किया। उनके बारे में यह अनुमान लगाया जाता है कि वे दक्षिणापथ के फणिमण्डल में उरगपुर के क्षत्रिय राजा के पुत्र थे । उनका जन्म नाम शान्तिवर्मा था । वे विशुद्ध श्रमणाचार की परिपालना में सदा जागरूक रहते थे। जिनेन्द्र प्रभु के कल्याणकारी उपदेशों को जन-जन तक पहुँचाने के लिये उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में विहार किया। एक बार जन्म-जन्मान्तर के अर्जित कर्म को दुर्विपाक से उन्हें भस्मक रोग हो गया तब इस दुस्सह्य, प्रचंड, अस्थियों को जलाने वाली व्याधि से पीड़ित श्री समन्तभद्र ने अपने गुरुदेव से समाधिमरण के स्वेच्छा वरण की आज्ञा मांगी। तब गुरुदेव ने ध्यानमग्न होकर उनके आयुष्य को देखकर उन्हें कुछ समय के लिये संयम परित्याग गरिष्ठ भोजन करने एवं भस्मक व्याधि नष्ट हो जाने पर पुनः संयम ग्रहण करने की आज्ञा दी। अनिच्छा होते हुए भी गुरु आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए समन्तभद्र ने प्राणधिक प्रिय विशुद्ध श्रमणाचार का परित्याग कर अपने शरीर पर भस्म रमा कर स्थान-स्थान घूमते हुए कांचीराज के राजप्रासाद में पहुंचे तो कांच्यधीश ने उन्हें राजप्रासाद के शिवमंदिर में रहने और शंकर की उपासना करने की प्रार्थना की । प्रतिदिन शिव को

भोग के समय अर्पण की गई गरिष्ठ उत्तमोत्तम भोज्य सामग्री के सेवन से श्री समन्तभद्र की भस्मक व्याधि कुछ माह में ही नष्ट हो गई। एक दिन कांची नरेश ने श्री समन्तभद्र से शिव की स्तुति करने का आग्रह करने पर समन्तभद्र ने ''स्वयंभू-स्तोत्र'' की रचना कर शिव पिण्डी के समक्ष खड़े होकर जिनेश्वर की स्तुति करना प्रारंभ की जिससे वही तत्काल शिवपिण्डी के अन्दर से प्रवर्तमान अवसर्पिणी काल की भारत क्षेत्र की चौबीसी के 8 वें तीर्थंकर प्रभु श्री चन्द्रप्रभ की मूर्ति प्रकट हुई। इसी अद्भुत चमत्कारपूर्ण घटना से प्रभावित हो कांचिपति पल्लवराज महेन्द्रवर्मन जैन धर्मावलम्बी ही बना रहा।

शक सं. 1050 में उट्टंकित, श्रमणबेलगोला स्थित श्री पार्श्वनाथ बस्ती के एक स्तम्भ लेख में आचार्य श्री समन्तभद्र की यशोगाथा का उल्लेख किया गया है कि किन-किन सुदूरस्थ प्रदेशों में जिन शासन का वर्चस्व स्थापित करने के लिये निरंतर विहार कर विपक्षियों को शास्त्रार्थ में पराजित करते हुए जैनधर्म का प्रचार-प्रसार किया।

आचार्य समन्तभद्र ने आप्त मीमांसा-अपर नाम देवागम, स्वयंभूस्त्रोत, अपर नाम चतुर्विंशति जिन स्तुति, स्तुति विद्या और युक्तायनुशासन आदि ग्रंथों की रचना की। उनका जिस श्रद्धाभक्ति के साथ जिनसेन आदि दिगम्बर परम्परा के महान ग्रंथकारों ने स्मरण किया है, उसी श्रद्धा एवं सम्मान सहित आचार्यश्री हेमचन्द्र एवं यशस्वी टीकाकार मलयगिरी इन श्वेताम्बर परम्परा के आचार्यों ने महिमास्पद शब्दों से स्मरण किया। इससे यह अनुमान लगाया जाता है कि समन्तभद्र विक्रम की 11 वीं, 12 वीं शताब्दी तक श्वेताम्बर परम्परा में आचार्य के रूप में मान्य थे। श्रुतकेवली भद्रबाहु के पश्चात श्री समन्तभद्र ही ऐसे आचार्य हुए जिन्हें श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों ही परम्पराओं द्वारा अपनी-अपनी परम्परा का आचार्य मानने का गौरव प्राप्त हुआ है।

नमस्कार महामंत्र तथा धर्म

नमस्कार-मंत्र के प्रथम पद में अरिहंतदेव (तीर्थंकरों) को नमस्कार किया गया है। इसका मुख्य कारण यह है कि वे धर्मप्रवर्तन करते हैं। फिर आचार्य, उपाध्याय और साधु-भगवंतों को तीसरे, चौथे ओर पाँचवें पद में वन्दन किया गया है, इसका कारण यह है कि वे भाविकों को धर्म-लाभ कराते हैं। इस प्रकार नमस्कार मंत्र में धर्म ओतप्रोत है। अतः मानना पड़ेगा कि नमस्कार-मंत्र में धर्म ही मुख्य मूलभूत तत्व है।

दूसरे पद में सिद्ध-भगवंतों को नमस्कार किया गया है। वे धर्माराधन से प्राप्त मोक्ष के साक्षी है। सिद्ध-भगवंत उत्कृष्ट धर्माराधना से अपने सब कर्मों का नाश करके मोक्ष प्राप्त करने वाले शुद्धात्मा हैं, अतः उनका नमस्कार भी धर्म प्रबोधक है।

शुक्ल ध्यान के योग से भरत चक्रवर्ती ने केवलज्ञान अर्जित किया

(श्री शांतिलाल सगरावत, मन्दसौर)

एक बार विहार करते प्रभु ऋषभदेव अष्टापद पर्वत पर पधारे। आप समवसरण में बैठे थे। प्रभु के चरणों में वंदन करने को भरत चक्रवर्ती ने पधारकर तीन बार प्रभु की प्रदक्षिणा करके एकाग्रचित्त होकर चिरकाल तक उनकी उपासना की।

दीक्षा लेने के एक हजार वर्ष कम एक लाख पूर्व काल व्यतीत होने पर प्रभु ने दस हजार साधुओं के साथ अष्टापद पर्वत पर मोक्ष प्राप्त किया। इन्द्र आदि देवताओं ने प्रभु का निर्वाण महोत्सव मनाया। बाद में भरत ने दूसरे अष्टापद के समान निषधा नाम का रत्नजड़ित प्रासाद मय मन्दिर बनवाया। उसमें भरत चक्रवर्ती ने श्री ऋषभदेव भगवान के शरीर, वर्ण और संस्थान की आकृति से सुशोभित रत्नपाषाणमय प्रतिमा की स्थापना की। ऋषभदेव के भावी 23 तीर्थंकरों की भी स्थापना की। बाद में उन्होंने निन्यानवे भ्रातृ मुनिवरों के भी रत्नपाषाणमय स्वरूप वाले अनुपम स्तूप बनवाये। फिर अपनी राजधानी में आकर प्रजापालन के लिए कटिबद्ध हो राज्य करने के साथ ही साथ भोगावली कर्म के फलस्वरूप उदय प्राप्त भोगों का उपभोग करने लगे।

एक दिन भरत चक्रवर्ती वस्त्राभूषण पहनकर सुसज्जित होकर अन्तःपुर की अंगनाओं के बीच सुशोभित होकर शीशे के सामने खड़े-खड़े रत्नजड़ित आभूषणों को निहारकर अत्यन्त प्रफुल्लित हो रहे थे कि अचानक उनके एक हाथ की अंगुली से अंगूठी गिर पड़ी। अंगूठी के गिरने से अंगुली निस्तेज शोभारहित दिखने लगी। उनके मन में मंथन जागा। भरत चिंतन की गहराइयों में डूब गए। निस्तार निकाला कि इस शरीर को गहनों से सजाने की अपेक्षा अपनी आत्मा को ही यदि ज्ञानादि गुण रूप आभूषणों से क्यों न सजा लूँ? इसकी चमक कभी भी फीकी नहीं होगी। इस तरह वैराग्य भाव में सराबोर होकर अनित्य भावना पर अनुप्रेक्षा की। शुक्ल ध्यान के योग से उन्हें केवलज्ञान उत्पन्न हो गया। उसी समय इन्द्र ने उन्हें रजोहरण आदि मुनिवेश अर्पण किया। भरत के स्थान पर उनके पुत्र आदित्ययशा को राजगद्दी पर बैठाया।

अहो योगस्य माहात्म्य प्राज्यं साम्राज्यमुद्रहन। अवाप केवल ज्ञानं भरतोभरताधिप।

अर्थात् योग के माहात्म्य से भरत क्षेत्र के अधिपति भरत चक्रवर्ती ने केवलज्ञान अर्जित किया।

मृत्यु जीवन की पूर्णता की घोषणा है

(मुनि डॉ. वैभवरत्न विजय म.सा.)

मृत्यु! क्या है मृत्यु? मृत्यु वो शब्द है जिसका नाम ही इंसान के दिलो दिमाग में भय पैदा कर देता है। एक छोटा सा शब्द 'मृत्यु' इंसान को डरा देता है। मौत से भयभीत इंसान मौत आने से पहले हर पल, हर क्षण मृत्यु के डर से मरता रहता है। मौत से बचने के लिए भागता रहता है। मृत्यु को प्राप्त होना अडिग सत्य है, जिसे कोई झुठला नहीं सकता। सम्राट हो या रंक। कोई भी उसकी पहुंच से बच नहीं सका है। लाख चेहरे-मोहरे लगाकर जीने के बाद भी हर परिस्थिति में मृत्यु की घोषणा हो जाती है। मौत जीवन के एक-एक पल का हिसाब रखती है। जीवन की हर परिस्थितियों को हर्षपूर्वक जिया फिर भी मृत्यु आने पर जीवन की पूर्णता की घोषणा हो गई। मौत के आते ही सब कुछ छूट जाता है। मृत्यु की निकटता देख मानव सबके सामने प्राणों की भीख मांगता है। डरता है कि कहीं जीवन छूट ना जाये।

वास्तविक स्थिति यह है कि जीवन का उपयोग सत्य के लिए हुआ ही नहीं। जब सत्य का सामना करने की ताकत जुटाने की बात आई तब सब मूल्य रहित लगता था। मृत्यु देह का है, शाश्वत आत्मा का नहीं। देह की यात्रा जन्मजन्मान्तर से यूँ ही होती रही है, लेकिन मृत्यु का दर्शन हुआ ही नहीं। बार-बार मृत्यु के डर से भयभीत मानव मरता ही रहा है। मौत को मारने की कोशिश में एक पल भी पुरुषार्थ नहीं किया। मृत्यु पर विजय पा ली तो निर्भयता की यात्रा से कौन रोक सकता है? मृत्यु का जन्म ही ना हो वही सत्य का शिखर है। पृथ्वी सारी मौत को बचाने की कोशिश करती है लेकिन प्रभु महावीर के संदेश के बिना मृत्यु को पहचानेंगे कैसे? जब तक प्रभु के संदेशों को ग्रहण नहीं करेंगे, अहिंसा के पथिक नहीं बनेंगे तब तक हम मृत्यु पर विजय नहीं प्राप्त कर सकते।

मृत्यु को मारना या उस पर विजय प्राप्त करने का अर्थ है परम त्याग से जीवन को जीना। आपका त्याग अपूर्व सौन्दर्य लाता है। उस सौन्दर्य की प्राप्ति जीवन को धन्य बना देती है।

खुशामत के चक्कर में शिकारी खुद शिकार बन गया

दुनिया में जहाँ देखो, जिसे देखो वो आगे निकलने की होड़ में लगा हुआ है। जो वो नहीं है, वही दिखने की कोशिश कर रहा है। लोगों को झूठ के सहारे ठगने में लगा है। दूसरों का शिकार करने के फेर में खुद शिकार बन रहा है। अपनी सफलता के लिए

झूठ के सहारे लोगों को फंसाने की तरकीब लगाने वाले सोचते ही नहीं कि कहीं वे स्वयं तो इसमें नहीं फंस रहे हैं? अपने सम्मान को प्राप्त करने के चक्कर में दूसरों को गिराने, अपनी सफलता के लिए स्वयं की तारीफ के झूठे पर्चे में बाजार में चलाने से नहीं हिचकिचाते। जरूरत होने पर क्रूरता का कदम उठाने में भी नहीं डरते। यानि अपने मान-सम्मान की इमारत दूसरों के अपमान पर खड़ी करने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। नेता-अभिनेता भी कई बार तरक्की के लिए खुशामद में अपना शीश चरणों में झुका देते हैं। सिंहासनों की यात्रा के लिए कई लोग गरीबों के झोपड़ों की राह में भी लेते हैं। उनके हाथ का रूखा-सूखा भी खा लेते हैं। लेकिन सिंहासन की प्राप्ति के बाद बेचारे उन गरीबों के विश्वास को पैरों तले रौंद देते हैं। जिस सिंहासन के लिए दूसरों के विश्वास को पैरों तले रौंधा है, पुनः उसी शीश को किसी के चरणों में फिर गिरा देना शिकार करते शिकारी का खुद ही शिकार हो जाना नहीं तो क्या है?

क्यों होता है हाई ब्लड प्रेशर

- चिंता, क्रोध, ईर्ष्या, भय आदि मानसिक विकार।
- अनियमित खानपान। कई बार आवश्यकता से अधिक खाना।
- मैदा से बने खाद्य पदार्थ, चीनी, मसाले, तेल, घी, अचार, मिठाइयां, चाय, सिगरेट व शराब आदि का सेवन। • खाने में रेशे, कच्चे फल और सलाद न होना।
- शारीरिक श्रमन करना। • पेट और पेशाब संबधी पुरानी बीमारी।

सावधानियां

- तला हुआ खाना, घी आदि कम से कम खाएं।
- अपना वजन नियंत्रित रखें। • प्रतिदिन कम से कम 4 किमी पैदल चलें।
- खानपान और दिनचर्या नियंत्रित रखें।
- शराब, धूम्रपान और तंबाकू का सेवन न करें।
- छोटी-छोटी चीजों का तनाव न लें। हमेशा खुश रहें।
- तनाव दूर करने के लिए प्रतिदिन योग और ध्यान करें।
- नमक कम से कम खाएं।

आखातीज एक पावन पर्व

(साध्वी आत्मदर्शनाश्री)

अक्षय तृतीया लोकभाषा में आखातीज के नाम से प्रचलित है और यह दिन परमात्मा आदिनाथ से संबंधित है। आदिनाथ भगवान इस अवसर्पिणी काल के प्रथम नरेश, प्रथम मुनि एवं प्रथम तीर्थंकर थे।

ऋषभदेवजी का समय पाषाणयुग की समाप्ति और नवयुग का संधिकाल का था। मनुष्य कल्पवृक्ष से अपना गुजारा करते थे। धीरे-धीरे कल्पवृक्ष की शक्ति भी क्षीण होने से मनुष्य के सामने खाद्यपूर्ति की जटिल समस्याएं पैदा होने लगी थीं। साधन के अभाव में परस्पर संघर्ष होने लगे थे। बढ़ते संघर्ष के बीच संग्रह करने की भावनाएं मनुष्य में पैदा होने लगी थीं। वह समय युगलिकों का युग था। एक माँ की कुक्षी से जन्मे बालक-बालिका की ही परस्पर शादी हो जाती थी। वे सभी युगलिक आजीविका संबंधी समाधान हेतु नाभि कुलकर के समक्ष उपस्थित हुए और उनके सामने अपनी समस्याएं रखी। नाभि कुलकर ने कहा- तुम सभी ऋषभदेव के पास जाओ। वही इस समस्या का समाधान कर सकते हैं। सारे युगलिक ऋषभदेवजी के शरण में पहुंचे और उनसे अपनी समस्या का समाधान करने का अनुरोध किया। ऋषभदेवजी हर कार्य में निपुण थे। दृढ़ प्रतिज्ञा वाले थे। उन्होंने युगलिकों को समझाते हुए कहा कि जब मैं पिताजी को नमन करने जाऊँ तब तुम सब भी वहाँ आ जाना। ऋषभदेवजी के कथनानुसार युगलिया पुनः नाभि कुलकर के पास पहुँच गए और अपनी समस्या प्रस्तुत की। नाभि कुलकर ने सभी के समक्ष ऋषभदेव को सबकी समस्या का समाधान करने हेतु आदेशित किया। ऋषभदेवजी ने सभी को असि, मसि और कृषि आदि कलाओं की जानकारी के साथ श्रम करना सीखने और खाली नहीं बैठने की प्रेरणा दी। उनके उद्‌बोधन से मानव जाति ने खेती करना सीखा। साथ ही कपड़े बुनना, बर्तन बनाना आदि शिल्प कलाएं भी सीखीं। ऋषभदेवजी जानते थे कि मनुष्यों में वस्तुओं का संग्रह करने की वृत्ति जागृत हो चुकी है, जिसकी अंतिम निष्पत्ति विषमता ही है। वे दीर्घकाल तक सामाजिक व्यवस्थाओं को सुदृढ़ता प्रदान करते रहे और अपने जीवन के अंतिम काल में आत्मसाक्षात्कार के मार्ग पर चल पड़े। आत्मकल्याण की कला मात्र उपदेश से नहीं सिखाई जा सकती, इस बात का अनुभव करते हुए उन्होंने स्वयं के जीवन को आचरणरूप बनाकर प्रस्तुत किया। ऋषभदेवजी अपने ज्येष्ठ पुत्र भरत को

राजगद्दी सौंपकर स्वयं अट्ठमतप कर चार हजार पुरुषों के साथ दीक्षा ग्रहण की। वह दिन चैत्र वदी अष्टमी का था। प्रभु जिन वस्तुओं का त्यागकर ग्राम-नगर विचरने लगे , जनता पुनः उन्हीं वस्तुओं को प्रभु के सामने प्रस्तुत करने लगी। उस समय 'दान' शब्द से किसी का परिचय नहीं था। दान क्या है? कोई नहीं जानता था। क्योंकि उस समय कोई याचक नहीं था। प्रभु इन वस्तुओं पर नजर डाले बिना ही आगे बढ़ते रहे और यह क्रम यूँ ही चलता रहा।

इसी क्रम में वैशाख शुक्ल द्वितीया की रात्रि में हस्तिनापुर नगर की तीन आत्माओं सोम प्रभ, श्रेयांस कुमार एवं नगर सेठ सुबुद्धि को स्वप्न आया। दूसरे दिन प्रातः यानि वैशाख शुक्ल तृतीया के दिन तीनों ने अपने-अपने स्वप्न सुनाए और अंत में सभी एक आवाज में बोले कि निश्चय ही आज श्रेयांस कुमार को महान लाभ होगा क्योंकि तीनों सपनों के सूत्रधार रूप श्रेयांसकुमार ही हैं।

इसीदिन ऋषभदेवजी विहार करते हुए हस्तिनापुर में पधारे। नगर की जनता प्रभु के आगमन से हर्षित हुई और उनसे अपने गृह आंगन में पधारने की भावभरी विनती करने लगी। सारा नगर महोत्सव के वातावरण से खिल उठा, क्योंकि आदिनाथ दादा आज यहाँ पधारे थे। यह बात राजमहल तक जा पहुँची। सोमप्रभ, श्रेयांसकुमार और नगर सेठ सुबुद्धि दौड़ते हुए प्रभु के पास पहुँचे। श्रेयांस कुमार प्रभु को देखते ही अलौकिक दुनिया में खो गए और सोचने लगे- 'यह वेश तो पहले भी कहीं देखा है मैंने। पर कहाँ देखा?' श्रेयांसकुमार भूतकाल की स्मृतियों में खो गए। कुछ ही क्षणों में उन्हें जाति स्मरण ज्ञान उपलब्ध हुआ। इस ज्ञान से उन्होंने जाना कि दीक्षा लेने के बाद प्रभु को आज तक आहार नहीं मिला है। एक वर्ष चालीस दिन के उपवास हो गए हैं। इसके साथ ही उन्होंने सुपात्रदान की विधि भी जान ली। श्रेयांसकुमार ने निर्णय लिया कि प्रभु को पारणा तो मैं ही करवाऊँगा। यह सोचकर वे महल पहुँचे। अक्षय तृतीया का दिन था। परम्परानुसार उस दिन किसान लोग अपनी कृषि उपज सर्वप्रथम राजा को भेंट देते थे। उसी समय किसान गन्ने के ताजे रस से भरे हुए घड़े को लेकर वहाँ पहुँचा। श्रेयांसकुमार ने सोचा -'गन्ने का रस सर्वविधि से निर्दोष है। प्रभु को बहराया जा सकता है।' वे उत्तम भावना के साथ प्रभु के समक्ष उपस्थित हुए और उनसे अपने आंगन में पधारने और शुद्ध आहार को स्वीकार कर मुझे पावन कीजिए, ऐसा आग्रह करने लगे।

श्रेयांस कुमार ने गन्ने के मधुर रस से प्रभु का अक्षय तृतीया के दिन पारणा करवाया था इसलिए अक्षय तृतीया जैन परम्परा का एक मुख्य पर्व बन गया।

परम हितकारिणी गुरु सेवा

(साध्वी श्री रुचिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

सादगी पूर्ण जीवनशैली, अनुशासन और समर्पण के अद्‌भूत संयोग के साथ हमें आचार्य जयन्तसेन सूरिश्वरजी का नेतृत्व मिला है। वे शांति के वाहक, सत्य के पक्षधर, समाज के निर्माता हैं। उनके शासन में सुदृढ़ संगठन की विरासत और सम्पन्न हुई है। समाज के नैतिक पक्ष को उजागर करने वाले पू. गुरुदेव द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव की मर्यादा एवं आगम सम्मत आचार के क्रियान्वयन के रूप में लगाम के दोनों छोर को थाम, धर्मरथ को गतिमान कर रहे हैं। पू. गुरुदेव की उपस्थिति भी बहुत महत्वपूर्ण है। वे कुछ न भी करें तब भी उनकी उपस्थिति मात्र से एक विशिष्ट सृजनात्मक ऊर्जा जन-जन को प्राप्त होती है। कुछ नया कर गुजरने का भाव पैदा होता है।

गुरु की सेवा का अवसर मिलना दुर्लभ है। गुरु की सेवा दो हेतुओं से की जाती है। प्रथम तो वे गुणों के भंडार होते हैं, और दूसरे वे हमारे परम उपकारी होते हैं। पुष्प सुगंध से भरा होता है अतः भ्रमर उसे प्राप्त करने के लिए उसके चारों ओर चक्कर लगाते हैं। ठीक उसी प्रकार गुरु विविध गुण समूहों से विभूषित होते हैं। भक्त रूपी भ्रमर इन गुण समूहों को प्राप्त करने के लिए गुरु की सेवा और भक्ति करते हैं। जो भक्त गुरु के गुणों को अपने जीवन में उपलब्ध करना चाहते हैं, उन्हें गुरु की सेवा, उनका सान्निध्य, उनकी उपासना अवश्य करना चाहिए।

एक बादशाह अपने स्नानकक्ष में पहुंचा। वहां मिट्टी पड़ी हुई थी, जिसमें से बहुत ही मोहक गंध आ रही थी। बादशाह का हृदय खुशी से झूम उठा। उसने अपने सेवकों से पूछा इस मिट्टी में इतनी और ऐसी सुगंध कहाँ से आई। सेवकों ने कहा हुजूर यह मिट्टी बाग से खोदकर लाई गई है। इस मिट्टी में गुलाब के पौधे लगे हुए थे। उन गुलाब के फूलों की खुशबू इस मिट्टी में बस गई है। यह सुनकर बादशाह का दिल बाग-बाग हो गया। वह बोल उठा-'वाह गुलाब! तूने अपनी सुगंध इस मिट्टी में डाल दी।' कहने का आशय यह कि जिस प्रकार गुलाब की सेवा से मिट्टी में सुगंध आ गई। उसी प्रकार गुरु की सेवा से उनका प्रशमभाव, उदारता, गंभीरता, सरलता आदि गुण स्वाभाविक रूप से भक्तों में भी आने लगते हैं।

गुरु हमारे परम उपकारी होते हैं। व्यक्ति अपने लिए सब कुछ करने को तैयार हैं

किन्तु 'पर' के लिए कुछ भी करने में कठिनाई का अनुभव करता है। गुरु ने हमारे स्वार्थरूपी दोषों को दूरकर हमें सत्कार्यों से जोड़ा है। परमात्मा का सच्चा मार्ग बताकर भव सागर से तिरने का उपाय सूझाया है। अतः गुरु की जितनी सेवा की जाए उतनी कम है। पंचसूत्र के प्रवज्यापरिपालन सूत्र में कहा गया है- 'जो गुरु को भगवान मानकर सेवा करता है, उसे भवांतर में भगवान गुरू के रूप में मिलते हैं।' षोडषक में कहा है- 'गुरु पर बहुमान परमात्मा प्राप्ति का बीज है।' गुरु सेवा भावश्रावक का चिन्ह है। धर्मरत्न प्रकरण में कहा है-'जिसने व्रत लिये हों, शीलवान हो, गुणवान हो, व्यवहार में सरल हो, गुरु की सेवा करता हो, ऐसा श्रावक भावश्रावक होता है।' स्थानांग सूत्र में वर्णित श्रावक के चार भेदों में भी कुछ इसी तरह की बात कही गई है। ये चार भेद हैं -1. अद्धागसमाणा, 2. पडागसमाणा, 3. ठाणुसमाणा, 4. खरकंटयसमाणा।

1. अद्धागसमाणा- अद्धाग अर्थात मार्ग। कुछ श्रावक मार्ग के समान सीधे-सरल एवं जिज्ञासु होते हैं। वे श्रावक पद को सार्थक करने वाले होते हैं। श्रावक पद तीन शब्दों से मिलकर बना है। 'श्र' से श्रद्धावान, 'व' से विवेकवान, 'क' से क्रियावान। श्रद्धान्वित श्रावक गुरु के वचन को अतिशय भक्तिपूर्वक हाथ जोड़कर सुनते हैं। उन वचनों को मात्र स्वीकार ही नहीं करते बल्कि मन-वचन-काया से प्रयत्नपूर्वक, बिना विलंब के उनका पालन करते हैं। कई बार गुरु के वचन विरोधी लगते हैं, उनकी आज्ञा प्रतिकूल होती है, फिर भी श्रद्धावान श्रावक गुरु आज्ञा की आराधना एकांत हितकारी मानकर करते हैं। वे कोई विकल्प नहीं करते हैं। उनकी एक ही आस्था होती है कि गुरु जो करेंगे अच्छा ही करेंगे। हमें तो मात्र गुर्वाज्ञा का पालन करना है। जिनकी श्रद्धा मजबूत होती है, वे शंका-कुशंका नहीं करते। शंका-कुशंका करने वाले लाभ से वंचित रह जाते हैं। एक दृष्टान्त से इस बात को समझ सकते हैं:-

एक बार दो श्रावक गुरु दर्शन के लिए निकले। वे दोनों श्रावक पोलियो के रोगी थे अतः बेसाखी के सहारे चलते हुए उन्होंने उपाश्रय में प्रवेश किया। गुरु ने दूर से उन्हें देखा और बोले-वैसाखी लेकर क्यों चलते हो, वैसाखी वहीं डालकर आओ। एक श्रावक ने गुरु के वचन को तत्काल मान्य करके वैसाखी को वहीं छोड़ा और मुश्किल की परवाह नहीं करते हुए गुरु के पास आया। वह जैसे ही गुरु भगवंत के पास आया पूरी तरह ठीक हो गया। उसकी वैसाखी हमेशा के लिए छूट गई। दूसरे श्रावक ने सोचा गुरु को संभवतया पता नहीं है कि हम अपंग हैं और इसलिए ऐसा बोल रहे हैं। पहले उनके समीप तक जाऊँ बाद में

उन्हें अवगत करा दूँगा। अतः उसने वैसाखी नहीं छोड़ी और परिणाम यह हुआ कि वह वैसा ही रह गया। गुरु विशिष्ट ज्ञानी होते हैं। भावी विचार कर बोलते हैं। श्रद्धावान श्रावक इस बात को अच्छी तरह जानते हैं।

अद्धागसमाणा श्रावक श्रद्धान्वित होने के साथ ही साथ विवेकवान भी होते हैं। विवेक का अर्थ है- बुद्धि का सही उपयोग करना। व्यक्ति की प्रत्येक प्रवृत्ति विवेक से ही मूल्यवान बनती हैं। श्रद्धा और भक्ति भी विवेक से अनुशासित होना चाहिए। कई बार गुरु भक्ति के अतिरेक में लोग विवेक को भूल जाते हैं। जैसे हमारे यहां पू. गुरुदेव जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. की निश्रा में जब भी रथयात्रा या जुलूस का आयोजन होता है, एक समस्या उभरकर सामने आती है। प्रत्येक गुरुभक्त यह चाहता है कि गुरुदेव की दृष्टि उसके ऊपर पड़े। अतः पीछे से निकलकर वह गुरुदेव के आसपास चलने का प्रयत्न करते हैं। यह सच है कि पू. गुरुदेव की एक नजर पाने के लिए गुरुभक्त हजारों किलोमीटर की यात्रा करके आते हैं। किन्तु हर अनुष्ठान का अपना एक अनुशासन होता है। उसका पालन भी अवश्य होना चाहिए। एक बात और भी है। आज हमारे लिए पू. गुरुदेव के स्वास्थ्य की बात सबसे अधिक कीमती है। गुरुदेव के स्वास्थ्य सुधार हेतु उन्हें अधिक से अधिक विश्राम मिले ऐसा प्रयत्न करना चाहिए। यह आग्रह नहीं होना चाहिए कि हमें गुरुदेव के दर्शन करना ही है। उन्हीं से वासक्षेप एवं मांगलिक श्रवण करना है। गुरुभक्त श्रावक को क्रियावान होना चाहिए। क्रिया के बिना ज्ञान का कोई मूल्य नहीं। जो संघ-समाज, परिषद् में अग्रणी है, उन्हें तो विशेष रूप से रात्रि भोजन, जमीकंद के निषेध रूप प्रतिज्ञा होनी चाहिए। चैत्यवंदन-गुरुवंदन आदि सविधि मुखपाठ होना चाहिए ताकि अन्य सदस्य प्रेरणा ले सके।

बुराई

सारी बुराइयां अनियंत्रित मनोभावों से ही पैदा होती हैं। निरंकुश-मनोवृत्तियों वाला समाज-विघटन के निम्न से निम्न कार्य कर डालता है। आज का आदमी बिल्कुल मर्यादा-विहीन हो रहा है। आत्मनियमन की डोर उसके हाथों से पूरी तरह छूट गई है। भावावेश में वह निष्ठुर अपराध कर बैठता है। आज अपने से बड़े अधिकारियों और अभिभावकों की भी कोई बात सहन नहीं है। उग्रता आते ही वह अपने आपे से बाहर हो जाता है। अपने नाजुक संवेगों पर बिल्कुल भी नियंत्रण नहीं रख पाता। भय, द्वेष, घृणा, ईर्ष्या, आवेश, लोभ और कामवासना के आवेगमय संवेगों के क्षणों में व्यक्ति एकदम भावावेश में जल प्रवाह में गिरे तिनके की तरह बह जाता है।

कर्म सत्ता-धर्म सत्ता

(आचार्य श्री रत्नसेन सूरिजी म.सा.)

समूचे विश्व में दो सत्ताएं काम कर रही हैं- कर्मसत्ता और धर्मसत्ता।

कर्मसत्ता का कार्य है-न्याय करना। किसी भी जीव ने किसी भी प्रकार का गुनाह किया हो तो उसको सजा देने का काम 'कर्मसत्ता' करती है ।

चौंदह राजलोक में रहे सभी जीवों पर कर्मसत्ता का एक छत्री साम्राज्य है, कोई भी जीव उससे स्वतंत्र नही है।

निगोद में रही आत्मा हो, चाहे देवलोक में रही दिव्यात्मा हो-वे भी कर्म के न्याय से जुड़ी हुई हैं।

जिसने जैसा कर्म बांधा है, उसके अनुसार उसको इनाम या सजा देने का काम कर्मसत्ता करती है।

तीर्थंकर की आत्मा भी क्यों न हो, यदि उसने भी कोई गलती की है तो उसको भी सजा करने का काम इस कर्मसत्ता ने किया है।

कर्मसत्ता के आगे किसी की रिश्वत नहीं चलती है।

वर्तमान न्यायालय में रहा जज तो शायद पैंसों के बल पर बिक भी सकता है, परंतु कर्मसत्ता को किसी की रिश्वत मंजूर नही है। उसमें दया नहीं हैं, वह किसी को दुःखी देखकर द्रवित नहीं होती है।

प्रभु महावीर की आत्मा ने वासुदेव के भव में भूलें की तो कर्मसत्ता ने उन्हें भी सातवीं नरक में धकेल दिया। सिंह के भव में हिंसादि पापाचरण किए तो उन्हें भी चौथी नरक में जाना पडा।

किसी ने सुकृत किया तो कर्मसत्ता ने उसे सर्वोच्च इनाम भी दिया।

कर्मसत्ता का काम न्याय करने का है। उसे किसी की शर्म नहीं है, दुःखी या महादुःखी को भी देखकर उसे दया नहीं आती है। कर्मसत्ता से भी बढ़कर दूसरी सत्ता है-धर्मसत्ता

धर्मसत्ता की विशेषता है, वह खूब दयालु है। किसी भी व्यक्ति ने कैसा भी गुनाह क्यों न किया हो, परंतु वह व्यक्ति 'धर्मसत्ता' की शरण स्वीकार कर लेता है तो धर्मसत्ता उसके सभी गुनाहों को माफकर देती है ।

कर्मसत्ता न्यायाधीश की तरह है। न्यायाधीश तो कानून से बंधा हुआ है, कानून से यदि कोई गुन्हेगार सिद्ध होता है तो वह उसे सजा किए बिना नहीं रहती है, जबकि धर्मसत्ता तो राष्ट्रपति की भांति है।

सुप्रीम कोर्ट के जज ने किसी गुन्हगार को फांसी की सजा घोषित कर दी हो, परंतु यदि वह गुन्हेगार राष्ट्रपति के पास 'दया' की अर्जी करता हो तो राष्ट्रपति उसकी मौत की सजा को भी रद्द कर सकता है।

खंधक मुनि महान तपस्वी थे, उनके

बहनोई ने उन्हें भयंकर सजा कर दी। जीते जी चमडी उतारने का आदेश दे दिया-राजा के सेवकों ने जाकर खंधक मुनि की जीते जी चमड़ी भी उतार दी-परंतु बाद में राजा को पता चला कि महात्मा तो निर्दोष थे 'मैंने भयंकर भूल कर दी। उन्हें अपनी भूल पर तीव्र पश्चाताप हुआ'

परिणाम यह आया कि राजा को भी केवलज्ञान हो गया, पाप के पश्चाताप में जबरदस्त ताकत समाई हुई है।

भयंकर से भयंकर पापी आत्मा ने भी, यदि अपनी भूल को स्वीकार कर लिया तो उसका भी उद्धार हो गया,

- पाप से भी पाप का पक्षपात ज्यादा खतरनाक है। पाप को स्वीकार किया तो भयंकर पापियों का भी उद्धार हो गया है।

भूल किससे नहीं होती है, लोक में कहावत है ''मानव मात्र भूल का पात्र है।''

जैन शासन तो कहता है छद्मस्थ मात्र भूल का पात्र है। जब तक छद्मस्थ अवस्था है, तब तक भूलें होने की संभावना है, छद्मस्थ अर्थात् मोहनीय आदि घाति कर्मों से आवृत अवस्था-अर्थात् जब तक आत्मा को केवलज्ञान न हो, तब तक आत्मा छद्मस्थ कहलाती है, छद्मस्थ अवस्था में भूल होने की संभावना है, इसी कारण तो तीर्थंकर परमात्मा छद्मस्थ अवस्था में धर्म का उपदेश नहीं देते हैं।

गौतम स्वामी चार ज्ञान के धनी थे एक अन्तर्मुहूर्त में चौदहपूर्वों के रचयिता थे। 50000 केवली शिष्यों के गुरु थे, अनेक लब्धियों के स्वामी थे, इतना होने पर भी आनंद श्रावक के 'अवधिज्ञान' के विषय में उनसे भी भूल हो गई।

सिद्धसेन दिवाकर सूरिजी म.सा. जैन शासन के प्रकांड विद्वान थे, फिर भी आगम शास्त्रों को संस्कृत में करने की उनसे भी भूल हो गई।

नवकार के संक्षेप के रूप में 'नमोर्द्रहन सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः'-की रचना की। इसके परिणाम स्वरूप उन्हें भी पारांचित प्रायश्चित आया।

पू. हरिभद्रसूरिजी म. अंतिम पूर्वधर समकालीन थे। 1444 धर्मग्रंथों के रचयिता थे सूरि पुरंदर, शास्त्रों के मर्म के ज्ञाता थे, इतने महान् ज्ञानी होने पर भी अपने शिष्य हंस-परमहंस के विषय में वे भी कोपातूर हो गए थे और बौद्धों को धगधगते तेल के कढाए में तलने के लिए तैयार हो गए थे।

कलिकाल सर्वज्ञ महान् ज्ञानी थे परंतु कुमारपाल को सुवर्णसिद्धि का प्रयोग बताने के विषय में भूल कर बैठे थे।

भूल हो जाना सहज है, परंतु भूल को स्वीकार करना अत्यंत ही कठिन है, भूल हो जाने के बाद जिन-जिन पुण्यात्माओं ने अपनी भूलों को स्वीकार कर लिया-वे महान् बन गए-इतिहास के पन्नों पर उनका नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया-वे अमर हो गए। उनका नाम आदर से लिया जाने लगा।

नवग्रहों के रत्न रहस्य

(श्री दिनेश जैन)

रत्न एवं ग्रहों के संबंध पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी है। मानव जीवन पर ग्रहों का अत्यधिक प्रभाव पडता है, ग्रहों में व्यक्ति के सृजन एवं संहार की जितनी प्रबल शक्ति है उतनी ही शक्ति रत्नों में ग्रहों की शक्ति घटाने तथा बढाने की होती है। वैज्ञानिक भाषा में रत्नों की इस शक्ति को हम आकर्षण या विकर्षण शक्ति कहते हैं। रत्नों में अपने से संबंधित ग्रहों की रश्मियों, चुम्बकत्व शक्ति तथा कम्पन को खींचने की शक्ति होती है तथा परावर्तित कर देने की भी शक्ति होती है। रत्नों की इसी शक्ति के उपयोग के लिये इन्हें प्रयोग में लाया जाता है।

जन साधारण रत्नों की महिमा से अत्यधिक प्रभावित है। रत्न अपने रंग के कारण ही प्रभाव डालते हैं, ऐसी धारणा कई लोगों के मन में आती है परंतु ऐसा नहीं है रत्नों की कट और साइज उनके प्रभाव का कारण बनता है, किसी भी रत्न को धारण करने से पहले रत्न का रंग, कटाव, साइज का ध्यान रखना अत्यावश्यक है।

ऋग्वेद के अनुसार रत्नों की उत्पत्ति में अग्नि सहायक है। भूमि के गर्भ में जब विभिन्न रासायनिक तत्त्व आपस में मिलते हैं तो भूमि की अग्नि से पिघलकर रत्न बनते है। इस रासायनिक प्रक्रिया में तत्त्व आपस में एक जुट होकर विशिष्ट प्रकार के चमकदार, आभायुक्त बन जाते हैं तथा इनको कई गुणों का प्रभाव भी समायोजित हो जाता है।

हम जिस भौतिक युग में जी रहे हैं, वहाँ व्यक्ति जल्दी प्रगति की सीढियां चढना चाहता है इसलिए मनुष्य रत्न, ज्योतिष एवं मंत्र का सहारा लेता है, पीड़ा कष्ट या निराशा उसकी मानसिकता को नष्ट कर देती है, इसलिए भाग्य को बदलने का प्रयास करता है, भाग्य परिवर्तन में गुरुसेवा, मंत्र जाप, ग्रह शांति, दान के साथ-साथ रत्नों का योगदान भी अवश्य रहता है, रत्नों को धारण करने से मन में एक खास प्रकार की अनुभूति भी होती है, ज्यादातर रत्न समुद्री इलाकों व पर्वतीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं।

हर मनुष्य की जन्मपत्री में कोई न कोई ग्रह कमजोर और कुछ ग्रह बलवान भी होते हैं और इनके अनुसार ही जातक के भाग्य में परिवर्तन आता रहता है। अशुभ कमजोर ग्रहों को शुभ बनाने की मनुष्य की सर्वदा चेष्टा रही है, इसके लिये अनेक उपाय जैसे मंत्र जाप, दान, औषधि स्नान, रत्न धारण, धातु एवं यंत्र धारण, यंत्र पूजन, देव दर्शन आदि को अपनाते हैं।

रत्न ग्रहों को बलवान करने के लिये पहनाया जाता है। किसी ग्रह से संबंधित

पीडा हरने के लिये भी रत्न को पहनाया जाता है, जातक का योगकारक ग्रह यदि निर्बल हो तो रत्न अवश्य धारण करना चाहिये ।

सूर्य के लिये माणिक, चंद्र का मोती, मंगल का मूंगा, बुध का पन्ना, गुरु का पुखराज, शुक्र का हीरा, शनि का नीलम, राहू ग्रह का गोमेद और केतु ग्रह का लहसुनिया रत्न पहनाया जाता है । धारण किया हुआ रत्न शरीर को छूना आवश्यक है, रत्न का पारदर्शी होना एवं उसमें चमक होना उसकी किस्म को दर्शाते हैं, रत्न का कटाव एक कोण में होना भी जरूरी है, स्वर्ण (गोल्ड) सभी रत्नों के लिये उत्तम धातु है, अगर हीरे को प्लाटीनम में पहनें तो अति उत्तम है । मोती को चांदी में भी पहन सकते हैं, मूंगे को तांबे में भी पहन सकते हैं।

यह जान लेना आवश्यक है कि रत्न हमें शुभ फल देगा, या दे रहा है । विशेष रूप में नीलम को परख कर ही पहनना चाहिये, कई बार रत्न या नग में कुछ त्रुटि होने के कारण शुभ भी नही होता अतः रत्न की अंगुठी बनाने के पहले अपने हाथ पर कपड़े में बांध लेवें, एक दो दिन में आप स्फूर्ति महसूस करें तो रत्न ठीक है, अन्यथा दूसरा रत्न नग लेकर वापस हाथ पर बांध लेवें ।

हिंदू संस्कृति से संबंधित धर्म ग्रंथों, प्राचीन शास्त्रों में रत्नों की भस्म का उपयोग रोग उपचार के लिये भी बताया गया है, रत्नों को धारण करने के लिये आवश्यक है की पहली बार धारण के पहले संबंधित ग्रह की पूजा करके, रत्न ग्रह मंत्र जाप करकर शुभ मुहूर्त में चंद्र बल देखकर शुभ समय में धारण करने से शुभ फल जल्द ही मिलना प्रारंभ हो जाता है ।

रत्न धारण, कौन-कौन सा रत्न पहनें, कितना वजन का रत्न पहनें, दाहिने या बायें हाथ में पहनें, कौनसी अंगुली में पहनें, कौन भी रत्न एक साथ एक ही हाथ में नहीं पहनें आदि सब जानकारी ज्योतिष से विचार विमर्श करने के बाद ही रत्न धारण करना चाहिये क्योंकि रत्न अगर शुभ फल देगा तो अमृत समान होता है और अशुभ रत्न पहनने से विष बराबर भी हो सकता है ।

पहना हुआ रत्न यदि खो जाए या चोरी हो जाए तो समझें कि ग्रह के दोष खत्म हुए, यदि रत्न में दरार पड जाए तो समझें कि ग्रह बहुत प्रभावशाली है । उसकी ग्रह शांति भी करवानी चाहिए । यदि रत्न का रंग फीका पड़े तो समझना चाहिये कि ग्रह का असर शांत हुआ ।

नवरत्न नवग्रहों से आ रही किरणों को आत्मसात करने में सक्षम है एवं ग्रहों से आ रही किरणों के साथ अनुनाद स्थापित कर हमारे शरीर में किरणों के प्रवाह को बढाते हैं।

नवरत्न संबंधित अन्य जानकारी प्राप्त करना चाहें तो मुझे मोबाइल 90337-45679 पर फोन करें, ईमेल-से भी आपके सवाल पूछ सकते हैं।

E-mail : dineshkjain1@gmail.com

अक्षय तृतीया

(श्री गणेशमुनि शास्त्री)

आदिनाथ प्रभो ऋषभदेव की महिमा हम सब गाते हैं ।
श्रद्धा से कर याद प्रभो को, निशदिन शीश झुकाते हैं ।

सरयू तट बसी अयोध्या नगरी सबसे ही न्यारी ।
नाभिराय संग मां मरूदेवी जाते सुत पर बलिहारी ।
धर्म का पाठ पढ़ाया था, सुर नर सुन हर्षाया था ।
ज्ञान का दीप जलाया था, जीवन सफल बनाया था ।
गौरव-गरिमा पावनकारी भूल नहीं हम पाते हैं ।
आदिनाथ प्रभो ऋषभदेव की महिमा हम सब गाते हैं ।

आत्म-ज्योति प्रकटाने हेतु महामौन जिनने धारा ।
राज त्यागकर वन का जीवन, लगा जिन्हें उत्तम प्यारा ।
असि, मसि, कृषि के ज्ञानी, तुमसा हुआ कौन ध्यानी ।
अद्‌भुत आदि प्रभो दानी, जग ने बात सदा मानी ।
भरत-बाहुबली जैसे सौ सुत पाकर के जो हर्षाते हैं ।
आदिनाथ प्रभो ऋषभदेव की महिमा हम सब गाते हैं ।

अभिग्रह लेकर मौन आप हस्तिनापुर आये थे ।
श्रेयांस कुंवरजी महिमा सुनकर चरण शरण को पाये थे ।
महलों में वे चरण चले, सबके चेहरे देख खिले ।
इक्षु रस घट भरे मिले, पावन शुभ पल वहां फले ।
इक्षु रस का पान करने को अपने कर बढ़ाते हैं ।
आदिनाथ प्रभो ऋषभदेव की महिमा हम सब गाते हैं ।

अमर हो गई अक्षय तृतीया, वर्षीतप का पूर हुआ ।
देवों ने दुंदुभी बजाई अज्ञान-तिमिर सब दूर हुआ ।
वर्षीतप जो करते हैं, सुख से झोली भरते हैं ।
पग तप-पथ पर धरते हैं, जन्मों के दुःख हरते हैं ।
वे श्रद्धा का भाव हृदय धर, गुरु चरणों में आते हैं ।
आदिनाथ प्रभो ऋषभदेव की महिमा हम सब गाते हैं ।

सफेद पेठा: रामबाण औषधि

(श्री अनोखीलाल कोठारी, उदयपुर-राज.)

सफेद पेठा की मिठाई आगरा की बनी हुई जग प्रसिद्ध है । आजकल सफेद पेठा की मिठाई प्रत्येक शहर में उपलब्ध होती है । पेठे का जूस अनेक 'रोगों' में रामबाण औषधि का काम करता है ।

सफेद पेठा लोहा, कैल्शियम, सल्फर, फॉस्फोरस एवं विटामिन ए, बी, सी और ई से भरपूर है । विटामिन ई तो बहुत कम फलों, सब्जियों में मिलता है । इसमें प्रोटीन भी बहुत होता है । 100 ग्राम पेठे में 34 ग्राम प्रोटीन अत: पेठा परिपूर्ण है-खनिज पदार्थों, विटामिनों और प्रोटीन से, ज्यादातर फलों और सब्जियों में प्रोटीन नहीं होता है ।

पेठे की तासीर शीतल होती है इसलिए सर्दी जुकाम, साइनस की समस्या होने पर इसका जूस नहीं पीना चाहिए ।

1. हृदय रोगियों के लिए तो यह रामबाण है । पेठे का जूस पीने से अवरुद्ध धमनियां भी खुल जाती हैं और आप बाइपास व एन्जीयोप्लास्टी से भी बच सकते हैं । पेठे का जूस पीने से आमाशय ठीक से काम करता है । मधुमेह रोगियों के लिए रामबाण औषधि है ।

2. शरीर में कहीं भी जलन हो पेट में, आंतों में, छाती में, पेशाब में, हाथ पैरों में, सिर में पेठे का जूस सभी जलन शांत करता है ।

3. इसी प्रकार त्वचा के रोगों में जैसे फ़ोड़े फुन्सियों, मुहाँसों में पेठे का जूस पीना अति उत्तम है ।

4. यह 100 प्रतिशत क्षारीय है । रक्त के लिए श्रेष्ठ है । क्योंकि हमारा रक्त 80 प्रतिशत क्षारीय है इसके विपरीत हमारा भोजन पूर्णतया अम्लीय है । केवल फल और कच्ची सब्जियां ही क्षारीय होते हैं और उनमें भी जब नमक मिला देते हैं, तो कम हो जाता है । अपनी क्षारीयता के कारण ही पेठे का जूस अति उत्तम है । असंख्य रोगों का कारण भोजन की अम्लता होती है । भोजन जितना अम्लीय होगा, उतने ही रोग होंगे और जितना क्षारीय होगा उतने ही हम स्वस्थ रहेंगे । रक्त में अम्लता की मात्रा केवल 20 प्रतिशत ही होनी चाहिए ।

5. शरीर में किसी भी अंग में रक्तस्राव हो रहा हो जैसे नाक से नक्सीर, दातों में खून,

खूनी बवासीर, उल्टी में खून, गले से कफ में खून, अलसर से खून आना। ऐसी स्थिति में पेठे का जूस रामबाण है। ये सभी रोग पित्त व शरीर में गर्मी बढ़ जाने से होते हैं। पित्त रोगों में पेठे का जूस रामबाण है।

6. उच्च रक्तचाप, हृदय की गति बढ़ जाना-यह रोग भी बढ़ी हुई गर्मी से होते हैं और पेठे का जूस पीने से ठीक होते हैं। उच्च रक्तचाप में हृदय की पीड़ा तुरंत ठीक होती है। पेठे के रस में वे सभी गुण हैं, जो लौकी के रस में हैं।

7. मूत्र रोगों में, मूत्र प्रदाह, पथरी, पित्त की थैली की पथरी, गुर्दे की पथरी, मूत्राशय की पथरी सभी में इसका जूस लाभदायक है। पथरी पिघल कर निकल जाती है। यदि किसी अंग से रक्त बह रहा हो तो पेठे के रस में आंवला अथवा नींबू का रस मिलाकर पी सकते हैं।

8. पाचन संस्थान के लिए तो यह अति उत्तम है। यकृत आमाशय, अग्नाशय, छोटी आंत, बड़ी आंत, तिल्ली, पित्ताशय सभी के रोग दूर हो जाते हैं। फेटी लीवर बढ़ा हुआ लीवर, पीलिया भी ठीक होता है, कब्ज भी दूर होती है, भोजन नली की सूजन, जलन, हृदय की जलन दूर होती है।

9. इससे मोटापा भी बहुत जल्दी कम होता है, शरीर सुडौल बनता है। फास्फोरस व कैल्शियम की प्रचुरता से हड्डियां एवं दांत मजबूत होते हैं। अस्थि क्षीणता दूर होती है। दमे के रोगी के लिए भी पेठे का जूस लाभदायक है, दमा बिल्कुल समाप्त हो जाता है।

10. विटामिन बी की प्रचुरता से रक्त संचार ठीक होता है। रक्त की गुणवत्ता बढ़ती है। वीर्य गाढ़ा होता है। कमजोरी दूर होती है। और शरीर -बलिष्ट बनता है। महिलाओं में मासिक स्त्राव अधिक हो तो पेठे का जूस पीएं (परंतु माहवारी में नहीं) इससे स्वेत प्रकार भी ठीक होता है।

11. भोजन करने के बाद पेठे की मिठाई खाने से अम्लता, गैस दूर होती है, वैसे तो मिठाई खाने से अम्लता बढ़ती है परंतु इसकी मिठाई खाने से अम्लता कम होती है।

जिन लोगों को मिठाई खाने का बहुत शौक है वे अन्य मिठाईयां छोड़कर पेठे की मिठाई खाएं। मधुमेह के रोगी भी मिठाई पेठे को पानी से धोकर एक छोटा सा पीस खा सकते हैं। इसकी सब्जी भी बनती है। दक्षिणी भारत में इसका बहुत उपयोग होता है।

12. नित्य प्रतिदिन 200-250 मि.ली. पेठे का ज्यूस पीने से शरीर स्वस्थ रहता है। रोगों को दूर करने के लिए प्रतिदिन करीब 700 मि.ली. पेठे का जूस पिएं। जूस को घूंट-घूंट भरने के बाद जूस को मुंह में रहने दें और फिर गले में उतारें।

सफेद पेठे से बनी मिठाई व उसका जूस कई बीमारियों के लिए लाभदायक, उपयोगी होकर रामबाण औषधि का कार्य करती है।

माता थावच्चा

द्वारिका के सुप्रसिद्ध श्रेष्ठकुलों में माता थावच्चा का नाम बड़े आदर से लिया जाता है । पति की मृत्यु के अनन्तर थावच्चा ने अपने पुत्र (जो 'थावच्चा पुत्र' के नाम से प्रसिद्ध है) को सुयोग्य शिक्षकों से शिक्षा दिलवाई और उसका बत्तीस गुणवती कन्याओं के साथ विवाह किया ।

थावच्चा-पुत्र के हृदय में भगवान् श्री अरिष्टनेमि के उपदेश सुनकर वैराग्य जागृत हुआ और उसने मां से साधु-जीवन व्यतीत करने की आज्ञा मांगी । पहले तो उसने कुछ आनाकानी की, परंतु पुत्र के अटल निश्चय को देखकर उसने श्रीकृष्ण की सहायता से छत्र चेवर मुकुट आदि लेकर उन्हीं के सहयोग से पुत्र का निष्क्रमणोत्सव मनाया । इस त्यागमयी देवी ने भगवान् अरिष्टनेमि के चरणों में अपने पुत्र को सहर्ष समर्पित कर अपने त्याग का महान् आदर्श उपस्थित किया ।

साध्वी प्रभावती

प्रभावती कुशस्थल नरेश राजा प्रसेनजित की पुत्री थी । उसके अनिन्द्य रूप और स्त्रियोंचित गुणराशि की सर्वत्र प्रशंसा थी ।

कुमारी प्रभावती ने एक दिन किन्नरियों द्वारा प्रस्तुत एक गीत में वाराणसी के युवराज पार्श्व कुमार के पराक्रम, धर्मनिष्ठा और रूप सौन्दर्य की चर्चा सुनी तो उसने मन ही मन उन्हें अपना पति वरण कर लिया।

इसी बीच कलिंग नरेश यवनराज ने प्रभावती के रूप सौन्दर्य की चर्चा सुनी तो वह उसे पाने के लिये लालायित हो उठा । उसने प्रसेनजित को धमकी भरा सन्देश भेजा कि प्रभावती उसे दे दी जाय अन्यथा वह उसका सर्वनाश कर देगा ।

प्रसेनजित ने वाराणसी नरेश महाराज अश्वसेन से सहायता की याचना की और श्री पार्श्वकुमार वहां पहुंच गए । यवनराज ने बिना युद्ध किये ही पार्श्वकुमार के सामने घुटने टेक दिए और क्षमा की याचना की । वह प्रसेनजित से मित्रता स्थापित कर लौट गया और कुमारी की इच्छा के अनुसार प्रभावती का विवाह श्री पार्श्व कुमार से हो गया ।

प्रभावती सदैव अपने पति के धर्म-मार्ग में सहायिका रही और स्वयं भी, पति के धर्म-मार्ग का अनुसरण करती रही ।

तीर्थंङ्कर बन जाने के बाद श्री पार्श्वनाथ जी की प्रथम देशना सुनते ही प्रभावती अपनी सासु वामादेवी के साथ दीक्षित होकर आत्मकल्याण के लिये कठोर साधना करती हुई चौथे माहेन्द्र देवलोक में जा पहुंची ।

प्रश्नोत्तरी

(संकलन-मुनिराज श्री तारकरत्न विजयजी)

- एक वर्ष से दो वर्ष के बीच की आयु के मध्य कौनसे महिने में बच्चा कम रोता है ? (उत्तर-फरवरी में)
- एक अंग्रेज कब नमस्कार करता है ? (उत्तर-जब वह बोलना सीख जाता है ।)
- आप एक ऐसे कमरे में सोये हैं जिसमें तीन दरवाजे हैं, तीनों बन्द है। कमरे में एक अलमारी और बक्सा भी है, जिसमें टॉर्च और वह भी बन्द है, अचानक आपका मित्र दरवाजा बजाता है तो बताईये अपने मित्र को अन्दर लाने के लिये सबसे पहले आप क्या खोलेंगे ? (उत्तर-आँख खोलेंगे)
- 1 से 100 तक की संख्या का योग बताईये ? (उत्तर-पाँच हजार पचास)
- तीन मंदिर हैं तीनों मन्दिर में समान फूल चढ़ाना है, कितने फूल लें कि सभी मंदिरों में समान फूल-चढ़ाये जायें, शर्त यह है कि प्रथम मंदिर में फूल चढ़ाने के बाद बचे फूल दुगुने हो जाते हैं । बाहर आने पर एक भी फूल बचना नहीं चाहिये । (उत्तर-सात फूल लेंगे और चार-चार चढ़ायेंगे)
- प्रश्न यह है तो उत्तर क्या है ? (उत्तर-उत्तर दिशा है)
- खरीदने वाले पहनते नहीं पहनने वाले खरीदते नहीं ? (उत्तर -साधु का वेश और कफन)
- चार चॉकलेट के चार सरिके भाग करो तो कितने भाग होते हैं ? (उत्तर-चार)
- एक तीर्थंकर का नाम बताओ जिनके माता-पिता का नाम एक जैसा है । (उत्तर-श्रेयांसनाथ, विष्णु राजा, विष्णु माता)

सूत्र और उनके दूसरे नाम

जयवीयराय	-	प्रभु प्रार्थना के लिए
उवसग्गहरं	-	स्तवन, जप, स्तोत्र इत्यादि
सात लाख	-	84 लाख योनि के जीवों से क्षमा याचना के लिए
संसार दावानल	-	स्तुति, सज्झाय के लिए
वंदित्तु	-	श्रावक व्रत के अतिचार का प्रायश्चित्त के लिए
अढाइज्जेसु	-	मुनि भ. को वन्दन के लिए
अब्भुट्ठिओ	-	गुरु विनय करने के लिए
लघु शांति	-	शांति की उद्घोषणा
सकल तीर्थ	-	देवलोक आदि के तीर्थों की वेंदना
सकलार्हत्	-	24 तीर्थंकर की स्तुति एवं चैत्यवंदन
अजित शान्ति	-	स्तवन एवं स्मरण

आत्मविश्वास महान शक्ति

(श्री पारस गोलेच्छा)

मन से हारा हुआ व्यक्ति आमतौर से हारता ही है । पर जिसे अपनी जीत पर पूरा विश्वास है वह देखता है कि अपने में इतनी क्षमता का भंडार भरा पड़ा है जिसे कभी जाना-पहचाना नहीं गया था । वस्तुत: मनुष्य का मनोबल उसका उच्चस्तरीय वैभव है । उसी के सहारे लोग साधारण से असाधारण बनते हैं । आत्मविश्वासी कछुआ अस्थिर मनवाले खरगोश से बाजी मार ले गया, यह सर्व विदित है ।

अपने आप को दीन-हीन कमजोर माननेवालों का अनायास ही मनोबल गिरा रहता है । वह आज की अपेक्षा कल को अधिक अच्छा बनाने की बात ही सोच नहीं सकता । कहते हैं जो अपनी सहायता आप नहीं करता, उसकी सहायता ईश्वर भी नहीं करता । भ्रूण जब आवश्यक शक्ति अर्जित कर लेता है तो बाहर निकलने का प्रयत्न करता है । कठिनाइयों से जूझने का नाम ही 'प्रसव-पीड़ा' है । इसके बाद ही बालक का जन्म संभव होता है । यदि वह बाहर आने का पुरुषार्थ न अपनाये तो कदाचित उसे सही स्थिति में जन्म लेने का अवसर ही न मिले । आत्मविश्वास और पराक्रम की यह शिक्षा जन्म से पहले ही मिल चुकी होती है ।

ऐसी ही मन:स्थिति में स्वतंत्र निर्णय बन पड़ते हैं और अपनी स्थिति के अनुरूप अभीष्ट प्रयोजन सिद्ध किये जाते हैं । जिनमें इस मौलिक क्षमता का अभाव है वे दूसरों का मुंह ताकते रहते हैं कि अवसर आकर उन्हें स्वयं गोदी में उठाएगा । सफलता छप्पर फाड़कर आंगन में आ टपकेगी । ऐसी प्रतीक्षा में वे रहते हैं । ऐसी हत:प्रभ मनोभूमि वाले या तो निराश होकर भाग्यवादी बन जाते हैं या फिर शेखचिल्ली जैसे सपने देखते रहते हैं । जिनका वास्तविकता से कोई सरोकार नहीं होता ।

तार में बिजली होने पर बल्ब जलते हैं, पंखे घूमते हैं । पर यदि बिजली गुल हो जाए तो न पंखे चलते हैं और न बल्ब जलते हैं । आत्मविश्वास एक प्रकार की बिजली है, जो मनुष्यों की अनेक विशेषताओं को उभारना और प्रस्तुत क्षमताओं को जगाकर इस योग्य बनाता है कि व्यक्ति कुछ महत्वपूर्ण कार्य कर सके और अपने क्रिया-कलापों से अनेकों को प्रभावित करके उन्हें प्रतिभावान बनाने में समर्थ हो सके । समझना चाहिए कि मनुष्य में आधी क्षमता शरीर और कौशल के साथ जुड़ी होती है और शेष आधी आत्मविश्वास पर अवलंबित रहती है ।

आत्मविश्वास, आत्मगौरव को विकसित करता है और अपने अनुरूप मन:स्थिति एवं परिस्थिति बनाकर रहता है । भूमि की उर्वरता और बीज की सशक्तता मिलकर जिस अंकुर को उगाते हैं उसमें अपनी निज की सशक्तता भरी रहती है और उसके सहारे पौधा, झाड़ तथा वृक्ष बनता है । एक दिन का अंकुर ही विकास क्रम पर ठीक

प्रकार चलते हुए फूलों, फलों से लदा सघन छाया और विशाल कलेवर वाला वृक्ष बन जाता है । विकास का यही क्रम उन पर भी लागू होता है जो आत्मविश्वास के धनी होते हैं । वे न तो हेय परिस्थिति में पड़े रहते हैं और न सामान्यजनों जैसा गर्हित जीवन जीते हैं । यही है, आंतरिक सामर्थ्य का चमत्कार! आत्मविश्वास का सामर्थ्य! मनोबल की

गीत (विभाषए. जैन पारा)

तर्ज :- (कोई दिवाना कहता है कोई पागल समझता है-कवि कुमार विश्वास)

जिनशासन का सूरज है धरूकुल का सितारा है,
पार्वती मां का चेदा ये स्वरूपचंद का दुलारा है ।
गुरु उपहार में वरदान देते हैं सभी जन को,
ये दिल चाहे ये मन चाहे मधुकर नाम जपने को ।।
गुरु मुद्रा है अलबेली गुरु का नाम है प्यारा,
गुरु दर्शन जो हो जाए तो हो जाए यह भव पारा ।
गुरु के नाम का डंका बजे किर्ति बड़ी भारी,
गुरुवर तारदो हमको यही बिनती है बस म्हारी ।।
गुरु वैराक्यशाली हैं गुरु तो अग्रविहारी हैं,
गुरु किरपा जो मिल जाए तो हम सबकी बलिहारी है ।
गुरु ने नापली धरती कदम पर ताल दे देकर,
चरण कि रज़ जो मिल जाए उठा थाल भर भरकर ।।
गुरु उपकारी संघों पर परिषद प्राण से प्यारी,
परिषद पुंज गुरुवर कि महिमा हैं बड़ी न्यारी ।
गुरु नवकार के महामंत्र से सारे सुख दूर करे,
हैं संघों कि ये अभिलाषा गुरुवर साल हजारों जिए ।।
प्रतिष्ठाओं कि लड़ियां हैं पैदल संघ मनोहारी,
तपस्याओं कि झड़ियां हैं मधुकर नाम उपकारी ।
मधुकर नाम को गाएंगे अंतिम सांस ले लेकर,
ये 'अमृत' कि अभिलाषा 'निर्मल' का तराना हैं ।।
पेपराल के पूनमचंद ने पारा को संवारा है,
गुरु हमने तुम्हें भगवान और भगवान माना है ।
जयंतसेन सूरी नाम है मेरे इस भगवान का,
गुरु को शत् शत् गुरु को वंदन हो ।।

आचार्यश्री के चरणों में अपना स्वरचित काव्य पाठ समर्पित करते हुए ।

पू. आचार्य राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के 80 वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में उनके द्वारा विरचित ''नवकार करे भवपार'' प्रश्नावली के उत्तर

(प्रस्तुति-साध्वी प्रीतिदर्शनाश्रीजी आदि ठाणा-4)

(यहाँ पर सिर्फ उत्तर दिये जा रहे हैं)

प्र.1	उत्तर	पेज नं.		उत्तर	पेज नं.
	1). मंत्र	I	2).	नमो	5
	3). नवब्रह्मचर्यवाड़	31	4).	18	156
	5). नवब्रह्मचर्यवाड़ 69	86,12	6).	नमन	66
	7). कर्मशत्रु	72	8).	शल्योद्धार	93
	9). आयरियाणं	102	10).	साधु	129
प्र.2	1). आत्मा	III	2).	चतुर्थोपवास प्रोषधोपवास	X
	3). श्रद्धावान् लभते सौख्यम्	30	4).	नवकार	50
	5). अहं, अर्हं	61	6).	अलौकिकता	97
	7). ईशित्व	103	8).	मैं, अहंकारी	118
	9). सिद्ध पद	138	10).	प्रसन्न, प्रमोदपूर्ण	174
प्र.3	अ). सुजानमलजी	27/28	ब).	हरिभद्रसूरि	XI पूर्व पाठिका
	स). समवसरण	177	द).	वचनातिशय	112/113
	ध). पोतनपुर	141			

प्र.4	1). त्रिपृष्ठवासुदेव	दुर्योधन	शकुनि	सुभूम	159
	2). अष्टापद	सिद्धाचल	आबू	उज्जियन्तगिरि	सम्मेदशिखर 76
	3). नमोलोए सव्वसाहूणं	नमो उवज्झायाणं	नमो आयरियाणं	नमो अरिहंताणं	174-175
	4). ब. हल्दी का रंग	अ. दीपक का	कालिख	द. सोगन	स. किरमची का रंग
	5). पूर्णा	रिक्ता	जया	भद्रा	नन्दा 131/132
	6). साधु	उपाध्याय	आचार्य	सिद्ध	अरिहंत
	7). महिमा	गरिमा	लघिमा	प्राप्ति	प्राकाम्य
	8). श्रेणिक 24	तीर्थंकर 29	बीजाहार 100	शिवाजी 132	प्राण जाएंगे छूट 194
	9). चाणक्य 192	नववर्ण 185	वृद्धिगौरव 118	जिनदास 78	नाग दमणी 8
	10). अरिहंत	आचार्य	उपाध्याय	साधु	

प्र.5 1). इन्द्रिय विजय 2). गहरे पानी पैठ 3). अनादि निधन
4). नवकार में लय 5). जीवारावजी 6). माध्यस्थ परिजति
7). नाक्षरं मंत्र नास्ति 8). विनयासन 9). महामाहण
10). भव मंडप

प्र.6 1). छत्रीश गुण 2). अंजन चोर 3). अड़सठ अक्षर
4). सब पाप का नाश 5). पैंत्तीस अक्षर 6). सफेद
7). उवज्झायाणं 8). अगुरु लघुता 9). मैत्रीभावना
10). राखेंगार

प्र.7 1). अरिहंत 2). बारह 3). पंच महामंगल श्रुत स्कंध
4). सब पापों का नाश 5). आठ संपदा 6). अड़सठ
7). परमेष्ठी 8). नवपद 9). सुदर्शन सेठ
10). असिआउसा

प्र.8	उत्तर	पेज नम्बर
1).	सुजानमलजी ने गरुदेव से कहा	28
2).	चोर ने जिनदास सेठ को कहा	78
3).	नवकार कहता है हमसे	168
4).	साध्वी लक्ष्मणा ने मन से कहा	177
5).	नवकार कहता है हमसे	100
6).	लोग कहते हैं।	146
7).	उन्होंने (गुलाबचन्द भाई) ने अपने फैमेली डा. से कहा	34
8).	उन्होंने (कालिदास ने) पंडितजी के शिष्य से कहा	59
9).	आ. जयंतसेनसूरिजी ने श्रोताओं या (हमसे) कहा	198
10).	माँ ने सेठजी से कहा	99

प्र.9

1). अजर अमर 2). भरत 3). तप
4). नरक 5). नंदा 6). सुलस
7). नल 8). अधर्म 9). धन
10). सगर 11). नमि 12). बल
13). भुवन तिलक 14). विजय 15). सुमंगल

नवकार करे भवपार प्रश्नावली के परिणाम

प्रथम पुरुस्कार

1). श्रीमती निर्मिता अंकुर जैन, इन्दौर 98
2). श्रीमती संगीता सकलेचा, बड़ावदा 98
3). श्रीमती निर्मला संघवी, इन्दौर 98
4). श्रीमती नीता जैन, उज्जैन 98
5). श्रीमान रूपेश चपलौद, जावरा 97
6). श्रीमती प्रेमलता मेहता, दाहोद 97
7). श्रीमती पायल कोठारी, पारा 97

द्वितीय पुरुस्कार

1). श्रीमती विजया जैन, बड़नगर 96
2). श्रीमती मंजू उत्तमजी भंडारी, विजयवाड़ा 96
3). श्रीमती दिप्ती भण्डारी, रतलाम 95
4). श्रीमती रेणु चौधरी, बड़नगर 95
5). श्रेया चौपड़ा, रतलाम 95
6). संगीता खाबिया, बड़नगर 95
7). श्रीमती प्रमिला पगारिया, इन्दौर 95
8). श्रीमती प्रीति चंडालिया, धार 95
9). श्रीमती अनिता, सियाल 95
10). कु. शोभिता जैन, उज्जैन 95
11). कु. संतोष जैन, विजयवाड़ा 95
12). श्रीमती श्वेता, डुंगरवाला 95
13). संगीता बहन मोरख्या, बम्बई 95
14). श्रीमती उषा जैन 95
15). आदित्य धौका, धार 95

तृतीय पुरुस्कार

1). कु. मोनाली नाहर, बड़नगर 94
2). डॉ. अंगूरबाला सेठिया, निम्बाहेड़ा 94
3). मोनिका कर्नावट, पारा 94
4). श्रीमती सोनाली जैन, कुक्षी 94
5). जुली गालेछा, उज्जैन 94
6). श्रीमती श्वेता डोसी, कुक्षी 94
7). श्रीमती सुषमा पावेचा, धार 94
8). श्रीमती रानी श्रीश्रीमाल, धार 94
9). मीता ओरा, बड़नगर 94
10). श्रीमती चायना अभिषेक जैन, कुक्षी 94
11). श्रीमती इन्दु सकलेचा 94
12). श्री अभिषेक लुणावत, बामनिया 94
13). श्रीमती इन्दुबहन गोलेछा, बड़नगर 94
14). श्रीमती चेतना कोठारी, मेघनगर 94

प्रोत्साहन

1). श्रीमती साधना बाफना, बड़ावदा 93
2). श्रीमती चन्द्रकान्ता करनावट, इन्दौर 93
3). श्रीमती शीला चौपड़ा, बड़नगर 93
4). श्रीमती कविता कटारिया, खाचरौद 93
5). श्रीमती सुभद्रा सकलेचा, इन्दौर 93
6). श्रीमती प्रभा तातेड़, निसरपुर 93
7). श्रीमती कुसुम राजेन्द्र गिरीया, उज्जैन 93
8). श्रीमती प्रीति राजेन्द्रजी कोठारी, उज्जैन 93
9). श्रीमती स्नेहलता डूंगरवाल, इन्दौर 93
10). श्रीमती विजयबाला जैन, कुक्षी 92
11). श्रीमती अनीता जैन, राजगढ 92
12). श्रीमती वर्षा संघवी, मुम्बई 92
13). श्रीमती बेला भण्डारी, पारा 92
14). श्रीमती अर्चना जैन, राजगढ़ 92

15). श्रीमती रीना बाफना, राजगढ़ 92
16). श्रीमती मीना सकलेचा, बड़ावदा 92
17). श्री सुभाष जैन, बाग 92
18). श्रीमती अरूणा बांठीया, रींगनोद 92
19). श्रीमती अंगूरबाला मूणत, जावरा 92
20). श्रीमती सपना सोनगरा, इन्दौर 92
21). श्रीमती मंजुलाबेन डोसी, मुम्बई 91
22). श्रीमती सुशीला बाफना, रतलाम 91
23). श्रीमती रश्मि संघवी, जावरा 91
24). श्रीमती विनीता बांठीया, इन्दौर 91
25). श्रीमती शान्ताबहन हीरालाल, अहमदाबाद 91
26). श्रीमती पायल भावेश जैन, शिवगंज 91
27). श्रीमती श्वेता जैन, कुक्षी 91
28). श्रीमती प्रेमलता कोठारी, राजगढ़ 91
29). श्रीमती अंगूरबाला मेहता, महिदपुर 91
30). श्रीमती रूचि सुभाष जैन, रतलाम 90
31). श्रीमती विमला दिनेशभाई शाह, मुम्बई 91
32). श्रीमती शोभाबेन हर्षदभाई, अहमदाबाद 90
33). श्रीमती प्रतिभा पंकजजी कुंवर, नागदा 90
34). श्रीमती सुशीलाबाई तातेड़, जावरा 90
35). श्रीमती उज्या विजय शाह, बड़ौदा 90
36). श्रीमती शांति पति श्रीपाल मेहता, उज्जैन 90
37). श्रीमती सीमा जैन, पारा 91
38). श्रीमती रानू बाफना, लीमड़ी 91
39). श्रीमती निर्मला चौपड़ा, लीमड़ी 91
40). श्रीमती सरोज गिरीया, बड़नगर 90
41). श्रीमती उषा सियाल, धार 90
42). आयुषी भंडारी, थांदला 80
43). सुनयना जैन, धार 89
44). हेमा कोठारी, उज्जैन 92
45). श्रीमती साधना काग्रेशा, राजगढ़ 89
46). श्रीमती श्रुती भावनीया, धार 89
47). श्रीमती अनिला जैन, राजगढ़ 89
48). श्रीमती पुष्पा चौरड़िया, मंडगांव गोवा 89
49). श्रीमती मंजू सकलेचा, नलखेड़ा 89
50). श्रीमती मंजू बाफना, राजगढ़ 89
51). श्रीमती राखी मनोज भंडारी 89
52). श्रीमती प्रिया औरा, बड़नगर 88
53). रितु एस बम, लीमड़ी 88
54). श्रीमती सुधा लोढ़ा, उज्जैन 88
55). श्री विमल मेहता, जावरा 88
56). श्री नीलेश नाहटा, उज्जैन 88
57). श्रीमती निर्मला पगारिया, झाबुआ 88
58). कु. अर्पिता सकलेचा, बड़ावदा 88
59). श्रीमती भारती प्रकाश बोहरा, मुम्बई 88
60). श्रीमती भावना जैन, इन्दौर 87
61). श्रीमती उषा सिसोदिया, निम्बाहेड़ा 87
62). श्रीमती रीना सेठिया, निम्बाहेड़ा 87
63). श्रीमती विमला सिसोदिया, निम्बाहेड़ा 87
64). श्रीमती संगीता दुगड़, चापड़ा देवास 87
65). श्रीमती जीनल राहुल दोसी, मुम्बई 87
66). श्रीमती प्रीति खाबीया, बड़नगर 87
67). श्रीमती कान्ता बाफना, राजगढ़ 87
68). श्री परी जैन, धार 87
69). श्रीमती सेमी ओहरा, कुक्षी 87
70). कु. पूर्वी नवीनचन्द बागरेचा, खवासा 87
71). श्रीमती अलका कोठारी, बदनावर 87
72). श्रीमती रेखा दसेड़ा, जावरा 87
73). श्रीमती सीमा मेहता, जावरा 87
74). श्रीमती रंजना लुणावत, नागदा 87
75). श्रीमती नेहा लुणावत, बामनिया 87
76). श्रीमती पायलबेन सनीकुमारजी, दावणगेरी 87
77). श्रीमती सोनू चौपड़ा, बड़नगर 88
78). श्रीमती पिंकी कोठारी, पारा 87
79). श्रीमती सीमा जैन, रतलाम 87
80). श्रीमती चंदनबाला लुणावत, महिदपुर 87
81). श्रीकान्ता जैन, धार 87

ગુર્જર જૈન જ્યોત

સંપર્ક-સંપાદક : **સુરેશ એચ. સંઘવી**
૧૦૬, શિવશક્તિ, એ.બી.સી. ટાવર, દેવ ચકલા,
જૈન દેરાસર સામે, નડીઆદ. જી. ખેડા.
મો. ૯૭૨૪૫ ૭૧૦૭૯

રાજસ્થાન વિહાર યાત્રા

ઉગ્ર વિહારી સમર્થ યુગપ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારના પાવન પગલે નગરી.. નગરી... ધ્વારે... ધ્વારે હર્ષના તોરણીયાં

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના પરમોપકારી બહુદીક્ષાના દાનેશ્વરી લાખો ભક્તોના હૃદય સમ્રાટ, ઉગ્ર વિહારી સમર્થ યુગપ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારના પાવન પગલે નગરી... નગરી... ધ્વારે ધ્વારે હર્ષના તોરણીયાં રચાયાં હતાં અને ઢોલ ધમાકાથી રાજસ્થાન-જાલોર જિલ્લાની ધન્યધરા જય જયકારના બુલંદ નારાઓથી ગુંજી ઉઠી હતી.

પૂજ્યશ્રી સપરિવારના વિહારયાત્રાના ભાંડવપુરતીર્થની પધરામણી સુધીના સમાચાર એપ્રિલ ૨૦૧૬ ના શાશ્વત ધર્મ-ગુર્જર જૈન જ્યોત વિભાગમાં પ્રસિદ્ધ કરાયા હતા. ત્યારબાદ આગળ જોઈશું. તા. ૧૯ થી ૨૪ માર્ચ ૨૦૧૬ સુધી ભાંડવપુર તીર્થમાં સ્થીરતા કરી તા. ૨૫ મી માર્ચે વિહાર યાત્રાનો પ્રારંભ કર્યો હતો.

-: જીવાણા :-

સંવત ૨૦૭૨ ના ફાગણ વદ-૨ ને શુક્રવાર તા. ૨૫-૩-૨૦૧૬ ના રોજ સવારે સમર્થ યુગપ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારનો જીવાણા નગરે શ્રી સંઘ ધ્વારા ઢોલ-ધમાકા

સાથે ભવ્યાતિભવ્ય નગર પ્રવેશ કરાવાયો હતો. પ્રવેશ દરમ્યાન જીવાણાના ગ્રામીણ લોકો અને જૈન સમાજના શ્રધ્ધાવંત ભક્તો દ્વારા ભવ્ય સામૈયા સાથે સ્વાગત કરાયું હતું. પ્રવેશ બાદ પૂજ્યશ્રીએ માંગલિક અને પ્રવચન ફરમાવ્યું હતું. જીવાણાનગરમાં કેટલાય સમયથી શ્રાવકોના મનમાં રહેલી કડવાશોને દૂર કરાવી એકતા સ્થાપિત કરાવી હતી. અંદરો અંદરના ઝઘડા સમી જવાથી જીવાણા સંઘમાં આનંદ છવાઈ ગયો હતો. ત્યાં સહુએ પૂજ્યશ્રીના દર્શન-વંદન કરી ધન્યતા અનુભવી હતી અને આશિર્વાદ પ્રાપ્ત કર્યા હતા. માંગીલાલ પારખ, ભંવરલાલ, ડાહ્યાલાલ સહિત સમાજના ભક્તો ઉપસ્થિત રહ્યા હતા અને પૂજ્યશ્રીના સાનિધ્યમાં આખો દિવસ મંગલમય રીતે પસાર કર્યો હતો.

-: મેંગલવા :-

મુલચંદજી ડાગા ના જણાવ્યા મુજબ સંવત ૨૦૭૨ ના ફાગણ વદ-૩ ને શનિવાર તા. ૨૬-૩-૨૦૧૬ ના રોજ સવારે પૂજ્યશ્રી સપરિવારનો સામૈયા પૂર્વક ઢોલ-ધમાકા સાથે વાજતે ગાજતે મેંગલવા ખાતે ભવ્યાતિભવ્ય પ્રવેશ કરાવાયો હતો. પૂજ્યશ્રીના પ્રવચન સહિત સંઘલક્ષી કાર્યો સંપન્ન થયા હતા. પૂજ્યશ્રીના પાવન પગલે મેંગલવા સંઘમાં આનંદ મંગલ વર્તાયો હતો અને આખો દિવસ ધર્મમય બની ગયો હતો.

-: ચૌરાઉ :-

સંવત ૨૦૭૨ ના ફાગણ વદ-૪ ને રવિવાર તા. ૨૭-૩-૨૦૧૬ ના રોજ ચૌરાઉ નગરમાં પૂજ્યશ્રી સપરિવારની પધરામણી થવાની હોઈ ચૌરાઉ નગરના બજારોને શણગારવામાં આવી હતી. ઠેક-ઠેકાણે પૂજ્યશ્રીને આવકારતા બેનરો અને ધજા-પતાકા સાથે કમાનો ઉભી કરાઈ હતી. જિનાલયને રંગબેરંગી રોશની અને ફુલોની સજાવવટ દ્વારા શણગારવામાં આવ્યું હતું અને ચૌરાઉનગરને નવી દુલ્હન જેવો ઓપ અપાયો હતો.

ચૌરાઉનગરે સમર્થ, યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારની તા. ૨૭-૩-૨૦૧૬ ના રોજ પાવન પધરામણી થતાં ચૌરાઉ અને સમપવર્તી ગામો-નગરોના શ્રાવક-શ્રાવિકાઓમાં પ્રસન્નતાનો મહાસાગર લહેરાઈ ગયો હતો અને આનંદની લાગણી ફેલાઈ ગઈ હતી.

પૂજ્યશ્રીનો ભવ્યાતિભવ્ય સામૈયા સાથે નગર પ્રવેશ કરાવાયો હતો. ચૌરાઉ નગરના મંગલમય પ્રવેશ સમયે ઢોલ-ધમાકા અને બેન્ડવાજાની ધુન પર યુવક-યુવતીઓ નાચી-કુદી રહ્યાં હતાં, મહિલાઓ મંગલ ગીતો ગાઈ રહી હતી. બાલિકાઓ માથા પર કળશ ધારણ કરી સામૈયું કરી રહી હતી. પૂજ્યશ્રીના ભવ્યાતિભવ્ય ચૌરાઉ

નગરના આ પ્રવેશનો નજારો જોવા જૈનેતર પ્રજા પણ ઉમટી પડી હતી.

આ શોભાયાત્રા વાજતે-ગાજતે જિનાલયે પહોંચી હતી ત્યાં પૂજ્યશ્રી સપરિવારના સાનિધ્યમાં પ્રભુજીના દર્શન-વંદન કરી ધન્યતા અનુભવી હતી ત્યારબાદ આ શોભાયાત્રા ધર્મસભામાં પરિવર્તીત થઈ હતી. પૂજ્યશ્રીએ મંગળાચરણ સંભળાવી પ્રવચન ફરમાવ્યું હતું. પૂજ્યશ્રીએ તેમના પ્રવચનમાં ફરમાવ્યું હતું કે ભગવાનની ભક્તિથી જીવ માત્રનું કલ્યાણ થાય છે. માણસ પાસે વિશાળ બુધ્ધિ છે. જેનો સદ્‌પયોગ કરી માણસ લાંબી ઉંચાઈઓને સહજતાથી પાર કરી શકે છે. પ્રેમથી માણસ દરેક મુશ્કીલને આસાન બનાવી શકે છે. જીવમાત્રના કલ્યાણની ભાવના રાખી હિંસાથી દુર રહેવાની શિખામણ આપી હતી.

ચૌરાઉ સંઘની આગ્રહભરી વિનંતીનો સ્વીકાર કરી બે દિવસની સ્થિરતા કરી હતી અને સંઘના બાકી કામોને આગળ ધપાવવા પ્રેરણા કરી હતી.

-: સાયલા :-

ચૌરાઉથી વિહાર કરી પૂજ્યશ્રી આદિઠાણાએ સંવત ૨૦૭૨ ના ફાગણ વદ પ્ર-૬ ને મંગળવાર તા. ૨૯-૩-૨૦૧૬ ના રોજ સવારે ભવ્યાતિભવ્ય સામૈયા સાથે ધામધૂમક પૂર્વક સાયલા નગરે પ્રવેશ કર્યો હતો. પૂજ્યશ્રી સપરિવારની પાવન પધરામણીથી સંઘમાં આનંદોલ્લાસ પ્રવર્તી ગયો હતો. શ્રી સંઘની આગ્રહભરી વિનંતીનો સ્વીકાર કરી પૂજ્યશ્રીએ બે દિવસની સ્થિરતા કરી હતી.

-: ઉમ્મેદાબાદ - ગોલ :-

સંવત ૨૦૭૨ ફાગણ વદ-૭ ને ગુરૂવાર તા. ૩૧-૩-૨૦૧૬ ના રોજ સવારે વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ઉમ્મેદાબાદ ગોલ ખાતે પૂજ્યશ્રી સપરિવારે પ્રવેશ કર્યો હતો. પૂજ્યશ્રીની પ્રેરણાથી ગુરૂભક્ત પરિવારે ગુરૂ મંદિર માટે જમીન પ્રદાન કરી હતી સાંજે વિહાર કરી પૂજ્ય શ્રી સપરિવારે વાજતે-ગાજતે આલાસણ ખાતે પ્રવેશ કર્યો હતો અને રાત્રિ સ્થિરતા કરી હતી.

ગોલ પ્રવેશ તસ્વીરી ઝલક

-: રેવતડા :-

આજે રેવતડા વાસીઓ અને આસપાસના ગામોના શ્રાવક-શ્રાવિકાઓના હૈયાં હેલે ચડ્યાં હતાં. સંવત ૨૦૭૨ ના ફાગણ વદ-૮ ને શુક્રવાર તા. ૧-૪-૨૦૧૬ ના રોજ સવારે આલાસણથી વિહાર કરી પૂજ્યશ્રી સપરિવારે રેવતડાનગરે પધરામણી કરી હતી. રેવતડા સંઘ દ્વારા ઢોલ-ધમાકા, બેન્ડવાજા સાથે કીર્તીમાન સામૈયા સાથે પૂજ્યશ્રીનો ભવ્યાતિભવ્ય નગર પ્રવેશ કરાવાયો હતો. પૂજ્યશ્રીના પાવન પગલે પુરા ગામને નવી દુલ્હન જેમ સજાવવામાં આવ્યું હતું. અને જિનેન્દ્ર ભક્તિ બે દિવસીય મહોત્સવનું આયોજન કરાયું હતું. તે સિવાય શાસન પ્રભાવક વિભિન્ન કાર્યક્રમોનું આયોજન કરાયું હતું. રેવતડા જૈન સંઘ દ્વારા નિર્માણાધિન જિનાલયનું પૂજ્યશ્રીએ તેઓશ્રીના સુશિષ્યો સાથે અવલોકન કર્યું હતું. નિર્માણાધિન જિનાલયના ગર્ભગૃહ ઘુમ્મટ વિગેરેનું અવલોકન કરી સંઘના સદસ્યોની શંકાનું સમાધાન કર્યું હતું.

ત્રણ દિવસની સ્થિરતા દરમ્યાન પૂજ્યશ્રીએ પ્રવચન ફરમાવ્યા હતાં રવિવારના પ્રવચનમાં પૂજ્યશ્રીએ ફરમાવ્યું હતું કે મનુષ્યની શોભા સદ્વ્યવહારથી થાય છે. મનુષ્ય જીવનમાં કેટલીય કઠીનાઈઓ છે. પરંતુ મનુષ્ય સુખ અને દુઃખ વિગેરે પરિસ્થિતિઓમાં સમભાવ રાખે છે એવા લોકોને કોઈપણ કષ્ટની અનુભૂતિ થતી નથી. વધુમાં કહ્યું કે મનુષ્યે અર્જિત ધનનો ઉપયોગ ધાર્મિક કાર્યોમાં કરવો જોઈએ. જે પ્રકારે કુવામાંથી પાણી ઉલેછવા છતાં કુવો ફરી ભરાઈ જાય છે એ પ્રકારે સંચિત ધનનો ઉપયોગ ધાર્મિક કાર્યોમાં કરવાથી ધનની વૃધ્ધિ થાય છે.

જિનેન્દ્ર ભક્તિ મહોત્સવ દરમ્યાન રવિવારના રોજ બપોરે શ્રી આદિનાથ જૈન મંદિરમાં રાજેન્દ્રસૂરિ અષ્ટપ્રકારી મહાપૂજન ભણાવાયું હતું જેમાં સંગીતની ધૂન પર પ્રભુજીની આરાધના કરાઈ હતી જેમાં મોટી સંખ્યામાં શ્રાવક-શ્રાવિકાઓએ લાભ લીધો હતો.

પૂજ્યશ્રીની સ્થિરતા દરમ્યાન સરપંચ જોગરાજ જૈન, જીતમલ સાંકાડીયા, નેમીચંદ સંઘવી, હનવન્તરાજ હીરાણી, ભંવરલાલ વેદમુથા, કાંતિલાલ, દેવીચંદ,

મહાવીર હીરાણી, સુમેરમલ મંડોત, મદનલાલ સંઘવી, બાબુલાલ મુથા, અચલચંદ જૈન, ફતેહરાજ હીરાણી, હુકમીચંદ લુક્કડ, જ્યંતીલાલ મંડોત, દિલીપ મેદમુથા, રાજેન્દ્ર હીરાણી સહિત સમાજના ગણમાન્ય લોકો ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

રેવતડા પ્રવેશ તસ્વીરી ઝલક

સંવત ૨૦૭૨ ના ફાગણ વદ-૧૨ સોમવાર તા. ૪-૪-૧૬... બાકરાગામ
સંવત ૨૦૭૨ ના ફાગણ વદ-૧૩ મંગળવાર તા. ૫-૪-૧૬... મોદરા
સંવત ૨૦૭૨ ના ફાગણ વદ-૧૪ બુધવાર તા. ૬-૪-૧૬... ભાગલ
સંવત ૨૦૭૨ ના ફાગણ વદ-૧૫ ગુરૂવાર તા. ૭-૪-૧૬... નરતા વિગેરે
ગામોમાં ધર્મ પ્રભાવના કરી ભીનમાલ નગરે પ્રવેશ

-: ભીનમાલ :-

સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ મુનિમંડળ અને પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોએ તેમના વિહાર ક્રમમાં વિહાર કરતા કરતા સંવત ૨૦૭૨ ના ચૈત્ર સુદ-૧ ને શુક્રવારના રોજ ભીનમાલ નગરે પધરામણી કરી હતી. પૂજ્યશ્રીની ભીનમાલ નગરે પધરામણી થવાની હોઈ ગુરૂભક્તો દેશાવરથી ભીનમાલ દોડી આવ્યા હતા. ભીનમાલ

નગરમાં પૂજ્યશ્રીનું ભવ્યાતિભવ્ય સામૈયા સાથે સ્વાગત કરાયું હતું. પૂજ્યશ્રીના સ્વાગતમાં ગુરૂભક્તોએ પલક-પાવડા બીછાવી શહેરના જુંજાણી બસ સ્ટેન્ડ પાસેથી પૂજ્યશ્રી સપરિવારનું વાજતે-ગાજતે ભવ્યાતિભવ્ય સ્વાગત કર્યું હતું. અને સમાજની બહેનોએ ગહુલી કરી મંગલ ગીતો ગાયા હતાં ત્યારબાદ ઉત્સાહી માહોલમાં નાચતા કુદતા ભક્તો સાથે શોભાયાત્રાએ પ્રસ્થાન કર્યું હતું. આ શોભાયાત્રા હોસ્પીટલ રોડ, ચારભૂજા રોડ, વડા ચૌટા, ગણેશ ચોક, વરાહશ્યામ મંદિર, ભંડારી સ્ટ્રીટ, પીપલી ચોક થઈ શ્રી મહાવીર સ્વામી જિનાલયે પહોંચી હતી ત્યાં પ્રભુજીના દર્શન-વંદન કરી આ શોભાયાત્રા ધર્મસભાના રૂપમાં પરિવર્તીત થઈ હતી. ત્યાં પૂજ્યશ્રીએ પ્રવચન ફરમાવ્યું હતું પૂજ્યશ્રીએ શ્રધ્ધાના મહત્વ વિશે સમજાવતાં કહ્યું હતું કે આપણે દેવ ગુરૂ અને ધર્મ પ્રતિ શ્રધ્ધા રાખવી જોઈએ કોઈપણ કાર્ય શ્રધ્ધા વિના સફળ થતું નથી. શ્રધ્ધાથી જ માણસનો ખરાબમાં ખરાબ સમય પણ સારા સમયમાં બદલાઈ જાય છે. દેવ, ગુરૂ, ધર્મના બધા જ કાર્ય શ્રધ્ધાપૂર્વક કરવા જોઈએ પૂજ્યશ્રીએ કહ્યું કે મનુષ્ય જીવનમાં શ્રધ્ધા સંજીવનીનું કામ કરે છે.

મીડીયા પ્રભારી માણકલાલ ભંડારીએ જણાવ્યું હતું કે પૂજ્યશ્રી આગામી બે દિવસ સુધી મહાવીર સ્વામી મંદિરમાં સ્થિરતા કરશે અને પ્રવચન આપશે સોમવારના રોજ ૭૨ જિનાલ.માં પ્રવેશ કરશે આ પ્રસંગે કીલચંદ મહેતા, ધેવરચંદ શેઠ, ભોજરાજ શાહ, હીરાલાલ બાફના, મફતલાલ શાહ, મદનલાલ, ચંપાલાલ, સરેશ, બાબુલાલ, લલીત, વિનોદ, રાજેશ વિગેરે અગ્રણીઓ ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

ભીનમાલ નગરના મહાવીર સ્વામી જૈન મંદિરમાં બીજા દિવસે પ્રવચન આપતાં પૂજ્યશ્રીએ કહ્યું કે મનુષ્ય જીવનમાં ચાર વસ્તુઓ દુર્લભ હોય છે. જેમાં જન્મ, ધર્મશ્રવણ, ધર્મશ્રધ્ધા અને સંયમજીવન આ ચાર વસ્તુઓ છે. વધુમાં કહ્યું કે મનુષ્ય જીવન પ્રાપ્ત કર્યા વિના કોઈપણ આત્મા આજ સુધી મોક્ષ પ્રાપ્ત કરી શકી નથી. તીર્થંકરોને પણ અંતિમભવમાં માનવ જીવન ધારણ કરવું જ પડે છે. માનવ જીવનમાં ધર્મ-આરાધનાનો અવસર મળે છે.

ધર્મ શ્રવણથી જ આપણને હિત-અહિત, પુણ્ય-પાપ, સાચા-ખોટા નું જ્ઞાન થાય છે. ધર્મશ્રવણ દ્વારા જ મનુષ્ય પોતાના જીવનમાં રાગ-દ્વેષ થી મુક્તિ પ્રાપ્ત કરી શકે છે. જે રીતે તનની શુધ્ધિ માટે પાણી જોઈએ એ પ્રકારે આત્માની શુધ્ધિ માટે જીનવાણી પરમ આવશ્યક છે. ધર્મ પ્રત્યે શ્રધ્ધા રાખવાવાળા જ કર્મથી મુક્ત થઈ શકે છે. માત્ર માર્ગની જાણકારી હોવાથી મંજીલ મળતી નથી એ જ રીતે ધર્મ પ્રત્યે શ્રધ્ધા નહીં હોવાથી મોક્ષ મળતો નથી. ભોગથી સંસાર વધે છે અને ત્યાગથી સંસારનું ચક્ર સમાપ્ત થાય છે. સંસારના નશ્વર સુખોનો ત્યાગ કરવાવાળા જ વૈરાગી બને છે ત્યારબાદ યુવા મુનિરાજ શ્રી નિપૂણરત્ન વિજયજી મ.સા. એ સંસ્કાર અને સંસ્કૃતિ પર ચોટદાર પ્રવચન આપ્યું હતું. મહાવીર જિનાલયમાં શનિવારના રોજ પૂજ્યશ્રીના

દર્શન-વંદન માટે શ્રધ્ધાળુ ભક્તોના ટોળે-ટોલાં ઉમટ્યા હતા. આસપાસના ગામો કસ્બા અને ગુજરાતના થરાદ, લવાણા, લાખણી, વાસણા, ડીસા વિગેરે કેટલાય સંઘના સદસ્યોએ પૂજ્યશ્રીના દર્શન-વંદન કરી ધન્યતા અનુભવી હતી.

આના પહેલાં પૂજ્યશ્રીએ મુનિમંડળ સહિત રાણીવાડા રોડ સ્થિત કોઠારી કીર્તી સ્થંભ અને શંખેશ્વર મંદિરના દર્શન-વંદન કર્યા હતા.

શ્રી લક્ષ્મી વલ્લભ પાર્શ્વનાથ ૭૨ જિનાલયમાં પૂજ્યશ્રી સપરિવારનો ભવ્યાતિભવ્ય પ્રવેશ

સંવત ૨૦૭૨ ના ચૈત્ર સુદ-૫ ને સોમવાર તા. ૧૧-૪-૨૦૧૬ ના રોજ સવારે ૭૨ જિનાલયના પ્રતિષ્ઠાચાર્ય, સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ મુનિમંડળ અને પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોનો ઢોલ-ધમાકા અને બેન્ડવાજાની સુરાવલીઓ સાથે ભવ્યાતિભવ્ય સામૈયા સાથે ૭૨ જિનાલયના વિશાળ પરિસરમાં ઉત્સાહભેર પ્રવેશ કરાવાયો હતો. ઓળી આરાધના, મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન-૪ અને ચાતુર્માસ ઘોષણાના કાર્યક્રમોને સંપન્ન કરાવવા પધરામણી થતાં સ્થાનિક ગુરૂભક્તોમાં અપાર ઉત્સાહ વ્યાપી ગયો હતો. પૂજ્યશ્રીના પ્રવેશના ત્રણ દિવસ પહેલાથી સંઘવી સુમેરમલજી હંજારીમલજી લુંકડ પરિવાર દ્વારા પૂજ્યશ્રીના પ્રવેશની જાણકારી આપી દેશાવર રહેતા સમાજજનોને પૂજ્યશ્રીના પ્રવેશમાં પધારવા આમંત્રિત કરાયા હતા. પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં ઉક્ત કાર્યક્રમો સંપન્ન થવાના હોઈ જિનાલય તેમજ ૭૨ જિનાલય સંકુલને નવી દુલ્હનની જેમ શણગારવામાં આવ્યું હતું.

૭૨ જિનાલયમાં પૂજ્યશ્રીએ અરિહંતના ગુણો પર પ્રકાશ પાથરતાં જણાવ્યું હતું કે ગુરૂવારના રોજથી નવપદ ઓળી આરાધનાનો પ્રારંભ થશે જેમાં સેંકડો આરાધકો તપશ્ચર્યા કરશે કાર્યક્રમના અંતર્ગત આગામી નવ દિવસ બે ટાઈમ પ્રતિક્રમણ, ત્રણ ટાઈમ દેવ વંદન, પૂજા, પ્રવચન શ્રવણ, સંધ્યા ભક્તિ આદિ વિધિ સાથે સંપન્ન થશે.

નવપદ ઓળી આરાધનાના પ્રથમ દિવસે પૂજ્યશ્રીએ અરિહંતના ગુણો પર વિસ્તારથી પ્રકાશ પાથરતાં જણાવ્યું કે જેમને રાગ-દ્વેષ ને જીતી લીધા એમનું જીવન ધન્ય છે. પૂજ્યશ્રીએ કહ્યું કે આત્મકલ્યાણ માટે નવપદ ઓળી આરાધના જરૂરી છે તથા ભગવાન મહાવીરે બતાવેલા માર્ગ પર ચાલવાથી જ જીવન સફળ થઈ શકે છે નવપદ આરાધના આત્માને જાગૃતિના માર્ગ પર લઈ જાય છે. મનુષ્ય અજ્ઞાન અવસ્થામાં નાના પ્રકારના કર્મો બાંધી પોતાના ભવ ભ્રમણ ને વધારી રહ્યો છે. મનુષ્ય ધર્મના રસ્તા પર ચાલી શિવ બની શકે છે.

નાગદા પરિષદ અને શ્રી સંઘના રાષ્ટ્રીય પ્રચારક બ્રજેશ બોહરા દ્વારા સમાચાર પ્રાપ્ત

સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય
શ્વે.મૂ. શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના સફળ સુકાની...
શ્રી વાઘજીભાઈ વોરાની નેત્રદિપક કામગીરીથી
સમાજમાં ઉત્સાહનું મોજું.. !

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના જ નહીં ભારતીય સંસ્કૃતિના આધારસ્થંભ, સમગ્ર ભારતના જૈન સમાજ અને જૈનેતરોમાં જેમનો પ્રભાવ પથરાઈ રહ્યો છે. જેઓશ્રીના વ્યક્તિત્વની પ્રભાવકતા સમગ્ર ભારતીય સંસ્કૃતિની આન-બાન અને શાનની ગરિમામાં વધારો કરે છે. જેઓશ્રીએ ગુજરાત, મધ્યપ્રદેશ, રાજસ્થાન, ઉત્તર ભારત અને દક્ષિણ ભારતમાં અનેક જૈન મંદિરો, ઉપાશ્રયો, ગુરૂ મંદિરો, સ્કુલો, દવાખાના જેવી સેવાકીય, ધાર્મિક અને માનવતાવાદી પ્રવૃત્તિઓ માટે પ્રેરણા આપી સમાજમાં નવચેતના લાવી છે. સમાજપયોગી કાર્યો દ્વારા આર્થિક રીતે સામાન્ય સ્થિતિ ધરાવતા પરિવારોને મદદરૂપ બની તેમની જરૂરિયાત પુરી પાડવાનું ભગીરથ કામ કરી રહ્યા છે. દેશના ટોચના રાજકીય નેતાઓથી લઈ અગ્રણી ઉદ્યોગપતિઓ, સમાજના શ્રેષ્ઠીઓ જેઓશ્રીના આશિર્વાદ પ્રાપ્ત કરી આર્થિક, રાજકીય, સામાજિક અને ધર્મક્ષેત્રે અગ્રેસર બન્યા છે. શાસન-સમાજ અને ગચ્છની પ્રગતિ માટે છેલ્લા ૬૨ વર્ષની ઝઝુમી એક ચારિત્રવાન, તંદુરસ્ત વિરાટ સમાજ ખડો કર્યો છે એવા સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. એ એમની કોઠા સુઝથી સમાજમાં રોશની ફેલાવી શકે તેવા મહાનુભાવોની અધ્યક્ષપદે નિમણૂંક કરી સમાજના વિકાસ માટે સુકાન સોંપ્યુ છે. ગગાબાપુ, ચૈતન્યજી કશ્યપ કિશોરમલજી ખીમાવત વિગેરેએ સમાજની ઉત્તમ સેવા કરી સફળ સુકાની તરીકે પુરવાર થયા હતા. કિશોરમલજી ખીમાવતની અણધારી વિદાયથી રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષનું પદ ખાલી પડ્યું હતું. તે પદ માટે દીર્ઘદ્રષ્ટા પૂજ્યશ્રીએ શ્રી વાઘજીભાઈ બબલદાસ વોરાની તા. ૧૫-૪-૨૦૧૪ ના રોજ સુરત ખાતે હુંગામી ધોરણે વરણી કરી હતી.

પ્રતિભાશાળી, મુત્સદી અને વિરાટ વ્યક્તિત્વ ધરાવતા મોટાભાઈના નામે પ્રચલિત શ્રી વાઘજીભાઈ વોરા થરાદ જૈન સમાજ સાથે સાથે અન્ય સમાજોમાં પણ નામના અને ચાહના ધરાવે છે. શાસન-સમાજ અને ગચ્છની ઉન્નતિ થાય તેવી શ્રધ્ધા સાથે બિજાપુર ચાતુર્માસ દરમ્યાન સંઘ સંમેલનમાં શ્રી વાઘજીભાઈ વોરાની ત્રણ વર્ષ માટે રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ તરીકે વરણી કરી હતી. શ્રી વાઘજીભાઈ વોરા પણ આવી પડેલ જવાબદારીને સફળ બનાવવા સક્રીય બની ગયા હતા. અને વર્ષ દરમ્યાન પૂજ્યશ્રીના આજ્ઞાનુવર્તી સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોની જે સ્થળે સ્થિરતા હોય ત્યાં

જઈ ખબર-અંતર પુછવા જેનો ખપ હોય તેની વ્યવસ્થા કરવી. દરેક રાજ્યોના ત્રિસ્તુતિક સંઘોની મુલાકાત લેવી, દરેક સંઘોના અને પરિષદોના અગ્રણીઓ સાથે પરિચય કરવો. સંઘ અને પરિષદમાં નવી ચેતના લાવવી વિગેરે કાર્યો દ્વારા સમાજમાં એકતા અને આત્મિકતા પ્રસ્થાપિત કરવાના ભગીરથ પ્રયાશને અત્યંત સફળતા સાંપડી હતી.

તાજેતરમાં તા. ૧-૪-૨૦૧૬ ના રોજથી તા. ૪-૪-૨૦૧૬ ના રોજ દરમ્યાન માળવા નો (દોહરો) પ્રવાસ ખેડવા માટેનું આયોજન કરાયું હતું જેમાં રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ શ્રી વાઘજીભાઈ વોરા, રાષ્ટ્રીય સંગઠન મંત્રી શ્રી રમેશભાઈ વોહેરા નડીઆદ અને ગુજરાત પરિષદ અધ્યક્ષ શ્રી અરવિંદભાઈ દેસાઈએ તા. ૧-૪-૨૦૧૬ ના રોજ પ્રથમ પારા શ્રી જૈન સંઘની મુલાકાત લઈ માળવા પ્રવાસનો શુભારંભ કર્યો હતો. તા. ૧-૪-૨૦૧૬ પારા, જાંબુઆ, રાણાપુર, જોબટ, લક્ષ્મણીજી, અલીરાજપુર તાલનપુર તા. ૨-૪-૧૬ ના રોજ કુક્ષી બાગ ટાંડા, રીંગણોદ, રાજગઢ તા. ૩-૪-૨૦૧૬ ના રોજ બદનાવર, બડનગર, રતલામ, ઉજૈન તા. ૪-૪-૧૬ ના રોજ ખાચરોદ, જાવરા, દલોદા મંદશોર વિગેરે શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘોના આંગણે પધરામણી કરી હતી. રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષના આ આગમનથી દરેક સંઘોમાં પ્રસન્નતાનો મહાસાગર છલકાઈ ગયો હતો અને હર્ષની હેલી વરસી ગઈ હતી.

દરેક સંઘના આગેવાનો અને પરિષદના નિષ્ઠાવાન કાર્યકરોએ અતિથિ સ્વાગત માટે પૂર્વ તૈયારીઓ કરી હતી અને ઉમળકાભેર અતિથિ સ્વીકાર કર્યો હતો. રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ શ્રી વાઘજીભાઈ વોરા, રાષ્ટ્રીય સંગઠની મંત્રી શ્રી રમેશભાઈ વોહેરા અને ગુજરાત પરિષદ અધ્યક્ષ શ્રી અરવિંદભાઈ દેસાઈના આગમનને વધાવી લઈ બહુમાન કાર્યક્રમો યોજાયા હતા. ખાસ વિશેષતા તો એ છે કે અતિથિ સ્વીકારમાં અતિથિઓના આગમન સમય મુજબ સવારની નવકારથી બપોરનું જમણ અને સાંજના ચૌવિહારનું આયોજન સંઘ સ્વામિવાત્સલ્ય રૂપે કરાયું હતું. સકળ સંઘ અને અતિથિઓ એ સાથે પ્રીતી ભોજન કરી આત્મિયતાનો ધોધ વરસાવ્યો હતો. આ પ્રવાસ દરમ્યાન રાષ્ટ્રીય મહામંત્રી શ્રી સુરેન્દ્રજી લોઢા સહિત શ્રી રમેશજી ઘાડીવાલ, શ્રી પારસજી જૈન, શ્રી સુરેશજી તાંતેડ, શ્રી અશોકજી શ્રી શ્રીમાલ, શ્રી રાજેન્દ્રજી જૈન, શ્રી મુકેશજી જૈન, શ્રી શશાંકજી લુણાવત, શ્રી શાંતિલાલજી ગોખરૂ, શ્રી ઓરાજી વિગેરે મહાનુભાવો સાથે રહ્યા હતા.

તા. ૩-૪-૨૦૧૬ ના રોજની રતલામની બેઠકમાં જ્યારે સમાજના બે મહારથીઓનું મિલન થયું ત્યારે ઉત્સાહનો અદકેરો માહોલ સર્જાઈ ગયો હતો. રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ શ્રી વાઘજીભાઈ વોરા અને પૂર્વ અધ્યક્ષ શ્રી ચેતનજી કાશ્યપના આત્મસભર

મિલને ઉપસ્થિત સહુને ભાવ વિભોર બનાવી દીધા હતા. આ બન્ને મહારથીઓના કદ મુજબનો ફુલહાર વિશેષ રૂપમાં તૈયાર કરાવાયો હતો અને ભવ્ય રૂપે સ્વાગત કરી ફુલહાર પરિધાન કરાવાયો હતો. શ્રી ચેતનજી કશ્યપ, શ્રી સુરેન્દ્રજી લોઢા, શ્રી અરવિંદભાઈ દેસાઈ, શ્રી રમેશભાઈ વોહેરા નડીઆદ, શ્રી શાંતિલાલજી દસેડા, શ્રી સુરેશજી તાંતેડ, શ્રી રમેશજી ઘાડીવાલ, શ્રી સુશીલજી ગીરીયા, શ્રી રાજેન્દ્રજી દસાડા, શ્રી મુકેશજી જૈન જાબુઆ, શ્રી ચિરાગજી ભંસાલી, શ્રી શશાંકજી લુણાવત, શ્રી શાંતિલાલજી ગોખરૂ, શ્રી શૈલેષજી ઓરા વિગેરે મહાનુભાવોનું સ્વાગત રતલામ સંઘ સચિવ શ્રી અનોખીલાલજી તેમજ મહિલા પરિષદ અધ્યક્ષ દ્વારા કરાયું હતું. જ્યારે રાષ્ટ્રીય સંઘ અધ્યક્ષનું સ્વાગત રતલામ સંઘ અધ્યક્ષ શ્રી ઓ.સી. જૈન દ્વારા કરાયું હતું.

અહીં શ્રી ચેતનજી કાશ્યપે તેમના ઉદ્‌બોધનમાં જણાવ્યું હતું કે રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષનોપ્રવાસ માપદંડ માટે નથી. સંગઠન અને સંઘની રચનાને કેવી રીતે આગળ વધારી સ્થાપિત કરવી તેનો આ હેતુ છે.

શ્રી યતિન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. એ ગગલભાઈ શેઠ ના નેતૃત્વમાં રાષ્ટ્રીય સ્વરૂપ પ્રદાન કર્યું ગતું. ત્યારબાદ અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદની સ્થાપના થઈ આ બન્નેમાં રતલામનું મોટું યોગદાન રહેલ છે.

અહી શ્રી સુરેન્દ્રજી લોઢા અને શ્રી રમેશજી ઘાડીવાલે પણ તેમના વિચારો રજુ કર્યા હતાં.

શ્રી વાઘજીભાઈ વોરા એ તેમના ઉદ્‌બોધનમાં કહ્યું હતું કે હું અને મારો સંઘ સૌભાગ્યશાળી છીએ કે આ સંઘના શ્રી ચેતનજી કાશ્યપ સદસ્ય છે. હું અંહિના સમસ્ત વરીષ્ઠોને નમન કરૂં છું. મારો આ દોહરો નથી નવી રોશની જાગૃત કરવાનો દોર છે. સંઘ કાર્ય ગતિઓથી ચાલે છે. ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘમાં રતલામનું નામ સર્વોપરી છે. રતલામે જ્ઞાન નો દીપક પ્રગટાવ્યો છે. રતલામ નગરમાં પૂજ્ય યતિન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. ને પિતામ્બર વિજેતાની પદવી આપવામાં આવી હતી. રતલામ સંઘ પ્રત્યેક કાર્યોમાં અગ્રેસર રહ્યો છે. શ્રી ચેતનજી પાસે કાર્ય શક્તિ છે ચિંતન છે. સમસ્ત સંઘનો પ્રેમ ચેતનજી સાથે છે તે માટે તેમને કોઈની નજર લાગી શકે તેમ નથી. હું રતલામ શ્રી સંઘથી પ્રભાવિત છું ત્રિસ્તુતિક સંઘ નું મસ્તક સદૈવ ઉંચુ રહેશે. હું માળવાની ગુરૂ ભક્તિને અને અતિથિ ભક્તિને નમન કરૂં છું.

ઉલ્લેખનીય છે કે માળવાના દરેક શ્રી જૈન સંઘોમાં શ્રી રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ શ્રી વાઘજીભાઈ વોરા ની કાર્યશક્તિ અને તેમની પ્રભાવશાળી વ્યક્તિત્વની મુક મોઢે જે પ્રશંસા દરેક સંઘના અગ્રણીઓએ કરી તેનો વિસ્તૃત ઉલ્લેખ ગુર્જર જૈન જ્યોતના મર્યાદિત પાનામાં જગ્યા સંકોચના કારણે નથી કરાયો તે બદલ ક્ષમા... અંતમાં રાષ્ટ્રીય

અધ્યક્ષ શ્રી વાઘજીભાઈ વોરા, શ્રી અરવિંદભાઈ દેસાઈ અને શ્રી રમેશભાઈ વોહરા નડીઆદનો માળવા પ્રવાસ સમાજમાં અત્યંત નવી રોશની લઈ આવવા વાળો પુરવાર થયો છે. અને રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષશ્રીની નેત્રદિપક કામગીરીથી સમાજમાં ઉત્સાહનું મોજું ફરી વળ્યું છે.

બડનગર : સ્વાગત : શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન – સંઘ પરિચય : શ્રી રાજેન્દ્ર રાઠોડ પરિષદ પરિવાર દ્વારા સ્વાગત ઉદ્‌બોધન – રાજકુમારજી નાહર પ્રદેશ સંઘ દ્વારા : સુરેશજી તાંતેડ

બદનાવર : ઉદ્‌બોધન : શ્રી મહાવીરજી ચોરડીયા, કુક્ષી : ઉદ્‌બોધન મનોહરલાલજી પુરાણીક

ઉજૈન : નયાપુરા : નમકમંડી, શ્રી સુશીલજી ગીરીયા અધ્યક્ષ, શ્રી પ્રકાશજી ગાદીયા, સચિવ શ્રી રાજબહાદુરજી મહેતા, નમક મંડી અધ્યક્ષ, સચિવ મદનલાલજી રૂનવાલ, મનીષજી પીપાડા. પરિષદ અધ્યક્ષ : નિતેશજી બોદરા, મહિલા પરિષદની વિશેષ ઉપસ્થિત

રીંગણોદ : બાબુલાલજી પવાર, શેતાનમલજી અને ડાંગીજી, મહિલા પરિષદ અધ્યક્ષ રીંગણોદ શ્રીમતી સરોજી લુણાવત

ખાચરોદ : રાજેશજી બનવટ, સંઘ અધ્યક્ષ સુરેશજી મહેતાના નિવાસ સ્થાને નવકારશી સંચાલન ડી.સી. નાંદેયા

દલોદા : અજયજી સુરાણા, સંઘ અધ્યક્ષ, શ્રી સોહનલાલજી સુરાણા, તરૂણ પરિષદ, વિજયજી તાંતેડ રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ અને મધ્ય પ્રદેશ પરિષદ અધ્યક્ષની ઉપસ્થિતિમાં રોનક હસ્તીમલજી ને અધ્યક્ષ અને પ્રતિકજી ધોકાને સચિવ તારીકે નિમણૂંક કરાયા હતા.

મંદશોર : સંઘ અધ્યક્ષ રાજેન્દ્રજી રાઠોડ

રાજગઢ : શ્રી દિનેશજી જૈન મામા, શ્રી શશાંકજી લુણાવત, અધ્યક્ષ મણીલાલજી, મહિલા પરિષદ, બાલિકા પરિષદ

જાવરા : પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી સૂર્યોદયાશ્રીજી, કૈલાશશ્રીજી અને પ્રવચનકાર વિપુલતાશ્રીજી મ.સા. ની પાવનકારી નિશ્રા, સ્વાગત શાંતિલાલજી દસાડા સંચાલન અજિતજી ચતર વિગેરેનો ટુંકમાં પરિચય આપેલ છે. જેમને સ્વાગત ઉદ્‌બોધન અને સંઘ પરિચય આપેલ છે. નાગદા પરિષદ અને રાષ્ટ્રીય પ્રચારક શ્રી બ્રીજેશ બોહરાનું, શ્રી રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ દ્વારા સન્માન કરાયું હતું.

રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષની માળવા દોહરાની તસ્વીરી ઝલક

રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષની માળવા દોહરાની તસ્વીરી ઝલક

બ્રજેશ બોહરાનું સન્માન કરતા રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ

રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષની માળવા દોહરાની તસ્વીરી ઝલક

ઈતિહાસ સર્જક ભીનમાલનું ૭૨ જિનાલય તીર્થ... !!

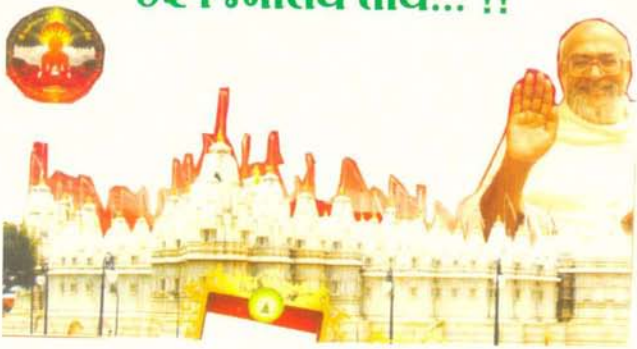

પ્રતિષ્ઠાચાર્ય સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના ચરણોમાં કોટી કોટી વંદન....

ભીનમાલ નગરની વૈભવી વસુંધરા પર અખિલ ભારતીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘમાં ઈતિહાસ સર્જક લબ્ધ પ્રતિષ્ઠિત લુંકડ પરિવાર દ્વારા નિર્મિત ત્રિભુવન તિલક શ્રી લક્ષ્મીવલ્લભ પાર્શ્વનાથ ૭૨ જિનાલયતીર્થનું નિર્માણ સર્વતોભદ્ર રેખા શ્રી યંત્ર પર કરાયેલ છે. જેમાં ગત, વર્તમાન અને આવતી ચોવીસીના કુલ ૭૨ તીર્થંકર પરમાત્મા, ગણધર મંદિર, ગુરૂમંદિર, અધિષ્ટાયક મંદિર, કુળદેવી મંદિર સાથે ચાર શાશ્વત જૈન મંદિરોનું નિર્માણ કરાયેલ છે.

પરમ ગુરૂભક્ત, ઉદાર સખાવતી ધર્મશ્રેષ્ઠીવર્ય શેઠ શ્રી સુમેરમલજી હંજારીમલજી લુંકડ પરિવારે ૭૨ જિનાલય મહાતીર્થનું નિર્માણ કરી એક અદ્‌ભુત, અનુપમ અને અવિસ્મરણીય ઈતિહાસ સર્જી વિશ્વમાં ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાય અને (ભીનમાલ) મરૂધર ભૂમિનું નામ ગુંજતુ કર્યું છે. જગ જયવંત જૈન શાસનના ઈતિહાસમાં પ્રથમવાર એક જ પરિવાર દ્વારા કરોડો રૂપિયાની સહાયથી સો એકર જેટલી વિશાળ જમીન પર નિર્માણ કરાયેલ આ ભવતારક તીર્થનો મહિમા જગબત્રીસીએ ગવાવા લાગ્યો છે. ૭૨ જિનાલય અને અન્ય ૮ મંદિરોની સાથે સાથે ચાર માળની ૧૨૦ રૂમો આધુનિક સુવિધા સાથેની ધર્મશાળા એક હજારથી વધુ યાત્રિકો સાથે બેસીને ભોજન લઈ શકે તેવી વિશાળ ભોજનશાળા, શ્રમણ-શ્રમણી માટે સુંદર ઉપાશ્રય સુવ્યવસ્થિત વ્યવસ્થાના સંચાલન માટે કાર્યાલય તેમજ આકર્ષક પ્રવેશ દ્વાર બેટરીથી ચાલતી ગાડી

દ્વારા ધર્મશાળાથી જિનાલય અને જિનાલયથી ધર્મશાળા સુધી યાત્રિકોને પહોંચાડવાની અતિ ઉત્તમ વ્યવસ્થા વગેરેનું નિર્માણ કરી લુંકડ પરિવારના પૂર્વજોની દાનવીરતા અને યશસ્વિતામાં યશ કલગીનો ઉમેરો કર્યો છે.

એકવીસમી સદીનો સર્વોત્તમ પ્રતિષ્ઠાંજન શલાકા...! જિન શાસનના શૌર્યમાં શાશ્વત અભિવૃધ્ધિ કરવાવાળો પ્રતિષ્ઠોત્સવ...! ગુરૂ ગચ્છની ગરિમાનું ગૌરવ વધારવાળો આત્મોત્સવ..! ભાવુકોને ભવ્ય સંદેશ દેવાવાળો ભક્તોત્સવ...!!

આ ત્રિભુવન તિલક આત્મશ્રેયકારી મહાતીર્થનો અતિદિવ્ય-અતિભવ્ય અને અતિનવ્ય અંજનશલાકા પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ પ્રતિષ્ઠાચાર્ય સમર્થ યુગપ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના વરદ્ હસ્તે સુવિશાલ સાધુ-સાધ્વીજી મંડળની શુભંકરી નિશ્રામાં ગત તા. ૧૪-૨-૨૦૧૧ ના રોજ એકાદશાન્હિકા મહોત્સવ સહ ધામધૂમ પૂર્વક સંપન્ન થયો હતો. જે મહાતીર્થમાં નવપદ ઓળી આરાધના... મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન-૪ અને પૂજ્યશ્રીના ચાતુર્માસની ઘોષણાના રૂડા અવસરો સંપન્ન થયા છે.

માનવતા, ધાર્મિકતા અને સામાજિકતાના પ્રત્યેક સદ્કાર્યોમાં પોતાની સદ્કર્મોપાર્જિત લક્ષ્મીનો સદ્ઉપયોગ કરી પુણ્યાનુબંધ પુણ્યનો સદ્વ્યય કરનાર સમાજ ભૂષણ, ધર્મશ્રેષ્ઠીવર્ય સંઘવી સુમેરમલજી હજારીમલજી લુંકડ (બાસા) અને તેમના ધર્મપરાયણ ધર્મપત્ની અનેક મુમુક્ષુઓની ધર્મમાતા, માતૃવાત્સલ્યા શ્રીમતી સુઆબાઈ સુમેરમલજી લુંકડ (માજીઆ) આ તીર્થના સ્વપનદ્રષ્ટા હતા, અત્યારે માત-પિતાની ભાવનાને બુલંદ બનાવી શ્રી રમેશભાઈ લુંકડ તેમજ પરિવારજનો અનંત પુણ્યનું ભાથુ બાંધી રહ્યા છે.

ઉલ્લેખનીય છે કે શ્રી મોહન ખેડા તીર્થમાં આજે પણ ભોજનશાળામાં કોઈ ચાર્જ નથી તે ભાવના ધર્મશ્રેષ્ઠીવર્ય શ્રી સુમેરમલજી લુંકડની હતી તે ભાવનાને અનુસરીને ૭૨ જિનાલયમાં પણ ભોજનશાળા કે ધર્મશાળામાં કોઈ જ ચાર્જ લેવાતો નથી પૂજય શ્રી ની ૭૨ જિનાલયની ૨૦ દિવસની સ્થિરતા મીની ચાતુર્માસ જેટલી જ પ્રભાવક બની ગઈ હતી. ઉચ્ચ કોટીની ઉદારત સાથે લુંકડ પરિવારે કરેલી ગુરુભક્તિ, શાસનભક્તિ અને સંઘભક્તિ જોઈને આખો સમાજ અભિભૂત થઈ ગયો હતો. ઓળી આરાધના, જ્ઞાનાયતન -૪, ચાતુર્માસ ઘોષણા તેમજ વિવિધ સાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમોના પુલકિત અવસરની ઉજવણીના આનંદથી ૭૨ જિનાલયની ધન્ય ધરા હરખાઈ ઉઠી હતી.

૭૨ જિનાલય ભીનમાલ નગરે...
નવપદ ઓળી આરાધના સંપન્ન

સંઘવી સુમેરમલજી હંજારીમલજી લુંકડ પરિવાર દ્વારા શ્રી લક્ષ્મીવલ્લભ પાર્શ્વનાથ ૭૨ જિનાલય ભીનમાલ નગરે પ્રતિષ્ઠાચાર્ય સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ મુનિ મંડળ અને પૂજ્ય સાધ્વીજી મંડળની પાવનકારી નિશ્રામાં સંવત ૨૦૭૨ ના ચૈત્ર સુદ-૮ ને ગુરૂવાર તા. ૧૪-૪-૨૦૧૬ ના રોજથી સંવત ૨૦૭૨ ના ચૈત્ર સુદ-૧૫ ને શુક્રવાર તા. ૨૨-૪-૨૦૧૬ ના રોજ સુધી મહામંગલકારી ચૈત્ર માસની નવપદજી શાશ્વતી ઓળી આરાધનાનું ભવ્યાતિ ભવ્ય આયોજન કરાયું હતું.

આ ભવ્ય આયોજનમાં ૮૦૦ જેટલા ઓળી આરાધકો જોડાયા હતા તેની યશોગાથા જૈનોના ચારેય ફીરકાઓના સંઘોમાં ગવાઈ રહી છે. એક જ પરિવાર દ્વારા કરાયેલ ઓળી આરાધનાના આ આયોજનમાં વિશાળ સંખ્યામાં આરાધકો જોડાયા હોય તેવો જિન શાસનમાં કદાચ પ્રથમ પ્રસંગ હશે.

પ્રતિષ્ઠાચાર્ય સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. એ નવપદ ઓળી આરાધકોની ભાવનાને બુલંદ બનાવી હતી સાચા અર્થમાં રાષ્ટ્રસંત બનીને ધાર્મિકતાનો ધોધ વરસાવ્યો હતો. પૂર્વ ભવોમાં અનંતવાર જન્મ ધારણ કરી કરેલા પાપોની નિર્જરા માટે પૂજ્યશ્રીના મુખ કમળ દ્વારા અપાતા માર્મિક વ્યાખ્યાનથી પ્રેરાઈ વિશાળ સંખ્યામાં ૮૦૦ થી અધિક આરાધકો ઓળી આરાધનામાં જોડાયા હતા. અપૂર્વ કોટીની ઉદારતા સાથે સંઘવી સુમેરમલજી હંજારીમલજી લુંકડ પરિવારની અનુમોદનીય સેવાભક્તિ અને સંઘભક્તિ જોઈ આખો સમાજ અભિભૂત થઈ ગયો હતો.

સંવત ૨૦૭૨ ના ચૈત્ર સુદ-૮ ને ગુરૂવાર તા. ૧૪-૪-૨૦૧૬ ના રોજથી પ્રારંભાયેલ ઓળી આરાધનાના પ્રથમ દિવસે સવારે પૂજન ત્યારબાદ પ્રવચન બપોરે તમામ તપસ્વીઓ એક સાથે આંયબિલ કરી શકે તેવા મંડપમાં શ્રીપાલ રાજા અને મયણા સુંદરી નું સ્મરણ કરી આંયબિલ આરાધકોને આંયબિલ કરાવવામાં આવ્યા હતા. ઓળી આરાધનાના નવેય દિવસ અલગ અલગ મહાપૂજન પૂજ્યશ્રી અને તેમના શિષ્યરત્નો દ્વારા પ્રવચન સુપ્રસિધ્ધ સંગીતકારો દ્વારા ભક્તિ ભાવનાના કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. પ્રતિરોજ પ્રવચન બાદ રૂા. ૨૦ ની પ્રભાવના અને પૂજનમાં રૂા. ૧૦ પ્રભાવના દ્વારા દરેકનું બહુમાન કરાયું હતું.

આ ઓળી આરાધનાનો ભવ્ય પ્રસંગે દીપી ઉઠે તે માટે સંઘવી સુમેરમલજી હંજારીમલજી લુંકડ પરિવાર સહિત સંઘ તેમજ સગા સ્નેહીજનોએ ભારે જહેમત ઉઠાવી હતી. ૭૨ જિનાલયમાં યોજાયેલ આ ઓળી આરાધના પ્રસંગ અવિસ્મરણીય બની ગયો હતો.

ખાસ નોંધ :- ઓળી આરાધના દરમ્યાન શ્રી મહાવીર સ્વામી જન્મ કલ્યાણ દિવસે પ્રભુજીના જન્મ કલ્યાણની ઉજવણી ઉલ્લાસભર કરવામાં આવી હતી.

ભીનમાલ નગરની વૈભવી વસુંધરા...
૭૨ જિનાલયના પવિત્ર આંગણે...
હૈયે હિલોળા લેતો પૂજ્યશ્રીના ચાતુર્માસનો ઉદ્‌ઘોષણા સમારોહ કાર્યક્રમ સંપન્ન
સંવત ૨૦૭૨ ના ચૈત્ર સુદ-૧૫ ને શુક્રવાર તા. ૨૨-૪-૧૬

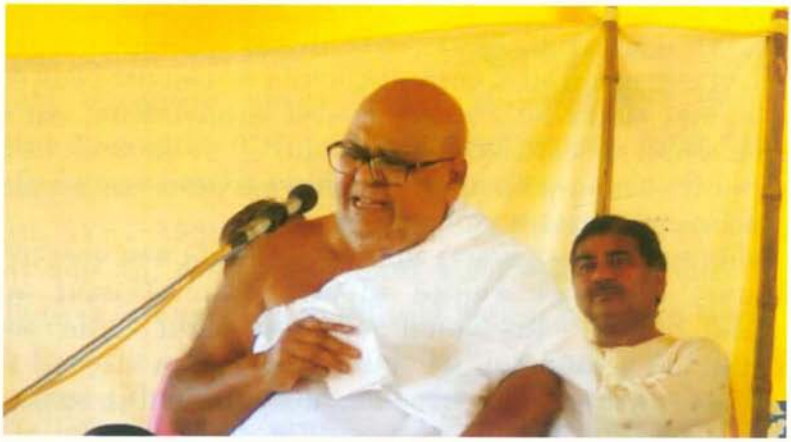

પ્રતિ વર્ષ ચૈત્ર માસની પુનમના દિવસે સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના ચાતુર્માસની ઘોષણા થવાની હોઈ ભારતભરના શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના હૈયાં હિલોળા લેવા મંડે છે.

સંવત ૨૦૭૨ ના વર્ષમાં લુંકડ પરિવાર દ્વારા આયોજીત ઐતિહાસિક ઓળી આરાધના સંપન્ન થઈ જવા રહી છે. લુંકડ પરિવારે ૮૦૦ થી અધિક આરાધકોને સેવાભક્તિ સહિત ઓળી આરાધના જે રીતે કરાવી હતી તેના પડઘા દુર દુરના સંઘોમાં પડ્યા હતા. લુંકડ પરિવારે અ.ભા. શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અને ભીનમાલ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘનું ગૌરવ વધારવામાં કોઈ કચાસ રાખી ન હતી.

પૂજ્યશ્રીના ચાતુર્માસની ઉદ્‌ઘોષણા પ્રસંગે બહાર ગામના સંઘોમાંથી આવતા મહાનુભાવો અને ભક્તો માટે આવાસ-નિવાસ વિગેરે સુવિધા આપવી જે થોડું અઘરું કાર્ય હોય છે. પરંતુ લુંકડ પરિવાર માટે જરાયે અઘરું ન હતું. લુંકડ પરિવારે કમર કસી અને સગા-સ્નેહીઓનો સહકાર મેળવી પૂજ્યશ્રીના ચાતુર્માસ ઉદ્‌ઘોષણા માટેનું જે આયોજન કર્યું કે સહુ કોઈ આશ્ચર્યચકિત બની ગયા, મહેમાનોની આગતા-સ્વાગતા અને ત્રણેય ટાઈમની સાધર્મિક ભક્તિ કરાઈ તે અનુમોદનીય અને પ્રશંસનીય બની

રહી હતી.

અનેકવિધ પ્રવૃત્તિઓ વચ્ચે પણ અહો રાત્ર પરમાત્માની પરાભક્તિમાં લીન રહેતા અને જેમના સાનિધ્યમાં અનેક મુમુક્ષુઓએ ઉચ્ચ આધ્યાત્મિક શિખરો પ્રાપ્ત કર્યા છે. છેલ્લા ૬૨ વર્ષથી શાસન-સમાજ અને ગચ્છના વિકાસ માટે ઝઝુમનાર સમાધાનકારી વૃત્તિ ધરાવતા વિશાળ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદના નાયક, લાખો ભક્તોના હૃદય સમ્રાટ અનંત ઉપકારી સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના સન ૨૦૧૬ ના વર્ષના ચાતુર્માસની ઉદ્‌ઘોષણા ઉદાર સખાવતી લુંકડ પરિવાર ધ્વારા આયોજિત સંપૂર્ણ ભારતના અદ્વિતીય ૭૨ જિનાલયના પવિત્ર આંગણે સંવત ૨૦૭૨ ના ચૈત્ર સુદ-૧૫ ને શુક્રવાર તા. ૨૨-૪-૨૦૧૬ ના રોજ થવાની હોઈ ગુજરાત, રાજસ્થાન, મધ્યપ્રદેશ, આંધ્ર પ્રદેશ, તામિલનાડુ, કર્ણાટક, મહારાષ્ટ્ર, ઉત્તર ભારત વગેરે રાજ્યોમાંથી શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘોના લગભગ ૧૦૦૦૦ થી વધુ મહાનુભાવો પ્રતિનિધિઓ અને શ્રધ્ધાવંત ગુરૂભક્તો પૂજ્યશ્રીને ચાતુર્માસ કરાવવાના ઉતમોત્તમ ભાવો સાથેના અરમાનો લઈ ૭૨ જિનાલય ભીનમાલ નગરે આવી પહોંચ્યા હતા. જે મહાનુભાવોને આવકારી લુંકડ પરિવારે અભિવાદન કર્યું હતું.

આ ચાતુર્માસ ઉદ્‌ઘોષણા પ્રસંગે સૌધર્મ બૃહતતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ અને પદાધિકારીઓ અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક, મહિલા, બાલિકા, તરૂણ પરિષદના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ અને પદાધિકારીઓ તેમજ ગામો-ગામ નગરો-નગરના સંઘ પ્રતિનિધિઓ અને શ્રધ્ધાવંત ગુરુભક્તો ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. સવારે ચાતુર્માસ ઉદ્‌ઘોષણા સમારોહ મંડપમાં યુવા મુનિરાજશ્રી નિપૂણરત્ન વિજયજી મ.સા. એ તેમની મધુર વાણીમાં ચૈત્રી પૂનમના રોજ કરોડો મુનિરાજો મોક્ષે ગયા તે વિશે ચોટદાર પ્રવચન ફરમાવ્યું હતું. ત્યારબાદ પૂજ્યશ્રીની પધરામણી થતાં જય જય કારના નારા ગુંજી ઉઠ્યા હતા. અને સંગીતકાર નરેન્દ્ર વાણીગોતા દ્વારા સંગીતની સુરાવલીઓ રણકી ઉઠી હતી. કાર્યક્રમના પ્રારંભે સામુહકિ ગુરુવંદના કરાઈ હતી અને પૂજ્યશ્રીના મંગળાચરણ બાદ શ્રી વાઘજીભાઈ વોરા, શ્રી ચેતનજી કાશ્યપ, શ્રી રમેશભાઈ લુંકડ, શ્રી રમેશભાઈ ધરૂ વિગેરેએ દીપ પ્રાગટ્ય કરી કાર્યક્રમની શરૂઆત કરાવી હતી. પ્રથમ સત્રમાં ખાચરોદ, રાણાપુર, પારા, જાવરા, ભાટ પલચાણા, મહીદપુર સીટી, ધાર, નેલ્લુર, નયાગાંવ, નિમ્હાલેડા, બદનાવર. આહોર, કુક્ષી-ડીસા, નાગદા, બડનગર, ગુમાસ્તાનગર, રાજ મહેન્દ્રી, ઈન્દોર, બાગ, દ્વાવણગીરી, વાગરા-જોધપુર, ચેન્નઈ વિગેરેએ વિનંતી કરી હતી અને લુંકડ પરિવારે પૂજ્યશ્રીને કાંબળી ઓઢાડી હતી ત્યારબાદ સવારનું પ્રથમ સત્ર પૂર્ણ થયે ઓળી આરાધના અને ચાતુર્માસ ઉદ્‌ઘોષણા સમારોહના આયોજક ઉદાર સખાવતી સંઘવી

સુમેરલાલજી હંજારીમલજી લુંકડ પરિવાર દ્વારા કરાયેલ આયોજન અને નેત્રદીપક કામગીરીની મુક મોઢે અનુમોદનીય પ્રશંસા કરી સમાજજનોએ ભોજનને ન્યાય આપ્યો હતો અને થોડો આરામ કર્યો હતો.

બપોરે ૩-૧૦ કલાકે ૭૨ જિનાલય ખાતે પૂજ્યશ્રીના ચાતુર્માસ ઉદ્‌ઘોષણા સમારોહ માટે રચાયેલ સમિયાણામાં પૂજ્યશ્રીએ પધરામણી કરી હતી ત્યારે શ્રોતાજનોથી ખીચોખીચ સમિયાણો ઉભરાઈ ઉઠ્યો હતો. અને સહુ કોઈએ પોતાનું સ્થાન ગ્રહણ કરી લીધું હતું. પૂજ્યશ્રીના મુખકમલ દ્વારા મંગળા ચરણ બાદ આ કાર્યક્રમનો પ્રારંભ થયો હતો. ત્યારબાદ ગામો ગામ-નગરો-નગરના સંઘો પુરા અરમાન સાથે પૂજ્યશ્રી અથવા સાધુ-સાધ્વીજીના ચાતુર્માસની વિનંતી માટે આવ્યા હતા જે મહાનુભાવોએ ક્રમાનુસાર ચાતુર્માસની વિનંતી કરવાનો સીલસીલો જારી રાખ્યો હતો. વિનંતી કરવા પધારેલા અનેક સંઘો હતા જ્યારે પૂજ્યશ્રીનું ચાતુર્માસ એકજ સ્થળે થવાનું હોઈ દરેક સંઘોને કારણ જણાવી આગામી વર્ષોના ચાતુર્માસ માટે આશા ટકાવી રાખવા જણાવ્યું હતું. બપોરના સત્રમાં મધુકર મનન, જેસી કરણી વૈસી ભરણી એમ ત્રણ પુસ્તિકાનું શ્રી વાઘભાઈ વોરા, શ્રી ચેતનજી કાશ્યપ, શ્રી શાંતિલાલજી રામાણી, શ્રી સંવતીલાલ મોરખીયા, શ્રી કબદીજી વિગેરે દ્વારા વિમોચન કરાયું હતું. ત્યારબાદ અમરાઈવાડી કુશલગઢ, જયંતસેન મ્યુઝીયમ, રીંગણોદ, પેપરાલ, બાકરા રોડ, રેવતડા, વિજયવાડા, નવાવાડજ, ભરતપુર, નેનાવા, સુરત, ઉજૈન, પાંથેડી, મુંબઈ, થરાદ, ડીસા, કોરટાજી, ટાંડા, સુરા, દાધાલ, જાલોર, રતલામ, ૭૨ જિનાલય વિગેરે સંઘોએ વિનંતી કરી હતી જેમાં નિમ્હાહેડા, ટાંડા, દાધાલ, ભરતપુર અને રતલામ સંઘ સંપૂર્ણ તૈયારીઓ સાથે આવ્યા હતા. સમય જતાં વાતાવરણ પરથી જણાઈ રહ્યું હતું કે લગભગ સંઘો ચાતુર્માસ કરાવવાની સ્પર્ધામાંથી બહાર નીકળી ગયેલ છે તે સમયે રતલામ અને ભરતપુર તીર્થ દ્વારા કરાયેલ વિનંતીથી ભરતપુરનું ચાતુર્માસ ફેવરીટ જણાતું હતું પણ કોઈ કળી શકતું ન હતું કે કયા સંઘ ઉપર ચાતુર્માસનો કલશ ઢોળાશે...!! બસ સહુને ઈન્તજાર હતો, માનવ મહેરામણમાં ગુપસુપ-ગુપસુપ ચર્ચાઓ થઈ રહી હતી જે છેલ્લી પંદર મીનીટ દરમ્યાન તો એમ જણાઈ રહ્યું હતું કે કોઈ સિનેમા ઘરમાં પ્રેક્ષકો રહસ્યમય ફિલ્મ નિહાળી રહ્યા હોય ને હવે પછી શું થશે ? ફિલ્મનું રહસ્ય જાણવાની જેટલી ઉત્સુકતા પ્રેક્ષકોમાં હોય છે એના કરતાં સમિયાણામાં ઉપસ્થિત માનવ મહેરામણમાં જોવામાં આવી હતી. સહુની સમક્ષ રતલામ અને ભરતપુર આવી ચુક્યા હોવા છતાં છેલ્લી ઘડી સુધી કોઈ જ કલ્પી શક્યું ન હતું કે પૂજ્ય શ્રી ચાતુર્માસ ક્યાં ગાળશે. સાંજે ૪-૫૦ વાગ્યાના સુમારે સહુની આગ્રહભરી વિનંતીને ધ્યાનગ્રસ્ત કરી અને જે ઉચિત લાગતાં પૂજ્યશ્રીએ સન-૨૦૧૬ વર્ષનું ચાતુર્માસ રતલામ નગરે ગાળવાની સંમતિ દર્શાવી હતી અને શ્રી સકળ

સંઘ દ્વારા જય બોલાવવામાં આવી હતી. સન-૨૦૧૬ ના વર્ષનું ચાતુર્માસ રતલામ નગરે નિર્ધારીત થતાં ઢોલના ધબકારા અને બેન્ડના રણકારા સાથે ભક્તજનોએ આનંદ અને ઉલ્લાસના ભાવો છલકાવી હૈયાની હેલી વરસાવી દીધી હતી અને લાલ લીલા સફેદ ગુલાલની છોળો ઉડાડી હતી.

આ ચાતુર્માસ ઉદઘોષણાની ખાસ વિશેષતાઓ એ રહી હતી કે આ ઉદઘોષણા સમારોહ કાર્યક્રમને હજારો ભકતોએ નજર સમક્ષ નિહાળ્યો હતો. તો લાખો ભકતો એ અરીહંત ચેનલ પર ઘર બેઠા આ કાર્યક્રમને જોવાનો લ્હાવો પ્રાપ્ત કર્યો હતો.

સમર્થ યુગ પ્રભાવક
સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ
પરમ પૂજય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય

શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદનવિજયજી મ.સા. આદીઠાણા સન. ૨૦૧૬ના વર્ષનું પ્રભાવશાળી ચાતુર્માસ **રતલામ** નગરે ગાળશે.

પૂજય શ્રી ના આજ્ઞાનુવર્તી શ્રમણ-શ્રમણી વૃંદ ના ચાતુર્માસ માટે અપાયેલ આજ્ઞા મુજબ નામાવલી પ્રસ્તુત છે.

શ્રમણવૃંદ

ભાંડવપુર	:	મુનીરાજ શ્રી જયરત્નવિજયજી મ.સા. આદીઠાણા
વાગરા	:	મુનીરાજ જયકિર્તીવિજયજી મ.સા.
કુશલગઢ	:	મુનીરાજ સિધ્ધરત્ન વિજયજી, મુનીરાજ વિધ્વતરત્ન
જોધપુર	:	મુનીરાજ વિરરત્ન વિજયજી મ.સા. આદીઠાણા
ગુમાસ્તાનગર	:	મુનીરાજ વૈભવરત્ન વિજયજી મ.સા. આદીઠાણા
પાલીતાણા	:	મુનીરાજ અજીતસૈનવિજયજી મ.સા. આદીઠાણા
વિજયવાડા	:	મુનીરાજ સંયમરત્નવિજયજી મ.સા. આદીઠાણા

શ્રમણીવૃંદ

નવાવાડજ	:	પૂ. સાધ્વીજી પૂર્ણકીરણા શ્રીજી મ.સા. આદીઠાણા
શંખેશ્વર	:	પૂ. સાધ્વીજી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા. આદીઠાણા
જોધપુર	:	પૂ. સાધ્વીજી મોક્ષગુણાશ્રીજી મ.સા. આદીઠાણા
બડનગર	:	પૂ. સાધ્વીજી અનંતદ્રષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદીઠાણા
સુરત	:	પૂ. સાધ્વીજી અમીતદ્રષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદીઠાણા
મુંબઈ	:	પૂ. સાધ્વીજી દર્શનકલાશ્રીજી મ.સા. આદીઠાણા
ઉજજૈન	:	પૂ. સાધ્વીજી કાવ્યરત્નાશ્રીજી મ.સા. આદીઠાણા
અલગર	:	પૂ. સાધ્વીજી પ્રિયદર્શનાશ્રીજી મ.સા. આદીઠાણા
નાગદા	:	પૂ. સાધ્વીજી પ્રિતીદર્શનાશ્રીજી મ.સા. આદીઠાણા
નૈલોર	:	પૂ. સાધ્વીજી આત્મદર્શનાશ્રીજી મ.સા. આદીઠાણા
મોટેરા	:	પૂ. સાધ્વીજી ભાગ્યકલાશ્રીજી મ.સા. આદીઠાણા
અમરાઈવાડી	:	પૂ. સાધ્વીજી વિધ્વતગુણાસશ્રીજી મ.સા. આદીઠાણા
પાંથેડી	:	પૂ. સાધ્વીજી શાસનલત્તાશ્રીજી મ.સા. આદીઠાણા
આણંદ	:	પૂ. સાધ્વીજી અનુપમદ્રષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદીઠાણા
રાણાપુર		પૂ. સાધ્વીજી ચારીત્ર્યકલાશ્રીજી મ.સા. આદીઠાણા

कुमकुम सने पगलिये

मुनिराज वैभवरत्न विजयजी आदि ठाणा 2 का पारा में प्रवेश

पारा । यह जीवन मनचाहा फल देने वाला कल्प तरू है इसे शुद्ध मन और विचारों से सुशोभित करेंगे तो हमें बहुमूल्य उपलब्धियां मिलती चली जाएंगी, नहीं तो मन और विचारों के बीच असंतुलन-असमानता तथा जमीन-आसमान जैसा अंतर आ जाएगा तो छिलका ही मिलेगा। आज मनुष्य मात्र अपने मन के विचारों का संतुलन नहीं बैठा पा रहा है इस कारण उसे सुख मार्ग ढूंढने पर भी नहीं मिलता । हमें तो मन एवं विचार को ऐसा दृढ़ निश्चय बनाना है कि वे हमें परिणाम दें ।

यह प्रेरक प्रवचन मुनिराज श्री वैभवरत्न विजयजी ने रविवार को स्थानीय गुरु ज्ञान मंदिर पर आयोजित एक धर्म सभा में कहे । इसके पूर्व आप मुनि मंडल की झाबुआ से पारा पधारने पर झाबुआ रोड़ पर बड़ी संख्या में समाजजनों ने पहुंच कर अगवानी की । बाद में नगर भ्रमण करते मुनि मंडल स्थानीय आदेश्वर-शंखेश्वर-सिमंधर धाम जैन मंदिर पहुंचे जहां दर्शन-वंदन किए ।

परिषद के महामंत्री सुशील छाज़ेड़ ने बताया कि नगर के श्री राजेंद्र सूरी गुरुज्ञान मंदिर में आयोजित धर्मसभा के कार्यक्रम का संचालन करते जैन श्रीसंघ पारा के अध्यक्ष मनोहरलाल छाजेड़ ने स्वागत भाषण दिया । इस अवसर पर विभाष ए जैन ने गुरु भक्ति का स्वागत गीत तथा नन्हे बच्चे मोक्ष कोठारी ने अपनी भक्ति कविता सुनाई । धर्मसभा के पूर्व जैन श्रीसंघ के महामंत्री राजेंद्र कोठारी ने गुरुवंदना करवाई । मंगलाचरण से मुनिराज वैभवरत्न विजयजी ने अपने प्रवचन की शरूआत करते समाज में व्याप्त नकारात्मक विचारों पर करारे प्रहार किए तथा मन और

विचारों को अपनी सपाट शैली में परिभाषित करते कहा कि हमेंशा बिना सोचे विचारे कोई काम नहीं करना चाहिए। विचारों और मन के मेल में अकल भी लगाना चाहिए अन्यथा बाद में पछताना पड़ता है। आपने कहा कि जो विचार मनुष्य को भगवान तक पहुंचा दे वे ही वास्तव में सही विचार है।

विहार करते हुए पारा पधारे मुनिराज वैभवरत्न विजयजी मसा का रविवार को दीक्षा दिवस भी था। 15 वर्ष पूर्व 21 वर्ष की उम्र में चैत्र सुदी चौथ वर्ष 2001 को गुजरात राज्य के थराद शहर में राष्ट्रसंत आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के हाथों दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा के पूर्व आपने गुरुदेव प्रन्यास प्रवर चंद्रशेखर विजयजी मसा के पास रह कर सेवा करते जैन शास्त्रों के मूल तत्वों का गहरा अध्ययन कर धार्मिक ज्ञान प्राप्त किया। मुंबई चातुर्मास के दौरान कई जगह ऐसे उपदेश दिए कि जिससे प्रभावित होकर कई कत्लखाने बंद हुए और हजारों जीवों को अभयदान मिला।

धर्मसभा समापन के बाद परिषद की ओर से प्रभावना वितरित कि गई। दोपहर को महिला परिषद की ओर से सामूहिक सामायिक का आयोजन किया गया शाम को भक्ति आरती तथा इसके बाद समाज के युवा वर्ग की एक बैठक रखी गई। आज सुबह 6 बजे प्रभु मिलन भक्तामर तथा साढ़े नौ बजे प्रवचन का आयोजन किया गया।

सोमवार को स्थानीय सरस्वती शिशु विद्या मंदिर केशरबाग में मुनिश्री के मंगलमय आगमन पर विद्यालय के आचार्य परिवार एवं भैया-बहनों द्वारा अक्षत वर्षा कर स्वागत किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के व्यवस्थापक प्रकाश तलेसरा ने विद्यालय की शैक्षणिक एवं पाठ्योत्तर गतिविधियों के बारे में अवगत कराया राजेंद्र सूरी बाल विकास समिति पारा के अध्यक्ष जैन रत्न प्रकाश छाजेड़ ने मुनिराज डॉ वैभवरत्न मसा के अलौकिक जीवन पर प्रकाश डाला।

मुनिराज ने अपने प्रवचन में विद्यालय के आचार्य परिवार को आशीर्वचन देते हुए विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति पर आधारित शिक्षा प्रदान करने पर जोर दिया। आपने कहा कि अच्छे शिक्षक विद्यार्थियों को साक्षर बनाते हैं लेकिन यदि शिक्षक में किसी प्रकार की कमी हो तो विद्यार्थी साक्षर की बजाए राक्षस बन सकते हैं। इसलिए आपने शिक्षकों को कृपाचार्य तथा द्रोणाचार्य जैसे श्रेष्ठ शिक्षक बनने को कहा एवं अर्जुन तथा पांडवों की भांति शिष्य तैयार करने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम में राजेंद्र सूरी बाल विकास समिति के सक्रिय सदस्य राजेंद्र पगारिया तथा ग्रा.पं. पारा के पंच तथा शिशु मंदिर छात्र संघ के पूर्व अध्यक्ष शुभम् सोनी भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के प्रभारी प्राचार्य इरफान उल्ला खान ने मसा के प्रेरणाप्रद आशीर्वचनों को जीवन का ध्येय बनाने का कहते हुए विद्यालय में पधारने पर आभार व्यक्त किया।

विवेक का आनंद लेने वाला ही
विवेकानंद है

शाजापुर–डॉ. सागरमल जैन के 85 वें जन्मोत्सव के उपलक्ष में एक व्याख्यान माला आयोजित की गयी। जिसमें मुनि श्री संयमरत्न विजय जी ने कहा कि जन्म लेना उन्हीं का सार्थक होता है, जो अपने विशिष्ट कार्यों से महान बन जाता है। जन्म लेने से नहीं, अपितु महान कार्य करने से पुरुष, महापुरुष बन पाता है। हर प्राणी में विवेक होता है, विवेक का आनंद लेने वाला हर प्राणी विवेकानंद बन जाता है।

आपने कहा मनुष्य रूपी वृक्ष के आठ फल होते हैं– 1. पूजनीय की पूजा, 2. दया, 3. दान, 4. तीर्थयात्रा, 5. जप, 6. तप, 7. श्रुत (ज्ञान), 8. परोपकार। ये आठ गुण हमारे जीवन में हों, तो ही मानव जीवन की सफलता है।

माधव महाविद्यालय, उज्जैन के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डॉ. हेमन्त नामदेव ने मूल्य संकट और सांस्कृतिक क्षरण–एक दार्शनिक विवेचन' विषय पर वक्तव्य देते हुए कहा कि–एक ओर जहाँ संचार क्रांति ने दुनियाँ की दूरियाँ कम कर दी हैं, वहीं दूसरी ओर दिलों की दूरियाँ बढ़ती जा रही हैं। आज हम हमारी संस्कृति से कट गये हैं, संस्कृति का दिन–प्रतिदिन क्षरण हो रहा है। संस्कृति का क्षरण इसलिये हो रहा है कि हमने संस्कृति के तप–त्याग–बलिदान रूप आधार स्तम्भों को खोखला बना दिया है।

त्रिदिवसीय प्रवचन हेतु नगर प्रवेश

सरसी : मुनिराज श्री संयमरत्न विजय जी, एवं मुनिराज श्री भुवनरत्न विजय जी का सरसी नगर में त्रिदिवसीय प्रवचन हेतु आगमन हुआ। मुनि श्री के पधारने पर सकल ग्राम सरसी में अत्यंत आनंद का वातावरण छा गया।

प्रतिदिन प्रवचन श्रवण कर अनेक लोगों ने व्यसन् आदि का त्याग कर अपने जीवन को सदगमयी बनाने का संकल्प लिया। प्रवचन में प्रतिदिन 3000 से अधिक श्रोतागण उपस्थित रहते थे। उक्त जानकारी श्री विनोद डांगी ने दी।

श्री सिरल सीर्थ छःरी पालक यात्रा सम्पन्न

अलवर : साध्वी डॉ. श्री प्रियदर्शना श्री जी म.सा. एवं डॉ. श्री सुदर्शना श्री जी म.सा. की निश्रा में दिनांक 17 फरवरी 2016 के शुभ मुहूर्त्त में लाभार्थी श्री जगदीश प्रसाद परमचंद जैन, गढ़ीसबाईराम के यहां से श्री सिरस तीर्थ के लिये संघ प्रयाण किया गया। दिनांक 20 फरवरी 2016 को श्री सिरस तीर्थ प्रांगण में तीर्थमाला परिधान एवं स्वामी तीर्थमाला परिधान एवं स्वामी वात्सल्य का आयोजन किया गया। पदयात्रा संघ अंतर्गत संगीतमय 64 इन्द्र कृत स्नान महोत्सव, शतः भक्तामर, गुरुगुण इक्कीसा पाठ एवं मांगलिक श्रावण प्रवचन परमात्मा भक्ति, प्रतिदिन संघ पूजा-पाद प्रक्षालन आदि अनेक धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

रतलाम में होगा
पूज्य आचार्यश्री का चातुर्मास

भीनमाल । सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. का आगामी चातुर्मास रतलाम में होगा ।

दि. 22 अप्रेल को भीनमाल में आयोजित एक विशाल समारोह में स्वयं पूज्य जैनाचार्यश्री ने हजारों भक्तों की उपस्थिति में यह घोषणा की। समारोह में लगभग सत्तर श्रीसंघों ने चातुर्मास के लिये भावपूर्ण विनती की । रतलाम के कोई तीन सौ से अधिक गुरुभक्त, विधायक श्री चैतन्यजी काश्यप के नेतृत्व में उपस्थित थे । यह चातुर्मास भी अ.भा. श्री सौधर्म वृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ के राष्ट्रीय परामर्शदाता श्री चैतन्यजी काश्यप परिवार की और से होगा । श्री काश्यप ने समारोह में विनती की एवं आपके सुपुत्र श्री सिद्धार्थ काश्यप ने भी लघुगीत सस्वर प्रस्तुत किया । चातुर्मास के लिये रतलाम की घोषणा होते ही सभी युवा वर्ग एवं भक्त हर्ष से नृत्य करने लगे एवं पू. गुरुदेव की जय-जयकार के नारों से समस्त प्रांगण गूंज उठा।

श्री संघ सौरभ

श्रीसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजीभाई वोरा का म.प्र.दौरा शानदार रहा राष्ट्रीय पदाधिकारियों तथा परिषद के राष्ट्रीय अग्रणियों का भी पूरे दौरे में साथ

श्री सौधर्म वृहत् तपोगच्छिय त्रिस्तुतिक जैन संघ के राष्ट्रीय पदाधिकारियों का प्रथम चार दिवसीय मध्यप्रदेश दौरा दि. 1 अप्रेल से 4 अप्रेल 2016 तक सम्पन्न हुआ

दौरे में उपस्थित सम्माननीय राष्ट्रीय पदाधिकारीगण

श्री वाघ जी भाई बोरा	राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री अरविन्द भाई देसाई	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री सुरेन्द्रजी लोढा	राष्ट्रीय महामंत्री
श्री रमेश भाई नडियाद	राष्ट्रीय संगठनमंत्री
श्री सुरेशजी तांतेड	प्रदेश अध्यक्ष (म.प्र.)
श्री मनोहरलालजी पौराणिक	राष्ट्रीय मंत्री तथा
श्री शांतिलालजी दसेडा	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

परिषद परिवार से

श्री अशोकजी श्रीमाल	राष्ट्रीय महामंत्री
श्री रमेशजी धाडीवाल	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री राजेन्द्रजी जैन दंगडावाला	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री शान्तिलालजी गोखरु	राष्ट्रीय प्रवक्ता
श्री शंशाकजी लुणावत	पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष तरूण परिषद
श्री बृजेशजी वोहरा	राष्ट्रीय सह प्रचार मंत्री
श्री मुकेश जैन झाबुआ	मेनेजिंग ट्रस्टी-मोहनखेडा

विशिष्ट उपस्थिती अपने-अपने नगरों में

श्री चैतन्य काश्यप रतलाम/श्री पारस जैन उज्जैन
श्री सुशील छाजेड/ श्री सुधीर लोढा/ श्री चिराग भंसाली
श्री अभय बरबोटा

प्रवास-प्रस्तावना

(प्रवास चिंतन-श्री वाघजी भाई)

प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ भगवान के जन्मकल्याणक पावन दिवस पर सुविशाल गच्छाधिपति वर्तमानाचार्य राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्त सेन सूरिश्वर म.सा. का आशीर्वाद लेकर नव चेतना के मूल मंत्र साथ में और मेरे सहयोगी अरविन्द भाई देसाई और रमेश भाई नडियाद के साथ अहमदाबाद से प्रस्थान किया-

मेरा यह मानना है की अध्यक्ष पद ग्रहण करने के बाद मैं और मेरी टीम मध्यप्रदेश का यह प्रथम प्रवास कर रही है ''यह मेरा दौरा नहीं हैं यह नवीन दौर की शुरूआत है ! प्रभु श्री आदिनाथ ने जीवन जीने की कला सिखाकर युगलीक धर्म का निवारण किया मैं भी पूज्य गुरुदेव के संदेश को नवचेतना जागृत करने के उद्देश्य से इस पावन दिवस का चयन कर आपके बीच आ रहा हूँ।

मैं पारिवारिक रूप से आप से मिलना चाहूँगा आपका परिचय प्राप्त कर समाज के संगठन को मजबूती प्रदान हो ऐसी नव नीति बनाने का प्रयास करूंगा।

आशा ही नहीं यह विश्वास है कि परिवर्तन के इस युग में पूज्य वर्तमानाचार्य का संबल पूर्ण आशीर्वाद हम सभी को नई उर्जा प्रदान करेगा !

जय आदिनाथ ! जय राजेन्द्र ! जय जयन्त।

दौरा विवरण

पारा दि. 3 अप्रेल 2016-प्रातः प्रथम शुरूआत

पारा नगर के तीर्थाधिपति श्री आदिनाथ का जन्म पूर्व दीक्षा कल्याणक का महान पावन दिवस हम सभी प्रभु की शोभायात्रा में शरीक हुए श्री संघ अध्यक्ष श्री मनोहर लालजी छाजेड , परिषद अध्यक्ष श्री आशिष कोठारी, श्री संघ के वरिष्ठ श्रेष्ठीजन प्रकाशजी छाजेड, प्रकाशजी तलेसरा सहित सैकड़ों ज्येष्ठ-श्रेष्ठ पुरूषों महिलाओं की उपस्थिति अनुमोदनीय है ! पारा नगर में संचालित अल्प बचत बैंक के माध्यम से अनेकों जन हितैषी योजनाओं, 6 मुमुक्षु आत्माओं का संयम मार्ग पर प्रशस्त होना।

भव्य जिनालय के दर्शन और पूज्य गुरुदेव की चातुमार्स स्थली को मेरा वंदन !

कार्यक्रम संचालन श्री सुरेशजी कोठारी ने किया।

झाबुआ – समस्त राष्ट्रीय पदाधिकारियों की शानदार अवगानी 52 जिनालय तीर्थ के दर्शन हम सबब का अहोभाग्य है !

श्री संघ अध्यक्ष श्री धर्मचन्द जी मेहता अनेक तीर्थों के ट्रस्टी श्री मुकेशजी नाकोडा होंडा वाले , श्रेष्ठीवर्य श्री मनोहरलालजी भंडारी, पूर्व परिषद अध्यक्ष । भंडारी मातृ हृदया सुश्राविका लीलादेवी भंडारी सहित समस्त समाजजनों की विद्यमानता रही। बालिकाओं द्वारा प्रभावी संगीतमय सांस्कृतिक प्रस्तुति की गई !

राणापुर – वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा. की इस पावन जन्म स्थली को प्रणाम करते हैं। दादा सिमंधर स्वामी के दर्शन वंदन से हम अपने आपको सौभाग्यशाली मानते हैं। बालिका देशना के संयम की भी अनुमोदना करते हैं।

श्री यतीन्द्र जयंत ज्ञान पीठ के परीक्षार्थियों को यहाँ पर पुरूस्कृत किया गया। संघ अध्यक्ष मुकेशजी नागौरी सहित अनेकों भावकों द्वारा स्वागत अभिनन्दन ।

जोबट – ढोल ढमाकों सी गूंज के साथ बस स्टेण्ड से चल समारोह पूर्वक जिन मंदिर के दर्शन समाज प्रमुख मांगीलालजी पंवार, ज्ञानचन्दजी, प्रदीपजी डुगंरवाल, सुरेश शीतलजी, अशोक, पंवार, द्वारा सभी का स्वागत वंदन । प्रभावी उपस्थिति के साथ बैठक सम्पन्न !

अलिराजपुर – स्व. कुंदनमलजी काकडीवाला की स्मृति के साथ बैठक को प्रांरभ किया गया, अनिलजी जैन द्वारा निर्माणाधीन नंदूरी तीर्थ का अवलोकन एवं तीर्थ की सराहना की गई । कार्यक्रम का संचालन जवाहरलालजी जैन द्वारा । परिषद अध्यक्ष श्री कमलेशजी काकडीवाला

श्री लक्ष्मणी तीर्थ, श्री नानपुर तीर्थ एवं तालनपुर तीर्थ, के दर्शन वंदन चैत्य वंदन, का लाभ मिला। तीर्थों पर चल रहे निमार्णकार्यो का अवलोकन किया तालनपुर तीर्थ में 150 एकासणा तपस्वीयों की भक्ति का लाभ लेकर प्रस्थान !

कुक्षी – श्री सिमंधर स्वामीजी के भव्य जिनालय का दर्शन कर सभी ने अपने आपको धन्य माना । पूज्य गुरूदेव राजेन्द्र सूरिश्वरजी. म. सा. द्वारा अग्नि के प्रकोप से बचाया यह नगर जहाँ से अनेकों मुमुक्षु आत्माओं ने संयम पथ को अंगिकार किया है । पूज्य वर्तमानाचार्य श्री ने इस नगर में चातुर्मास कर'' कल्पसूत्र की हिन्दी आवृत्ति का लेखन इसी नगर में किया ।

मैं इस नगर में हुए समस्त कार्यों से अपने आपको प्रभावित मानता हूँ ।

उसी अवसर पर मनोहरलालजी पौराणिक, रमेशजी धाडीवाल, अमृतलालजी जैन, प्रभावीचंद जैन, सहित अनकों श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित ।

पश्चात संतोषीलालजी मामा के निधन पर उनके निवास पर सांत्वना बैठक में भाग लिया।

बाग – राज राजेन्द्र जंयत कुटीर एवं पूज्य वर्तमानाचार्य श्री चातुर्मास की मैं भूरि- भूरि प्रशंसा करता हूँ । सुनील जैन डैडी सहित अनेकों संघ-परिषद के साथियों की यहाँ पर उपस्थिति थी ।

टांडा – आदिवासी बैंड के साथ भव्य नगर प्रवेश जुलुस, जिनालय के दर्शन। पूज्य वर्तमानाचार्य श्री के वर्ष 2016 चातुर्मास की जोरदार पूर्व विनती की तैयारियाँ । समस्त अतिथियों द्वारा उपाश्रय धर्मशाला मंदिर का अवलोकन किया गया । अनेकों महानुभाव चातुर्मास विनंति हेतु राजस्थान गए थे। फिर भी जोरदार स्वागत, श्री प्रकाशचन्द्रजी लोढा, पारसजी हरण एवं निर्मलजी श्रीमाल द्वारा स्वागत भाषण दिया गया ।

रिगंनोद – श्री संघ के अध्यक्ष श्री वाघजी भाई एवं समस्त राष्ट्रीय पदाधिकारियों की राजनेता के समान अगवानी गली-गली में पुष्पहारों से स्वागत तिलक श्रीफल का अर्पण, प्रतीक चिन्हों से सम्मान भी किया गया । रिगंनोद में वाघजी भाई ने कहा बहुत ही आत्मिय स्वागत हुआ है। यह मेरा स्वागत नहीं है । यह हमारे गुरुदेव के प्रतिनिधी के रूप में आपकी गुरु भक्ति का परिचय है । रिगंनोद नगर का स्वागत अतुलनीय है । रिंगनोद गुरूदेव के प्रति समर्पित नगर है । आप जब भी गुरूदेव को बुलाएगें उन्हें आना ही पडेगा ।

यहाँ की युवा शक्ति कार्य करने के प्रति दृढ़ है। संघ समर्पित इस नगर की अनुमोदना करने हेतु शब्द नही हैं। जयन्त सेन सुरिजी जहाँ पर पांव रखते है वह क्षैत्र तीर्थ बन जाता है । पावन ले जाता है ।

मैं आपका हूँ और राष्ट्रीय अध्यक्ष होने के नाते मैं आपके संघ का सदस्य हूँ । गुरु आज्ञा शिरोधार्य करना हमारा परम कर्तव्य है।

गुरुदेव कहीं पर भी चातुर्मास करें हम सभी समर्पण के साथ कार्य करें यही सच्ची गुरु भक्ति होगी। मातृशक्ति मजबूत है वो संस्कारदायी है ।

महिला परिषद अध्यक्ष शशिजी लुणावत द्वारा भी स्वागत किया गया। बाबुलालजी पंवार, शैतानमलजी बांठिया एवं श्री डांगीजी तीनों संघ वरिष्ठों का संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा अभिनदंन किया गया। गुजरात प्रांत के अरविन्द भाई देसाई द्वारा भी स्वागत किया गया ।

कार्यक्रम का आभार श्री आशीष भाई पंवार द्वारा किया गया । इस अवसर पर संघ का स्वामी वात्सल्य भी सम्पन्न हुआ ।

राजगढ़ श्री संघ बैठक रात्रि 8 बजे

श्री वाघजी भाई व्होरा, श्री अरविंदभाई देसाई, श्री रमेशभाई नडियाद, श्री अशोकजी श्री श्रीमाल, श्री रमेशजी धाड़ीवाल, श्री मनोहरलालजी, श्री मुकेशजी जैन, श्री राजेन्द्रजी जैन दंगवाड़ा वाला, श्री शांतीलालजी गोखरु, श्री सुरेशजी तांतेड, श्री दिनेशजी जैन, श्री शशांकजी लुनावत उपस्थित थे।

सर्वप्रथम–दीप प्रज्ज्वलन के साथ बैठक का शुभारम्भ बैठक में संघ के अध्यक्ष श्री मणिलालजी खजांची

परिषद अध्यक्ष–समस्त वरिष्ठगण, महिला परिषद्, बालिका परिवार

समस्त राष्ट्रीय पदाधिकारियों का स्वागत श्रीफल तिलक के माध्यम से

स्वागत उद्‌बोधन – श्री सुरेशजी तांतेड

पूज्य गुरुदेव राजेन्द्र सूरिजी म.सा. की अंतिम श्वांस स्थली, राजेन्द्र भवन में समस्त सम्माननियों का हार्दिक अभिनन्दन स्वागत करता हूँ। आपका आगमन समाज को एक नई प्रेरणा देगा ऐसा विश्वास है। पूज्य गुरुदेव के परमाणु यहाँ पर हैं। त्रिस्तुतिक समाज को नवीन ऊंचाईयां प्रदान करेगा।

श्री कांतिलालजी भंडारी

राजगढ़ राजगृही नगरी है। गुरुदेव के 5 चातुर्मास संघ पर हुए हैं। अभिधान राजेन्द्र कोष का एक भाग यहीं पर लिखा हुआ है। समस्त पदाधिकारियों को गुरुदेव श्री जयंतसेन सूरीजी म.सा. के द्वारा तरासे हुए हीरे कहकर स्वागत किया। तरुण परिषद की स्थापना स्थली यह राजेन्द्र भवन, राजगढ़ है।

समाज की पुरानी अच्छाइयों को जागृत करने की आवश्यकता है। वर्तमान में धार्मिक शिक्षण हेतु गुरुजियों को तैयार करना आवश्यक है।

श्री मनोहरलालजी पौराणिक

श्री वाघजी भाई के दौरे से निश्चित मक्खन निकलेगा और घी बनकर नई उर्जा का संचार करेगा। राजेन्द्र का गौरवशाली इतिहास रहा है। सकारात्मकता से सदैव बढना है। जीवन में नकारात्मकता नहीं आना चाहिए। हम हमारा आत्मबल मजबूत रखेंगे तो मोक्ष मुठ्ठी में है। दुनिया में सुधार धर्म से ही आना है। हम उनके अनुयायी हैं। जिन्होंने अपनी आत्मा को तपाया है। हमें अपने सभी कार्य देव, गुरु और धर्म का आलंबन लेकर करना है। सामाजिक परिस्थितियाँ हमें चिन्तनीय बना रही हैं। पर यह अष्ट कर्मो का बंधन है। जिसका निवारण धर्म का आलंबन लेकर कर रहें हैं।

तृतीय दिवस दि. 03/08/2016

बदनावर श्री संघ – बैठक प्रातः 10 बजे श्री राजेन्द्र सूरि शताब्दी स्कूल, बदनावर

संचालन उद्‌बोधन श्री महावीरजी चौरडिया....

बदनावर श्री संघ को राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पदाधिकारियों द्वारा किया गया दौरा हमारे लिये सौभाग्य का विषय है हम आपके ऋणी हैं। संघ के वर्तमान में 15/16 घर यहाँ पर हैं जिनमें जिनालय है। उपाश्रय प्रस्तावित है। संघ निरन्तर क्रियाशील है।

सर्व प्रथम स्वागत माल्यार्पण से संघ के अध्यक्ष श्री महावीरजी द्वारा उपस्थित वाघजी भाई, अरविन्द भाई, रमेशजी नडियाद वाले, रमेशजी घाडीवाल श्री सुशीलजी गिरिया, श्री राजेन्द्रजी जैन दंगवाड़ा वाले, श्री मुकेशजी जैन झाबुआं, वीरेन्द्रजी राठोड, शान्तिलालजी गोखरु, शैलेन्द्रजी, श्री सुरेशजी तातेंड, उद्‌बोधन में प्रदेश ईकाई की ओर से आप सभी का स्वागत करता हूँ। त्रिस्तुतिक संघ को हम कैसे उँचाइया प्रदान कर सकें यह हमारा चिन्तन का विषय है। पूज्य गुरूदेव 80 वर्ष की आयु में भी संघ के हित हेतु सदैव चितंनीय हैं। हम सदा अच्छा सोचें अच्छा होगा।

वाघजी भाई वोरा–उदबोधन

राष्ट्रीय पदाधिकारियों की ओर से बदनावर श्री संघ का मैं स्वागत करता हूँ। बदनावर संघ के स्नेह के कारण आज उपस्थित हुआ हूँ। मंदिर गुरू मंदिर के साथ–साथ बालकों की शिक्षा का मंदिर होना अनुमोदनीय है। बच्चों को शिक्षा अर्जित करवाना बहुत बड़ा कार्य है। छोटा गांव है पर संगठन मजबूत है इसकी आपको मैं बधाई देता हूँ।

स्कूल को सीबीएसई तक ले जाना चाहिये ताकी समाज में दृढता आए।

रतलाम श्री संघ बैठक दि. 3/04/2016 रविवार

श्री वाघजी भाई का स्वागत संघ अध्यक्ष श्री ओ.सी .जैन द्वारा किया गया

श्री चैतन्य जी काश्यप, श्री सुरेन्द्रजी लोढा, श्री अरविन्दजी देसाई, श्री शान्तिलालजी दसेड़ा, श्री सुरेश जी तांतेड, श्री रमेशजी धाडीवाल, श्री रमेशजी नडियाद, श्री सशील जी

गिरिया, श्री राजेन्द्र दंगवाडा वाला, श्री मुकेशजी जैन झाबुआ, श्री चिरागजी भंसाली ,श्री शशांकजी लुणावत, श्री शांतिलालजी गोस्वामी, श्री शैलेषजी औरा का स्वागत किया गया

महिला परिषद अध्यक्ष द्वारा स्वागत । रतलाम संघ अध्यक्ष श्री ओ.सी. जैन सा. उद्‌बोधन–गर्व के साथ आज सभी का अभिनदंन, स्वागत करता हूँ ।

वाधजी भाई के प्रथम आगमन से रतलाम गौरवांवित है ।

वाघजी भाई का दौरा और कार्य करने की शैली अत्यन्त ही तारीफ योग्य है । उन्होंने राष्ट्रीय सम्मेलन, प्रतिनिधी सम्मेलन भी आयोजित करवाये हैं । रतलाम नगर में प्रथम प्रिन्टिंग प्रेस स्थापित होकर अभिधान राजेन्द्र कोष का मुद्रण होकर प्रकाशित हुआ है रतलाम नगर अपनी गौरवशाली परम्परा को कायम रखते हुए त्रिस्तुतिक संघ की गौरवगाथा को आगे बढावे ।

श्री वाघजी भाई वोहरा

मैं और मेरा संघ शौभाग्यशाली है की चैतन्यजी काश्यप आपके संघ के सदस्य हैं । मैं यहाँ के समस्त वरिष्ठों को नमन करता हूँ । मेरा यह दौरा नहीं है नई रोशनी जागृत करने का दौर है संघ कार्यकर्ताओं से चलता है । त्रिस्तुतिक संघ में रतलाम का नाम सर्वोपरि है ।

रतलाम ने ज्ञान का दीपक प्रगटाया है । रतलाम नगर में यतीन्द्र सूरी जी को पीताम्बर विजेता की उपाधी दी है । रतलाम श्री संघ प्रत्येक कार्यों मे अगुवाई में रहा है। श्री चैतन्य जी के पास दृष्टी है चितंन है। पूरे संघ का प्रेम और चैतन्यजी आपके साथ हैं आपको कभी नजर नही लग सकती है । मै रतलाम श्री संघ से प्रभावित हूँ । त्रिस्तुतिक संघ का मस्तक सदैव ऊँचा रहेगा । मैं मालवा की गुरूभक्ति को नमन करता हूँ ।

संघ के राष्ट्रीय महामंत्री–श्री सुरेन्द्रजी लोढा उद्‌बोधन

रतलाम श्री संघ के अनेकों कार्य अनुमोदनीय हैं । यहा पर अभिधान राजेन्द्र कोष का मुद्रण पूर्व में हुआ है । समग्र मालवा श्री संघ गुरूदेव राजेन्द्र सुरीजी एवं वर्तमानचार्य राष्ट्र संत श्रीमद् विजय जयंतसेन सुरिश्वरजी म. सा. के प्रति निष्ठावान रहा है रतलाम नगर ने त्रिस्तुतिक संघ के सदस्य के रूप में श्री प्रेमसिंह जी राठोड के रूप में पहला केबिनेट मंत्री दिया था । चेतन्य काश्यप के रूप में रतलाम नगर ने श्री संघ को एक रत्न दिया है ।

श्री रमेशजी धाडीवाल

रतलाम श्री संघ चातुर्मास विनती की आज रिहर्सल कर रहा है । वाघजी भाई चातुर्मास की चासनी देखने नहीं निकले हैं । उनका परिचयात्मक दौरा है । मालवा का समर्पण एवं निष्ठा को सबूत की आवश्यकता नहीं है । मालवा का प्रवास बारम्बार आने की प्रेरणा हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष को दे रहा है । पहली बार ये इतिहास बना है कि मालवा श्री संघ ने गुरु महाराज के चातुर्मास हेतु मालवा झोन का निमंत्रण दिया है ।

श्री चैतन्यजी कश्यप

राष्ट्रीय अध्यक्ष का दौरा मापदंड के लिये नहीं है । यह संगठन एवं संघ की रचना को कैसे आगे बढाकर स्थापित करे इस हेतु है । श्री यतीन्द्र सूरिश्वरजी म.सा. ने गगलभाई सेठ के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया है । श्रीसंघ के राष्ट्रीय स्वरूप के बाद अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की स्थापना हुई । इन दोनों में रतलाम का अहम् योगदान रहा है ।

बड़नगर दि. 03/08/2016

सर्वप्रथम समस्त उपस्थित राष्ट्रीय पदाधिकारियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन, गुरुदेव के फोटू पर माल्यार्पण के पश्चात् कार्यक्रम का शुभारंभ–

स्वागत भाषण श्री राजेन्द्रजी जैन दंगवाडा वाला द्वारा दिया गया ।

संघ परिचय, श्री वीरेन्द्रजी राठौर द्वारा 102 वर्ष पूर्व राजेन्द्रसूरिजी का चातुर्मास हुआ । आचार्य श्री का पहला एकमात्र चातुर्मास हुआ । संघ सक्षम नहीं रहा फिर पूज्य वर्त्तमानाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिजी म.सा. के आशीर्वाद से समस्त निर्माण निरन्तर चले और संपन्न हुए। परिषद परिवार की ओर से स्वागत उद्‌बोधन श्री राजकुमारजी नाहर उपाध्यक्ष ने किया ।

श्री सुरेशजी तांतेड

प्रदेश श्री संघ की ओर से बडनगर श्री संघ का स्वागत । बड़नगर संघ की 2013 के चातुर्मास की गौरव गाथा अभिनन्दनीय है । आपकी सुगंध गांव–गांव तक फैले यही कामना ।

श्री वाघजी भाई वोरा

राष्ट्रीय त्रिस्तुतिक श्री संघ की ओर से संघ का हार्दिक अभिनन्दन । ....नगर की संघ की साधार्मिक भक्ति अनुकरणीय है ।

उज्जैन श्री संघ

नयापुरा तथा नमकमंडी श्री संघों का संयुक्त कार्यक्रम हुआ

संघ अध्यक्ष नयापुरा	:	**श्री सुशीलजी गिरिया**
सचिव	:	**श्री प्रकाशजी गादिया**
नमकमंडी अध्यक्ष	:	**श्री राजबहादुरजी मेहता**
सचिव	:	**श्री मदनलालजी रूनवाल**
परिषद् अध्यक्ष	:	**श्री मनीषजी पीपाड़ा, श्री नितेशजी बोहरा ने स्वागत किया**
संचालन	:	**श्री संजयजी कोठारी**
अतिथि परिचय	:	**श्री सुशीलजी गिरिया ने दिया**

दीप प्रज्ज्वलन के साथ बैठक का शुभारम्भ

स्वागत भाषण : राजबहादुरजी मेहता

समस्त आगत अतिथियों

श्री वाघजी भाई बोहरा, श्री सुरेन्द्रजी लोढा, श्री रमेशजी धाडीवाल, श्री पारसजी जैन, श्री अरविन्दभाई देसाई, श्री रमेश भाई माडिया श्री सुरेशजी तांतेड, श्री अशोकजी, श्रीश्रीमाल, श्री राजेन्द्रजी जैन दंगवाड़ा, श्री मुकेशजी जैन, श्री शशांकजी लुणावत, श्री शांतिलाल गोखरू, श्री शैलेषजी औरा का अभिनंदन किया गया।

उज्जैन श्री संघ का परिचय श्री शांतिलालजी रुनवाल ने देते हुए कहा कि-

सन् 1971 में पूज्य आचार्य श्री विद्याचन्द्रसूरीजी का चातुर्मास सकल श्वेताम्बर जैन समाज द्वारा कराया गया । उसी चातुर्मास में त्रिस्तुतिक संघ का गज ज्ञान मंदिर का शिलापूजन हुआ एवं गुरुमंदिर बना । इस वर्ष पूज्य वर्तमानाचार्य श्री के चातुर्मास का निवेदन कर रहे हैं ।

श्री सुरेन्द्रजी लोढा

श्री संघ की निरन्तर गतिशीलता बनी रहे इस हेतु यह दौरा किया जा रहा है । पूज्यश्री के विचारों को श्री संघों तक पहुँचाने हेतु यह दौरा है । समय के प्रवाह के साथ पूज्य

गुरुदेव राजेन्द्रसूरिजी के सिद्धांतों को प्रतिष्ठापन किया है । उज्जैन ऐतिहासिक नगरी है । उज्जैन में जैन समाज का होना यह 2500 वर्षों से हैं, ऐसा इतिहास में उल्लेख आता है । देश में गुरुमंदिर 300 बने हैं पर शोध संस्थान एक ही बना है, जो उज्जैन में है । ये सब वर्तमानाचार्य के प्रति आस्था एवं भक्ति का परिचायक है ।

श्री सुरेशजी तांतेड

यह दौरा काफी प्रभावी रहा है । समाजजनों में अति उत्साह है । मालवा में पूज्य गुरुदेव कहीं पर भी हों सभी को एक दूसरे का सहयोग करना चाहिये । गुरुदेव भी चाहते हैं कि मेरा समाज निरन्तर प्रगति करे । गुरुदेव आज भी समाज के लिये सैंकडों कि.मी. के विहार कर रहे हैं । इसलिये हम सभी समर्पण रूप से कार्य करें ।

श्री रमेशजी धाडीवाल

राष्ट्रीय पदाधिकारियों के दौरे से नई उर्जा का संचार हुआ है । मालवा की गुरुभक्ति अतुलनीय है । इसे सभी स्वीकार करते हैं । परिवार के माध्यम से आध्यात्मिक जागृति बढी है ।

श्री संजयजी कोठारी

हमें त्रिस्तुतिक संगठन को मजबूत करना चाहिये । लोगों का सर्वधर्म के प्रति लगाव बढ रहा है । मूल स्थान से वह अलग हट रहा है । इस और विचार होना चाहिये ।

श्री वाघजी भाई

उज्जैन अति प्राचीन नगरी है । अवन्ति पार्श्वनाथ का उल्लेख मिलता है । श्रीपाल मैना सुन्दरी की पहली ओली की शुरुआत यहीं से हुई है । सिद्धसेन दिवाकर सूरी द्वारा कल्याण मंदिर स्तोत्र की रचना यहीं पर हुई है । अपने मूल सिद्धांत एवं स्थान को नहीं भूलना चाहिये । दोनो श्री संघो का आत्मीय भाव समभाव प्रशंसनीय है ।

म.प्र. दौरा चौथा दि. 4 अप्रेल 2016 खाचरौद से प्रारंभ

सर्वप्रथम श्री सुरेशजी मेहता संघ अध्यक्ष के निवास स्थान पर नवकारसी ।

नवीन उपाश्रय भवन का अवलोकन, समस्त राष्ट्रीय पदाधिकारियों द्वारा / बैठक संचालन श्री डी.सी. नांदेचा - संघ अध्यक्ष श्री सुरेशजी मेहता एवं अन्य पदाधिकारियों द्वारा स्वागत शाल श्रीफल तिलक से किया । श्री वाघजी भाई, श्री रमेश भाई नडियाद, श्री अरविंद भाई, श्रीसुरेन्द्रजी लोढा, श्री सुशीलजी गिरिया, श्री शांतिलालजी दसेडा, श्री

राजेन्द्रजी दंगवाडा वाला, श्री सुरेशजी तांतेड़, श्री अशोकजी श्री श्रीमाल, श्री अशोकजी लुनावत, श्री शांतिलाल गोखरु, श्री व्रजेशजी बहोरा, नागदा जंक्शन पर स्वागत किया गया।

वर्ष 2013 में खाचरौद में पूज्य वर्तमानचार्यश्रीजी की 5 दिवसीय स्थिरता के समय नवीन उपाश्रय भवन निर्माण की प्रेरणा के साथ कार्य प्रारंभ हुआ। यहां पर सीबीएसई पेटर्न स्कूल भी वर्तमान में संचालित है।

श्री सुरेशजी तांतेड

सर्वप्रथम म.प्र. त्रिस्तुतिक संघ की ओर से संपूर्ण श्री संघ का अभिवादन। वर्तमान में संपूर्ण म.प्र. में एक ओर सिंहस्थ की धूम है। तो दूसरी ओर ग्राम-ग्राम नगर में पूज्य श्री के चातुर्मास विनंति की धूम मची हुई है। खाचरौद श्री संघ के कार्यो की ऊचाइयाँ उल्लेखनीय हैं। म.प्र. वह स्थल है, जहां आत्मीयता है, निष्ठा है और प्रत्येक श्री संघ का हंसमुख चेहरा सामने है।

श्री सुरेन्द्रजी लोढा

पुण्यजी का त्याग, तप, 200 ग्रंथों का लेखन, ढाई लाख कि. मी. के पैदल विहार की दक्षता दक्षिण भारत में 5 नए तिर्थों की स्थापना अनूठी अविस्मरणीय है। खाचरौद त्रिस्तुतिक संघ का वह प्रकाश पुंज है जो पूज्य राजेन्द्र सूरिजी के समय से दैदिप्यमान है। संघ को मूर्छा से जागृत करने का कार्य वर्तमान में कर रहे हैं। क्रियोद्धार के बाद का पहला चातुर्मास खाचरौद नगर में हुआ है। खाचरौद श्रीसंघ उत्कृष्ट क्रिया पालन के सर्वोच्च शिखर पर विराजमान है। नई प्रसन्नता, नई चेतना का शंखनाद यतीन्द्रसूरीजी ने इसी खाचरौद से किया है। समाज के विकास और सहृदय हेतु खाचरौद श्रीसंघ सदैव अग्रणी रहे।

श्री वाघजी भाई

नए दौर के साथ नवीन सुप्रभात समान यह दौरा है। महिला परिषद का बीजारोपण खाचरौद से हुआ है। आज वटवृक्ष का रूप ले चुकी है। हमारे गुरुवर अन्तर्यामी व वचनसिद्ध हैं। यहां प्रत्येक आचार्यों के चातुर्मास, यहां की निष्ठा यहां की धर्मप्रभावना आदि के बारे में कहने के लिये शब्द नहीं हैं। गुरुदेव के विचारों को आप सभी आगे बढावें

यही कामना । खाचरौद पुण्यशाली और पवित्रभूमि है ।

आभार राजेशजी बनवट द्वारा माना गया । जलमंदिर का उद्घाटन/राजेन्द्र शिक्षण समिति एवं राजेन्द्र जयंत विद्यापीठ का अवलोकन किया गया।

जावरा नगर

श्री राज राजेन्द्र वाटिका के सामुहिक दर्शन चैत्यवंदन, गुरुवंदन-

पू. सा. श्री सूर्योदयाश्रीजी, सा.श्री कैलाशजी एवं प्रवचनकार साध्वी श्री विपुलदर्शिता श्री जी की शुभ पावनकारी निश्रा ।

बैठक संचालन- **श्री अजितजी चत्तर उपाध्यक्ष** श्री संघ ने किया ।

क्रियोद्धार भूमि पौषाधशाला पर धर्मसभा-सभी पदाधिकारियों का स्वागत शांतिलालजी सा. दसेडा द्वारा

स्वागत भाषण - श्री बाबूलालजी तांतेड द्वारा

जावरा श्री संघ की पहचान पूज्य वर्तमानाचार्य श्री के नाम से ही है । संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष का हमें हमेशा सहयोग मिले यही कामना ।

श्री सुरेशजी तांतेड

जावरा नगर का श्रीसंघ त्रिस्तुतिक श्रीसंघ को सदैव उर्जा प्रदान करता रहा है । पूज्य पाद गुरुदेव सदा संघ और समाज की चिंता एवं चिंता को दूर करने हेतु चिंतन करते रहते हैं । पूज्य गुरुदेव का चातुर्मास उद्घोषणा महापर्व 22 अप्रैल को आ रहा है । आप सभी पधारें और पहली विनंति मालवा पधारने की करें । गुरुदेव की एक ही सोच है कि मेरा संघ सदैव प्रगति करे और वह प्रगतिशील बने ।

श्री सुरेन्द्रजी लोढा पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद एक ऐसी औषधि है जो सर्वे आत्म उत्थान हेतु प्रेरित करता है ।

जावरा श्रीसंघ का गुरुदेव से अटूट अनुकरणीय रिश्ता है । पू. गुरुदेव ने राणकपुर में आत्मोद्धार का संकल्प किया एवं मेवाड़ में गुरुआज्ञा लेकर यतिपने को दूर करने हेतु

जावरानगर में क्रियोद्धार किया । पूज्य श्री धरणेन्द्र सूरि सिद्धांतों को मिटा रहे थे । जावरा नगर में नवाबशाही रही पर किला परकोटा नहीं है । याने इस के नागरिक स्वयं बलशाली हैं। इसी कारण यहां के श्रावकों मे भी यह बल रहा हैं कि पूज्य राजेन्द्रसूरिजी ने जावरा नगर से अपने आपको उत्कृष्टता के शिखर पर पहुँचाया । पूज्य गुरुदेव की यशोगाथा कीर्ति देश नहीं विदेश तक पहुँची है । विधिवत राष्ट्रसंत की उपाधि जावरा नगर में पूज्य वर्तमानाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी को प्रदान की है ।

पू. सा. श्री विपुलदर्शिताश्रीजी

जैन दर्शन में हर तर्क का समाधान है । संघों में कितना ही विवाद् हो क्लेश हो पर

पूज्य गुरुदेव धैर्य के साथ तर्कपूर्ण तथ्यों से उनका हल कर देते हैं । हर श्रावक में गुरुदेव के प्रति श्रद्धा और भक्ति है । गुरुदेव जहां जाते है वहां मिट्टी भी सोना बन जाती है । राजस्थान में जागृत करना पडता है । मालवा सदैव जागृत रहता है । आपका दौरा अनेक उद्देश्यों के लिये हो रहा होगा । पर मैं चाहूँगी कि आप पूज्य साधु-साध्वजी की विहार व्यवस्था एवं उनके ज्ञानार्जन हेतु भी प्रयास करें ।

श्री वाघजी भाई वोरा

आज एक ऐसी पुण्य भूमि पर आना हुआ है जिसके बारे में मैं अपने कैसे विचार दूँ यह समझ में नहीं आता । पूज्य गुरुदेव ने इस नगर में क्रियोद्धार कर सारे देश को प्रकाश पुंज दिया है कि जैन साधु क्या है । उनका आचार विचार कैसे हो। वे कंचन-कामिनी से दूर रहते हैं । यहां जो क्रियोद्धार का वट वृक्ष है उसे भी नये रूप में प्रकट करना चाहिये। जावरा नगर का श्रावक कभी झुकता नहीं है। ये कठिनाईयों से कैसे जूझते हैं, ये जावरा से सीखना है । ''लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु अर्जुन के समान'' लक्ष्य रखना पड़ेगा । क्रियोद्धार भूमि से गुरु गच्छ शोभा बढ़े यही निवेदन ।

समस्त अतिथियों का शाल श्रीफल प्रतीक चिन्ह से बहुमान किया गया ।

आभार श्री- राजेन्द्रजी धाडीवाल द्वारा

इस अवसर पर श्री मनममोहन पार्श्वनाथ जिनालय के दर्शन का लाभ भी लिया गया।

साथ ही श्री राजेन्द्र वाटिका के दर्शन वंदन भी किये ।

श्री शांतिलालजी दसेड़ा ने यहां साधार्मिक भक्ति का लाभ लिया ।

दलौदा

स्वागत श्री संघ अध्यक्ष श्री अभयजी सुराणा, श्री सोहनलालजी सुराणा, अन्य वरिष्ठों द्वारा भी किया गया ।

नव परिषद अध्यक्ष : श्री विनोदजी पोरवाल

तरुण परिषद अध्यक्ष श्री विजयजी तातेड़ भी उपस्थित थे ।

स्वागत अभिनन्दन श्री संघ दलौदा के पदाधिकारियों द्वारा किया गया ।

महिला परिषद की बहिनों द्वारा भी स्वागत किया गया

स्वागत उद्‌बोधन : श्री राजेन्द्रजी सुराणा

दलौदा श्री संघ हर्षवत है की आज समस्त राष्ट्रीय पदाधिकारीगण हमारे नगर में पधारे हैं । हम चाहते हैं कि छोटे श्री संघ को भी थोड़ा समय मिले, फिर भी हम यहां पर एकजुटता के साथ समग्र जैन समाज के रूप में यहां पर कार्यक्रम करते हैं ।

सभी के प्रति पुन: बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री सुशीलजी गिरिया, प्रदेश अध्यक्ष नवयुवक परिषद

आज खुशी एवं गौरवान्वित हैं कि श्री संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय पदाधिकारियों की उपस्थिति में नवीन कार्यकारिणी घोषित की गई । साथ ही निवृतमान अध्यक्ष **विनोदजी पोरवाल** का भी स्वागत किया गया ।

रौनक **हस्तीमलजी** को अध्यक्ष एवं **प्रतीकजी धोका** को सचिव नियुक्त करते हैं।

श्री वाघजी भाई

दलौदा श्री संघ के समस्त ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, वरिष्ठों का स्वागत करता हूँ । इस अवसर पर

समस्त पदाधिकारियों का परिचय।

हमारे लिये छोटा या बड़ा कोई नहीं है संख्या से संघ को नहीं देखते हैं । गुरु भक्ति महत्वपूर्ण है । हमारे लिये एक व्यक्ति भी महत्वपूर्ण है । आपके गुरुमंदिर में गुरुदेव का फोटू आकर्षक है ।

संचालन एवं आभार विजयजी तांतेड़, तरुण परिषद् अध्यक्ष द्वारा किया गया ।

मन्दसौर नगर

महिला परिषद द्वारा मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ

श्री संघ अध्यक्ष : श्री राजेन्द्रजी हींगड़

जैन शिक्षा समिति सचिव : श्री राजेन्द्रजी जैन

परिषद अध्यक्ष : श्री वीरेन्द्र कुमार डोसी

महिला परिषद अध्यक्ष : श्रीमती भारती पोरवाल उपस्थित थीं ।

संचालन : श्री अशोकजी खाबिया ने किया

उपस्थित अतिथि : श्री वाघजी भाई, श्री अरविंद भाई

श्री रमेश भाई, श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा, श्री शांतिलालजी दसेड़ा

श्री सुरेशजी तातेड़, श्री सुशीलजी गिरिया, श्री अशोकजी जैन, श्री राजेन्द्रजी दंगवाडा, श्री राजेन्द्रजी सुराणा, श्री शांन्तिलालजी पोरवाल, श्री बृजेशजी बोहरा, श्री शशांकजी लुनावत, श्री सुधीरजी लोढ़ा

स्वागत भाषण : श्री राजेन्द्रजी हींगड़ द्वारा दिया गया । आपने कहा कि श्री वाघजी भाई एवं पदाधिकारी श्री जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. के प्रतिनिधि के रूप में आप पधारे हैं ।

दशपुरनगर के नाम से प्रसिद्ध शिवना नदी किनारे बसा हुआ । आगम संघ के रचनाकार श्री आर्यरक्षित सूरिजी की जन्म स्थली एवं पूज्य गुरुदेव श्री

राजेन्द्र सूरिजी के चातुर्मास से सुशोभित यह मन्दसौर नगर है ।

सुरेशजी तांतेड़ हम सभी मिलकर समाज को आग बढ़ाने में कृत संकल्पित हैं ।

पूज्य श्री 80 वर्ष की उम्र में भी समाज को पूर्णचेतना के साथ जागृत कर रहे हैं । साथ ही मैं प्रदेश श्री संघ की ओर से आप सभी का स्वागत अभिनन्दन करता हूँ ।

श्री वाघजी भाई

मन्दसौर जैन श्री संघ एवं जैन शिक्षण समिति का हार्दिक अभिनन्दन, स्वागत करता हूँ। संघ व्यवस्था संचालन हेतु मुझे अध्यक्ष बनाया है । मैं मालवा प्रदेश का दौरा चार दिनों से कर रहा हूँ जिसे श्री संघ में नए दौर की संज्ञा देता हूँ । 30-40 वर्षों से श्री संघ में सक्रिय भागीदारी मेरी रही है । श्री सुरेंद्रजी लोढ़ा जो मन्दसौर के रत्न और त्रिस्तुतिक संघ के कोहिनूर हैं । मुझे प्रत्येक नगरों में विशाल जिनालय एवं गुरुमन्दिर के दर्शन हुए हैं । श्री सुरेन्द्रजी जैन संघों की चलती फिरती लायब्रेरी है ।

मन्दसौर का कालेज एवं शिक्षण समिति के कार्य उत्कृष्ठ होकर उल्लेखनीय हैं । यहां पर राजेन्द्र भवन, गुरुभवन/जयन्त भवन को देखकर अपार हर्ष हुआ है ।

आपके कार्यों हेतु बारम्बार अभिनन्दन करता हूँ । एक बार पुन:सभी के प्रति बहुत-बहुत आभार, धन्यवाद ।

आभार श्री गजराजजी जैन, सचिव

मन्दसौर में

जैन शिक्षण समिति द्वारा संचालित बालवाडी से लेकर कालेज तक जहाँ बी.एड., डी.एड. तक की उच्च शिक्षा दी जाती है । ऐसे विशाल शिक्षण संस्थान का अवलोकन किया । सैंकडों की संख्या में उपस्थित समाजजन की उपस्थिति निर्माणाधीन जैन मंदिर एवं विशाल प्रवचन हाल एवं संत निवास देखने लायक रहे ।

उपरांत अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् की शाखा द्वारा राजेन्द्र विलास में श्री जयंतसेन शीतल नीर प्याऊ का उद्घाटन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजी भाई वोरा ने किया । परिषद् कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम आयोजित किया ।

मन्दसौर-प्रवास के प्रारम्भ में राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा ने अपने निवास स्थान पर श्री संघ तथा परिषद परिवार के समस्त राष्ट्रीय व प्रांतीय पदाधिकारियों का स्वागत किया तथा उनका दौरा करने हेतु आभार प्रदर्शन किया ।

उत्साह से मनाया
महावीर जयंती पर्व

पारा । पारा में त्रिदिवसीय महावीर जन्मोत्सव कार्यक्रम के तहत बुधवार को महावीर जयंती धूमधाम से मनाई गई । जियो और जीने दो के नारों के साथ नगर में सुबह प्रभातफेरी निकाली गई । प्रभात फेरी दादा आदेश्वर-शंखेश्वर-सिमंधर धाम मंदिर पर पहुँची जहां पंचरंगी ध्वज का वंदन गीत के साथ सम्मान किया गया । महावीर जयंती के अवसर पर पारा के मूल नायक आदेश्वर दादा प्रभु, महावीर स्वामी तथा विश्व पूज्य प्रातः स्मरणीय दादा गुरुदेव राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की आकर्षक अंगरचना की गई । स्थानीय राजेन्द्र नवयुवक परिषद के महामंत्री श्री सुशील छाजेड़ ने बताया कि महावीर जयंती पर दिन भर के कार्यक्रम त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ तथा परिषद की समस्त शाखाओं के नेतृत्व में हुए ।

दोपहर में गुरूज्ञान मंदिर में राजेन्द्र कुमार कोठारी द्वारा महावीर पंच कल्याणक पूजन पढ़ाई गई । इसके पूर्व सुबह सर्वप्रथम भक्तामर, गुरू गुण इक्कीसा, गुरूगुणानुवाद तथा गौतम इक्कीसा का आयोजन हुआ जिसकी प्रभावना परिषद परिवार द्वारा वितरित की गई । सुबह वासक्षेप पूजन के बाद भगवान का अभिषेक हुआ जिसका लाभ राजेन्द्र कोठारी परिवार ने लिया । भगवान की चंदन पूजा का लाभ राजेन्द्र कोठारी परिवार तथा पुष्प पूजा का लाभ राजेश कोठारी परिवार ने लिया वहीं प्रकाश कोठारी परिवार ने आरती और जितेन्द्र कोठारी परिवार ने मंगलदिवा का लाभ लिया।

शाम करीब 4 बजे प्रभु महावीर के चित्र के साथ नगर के मुख्य मार्गों से होते हुए वरघोड़ा निकाला गया जिसमें समाज के प्रत्येक घर से भगवान महावीर के चित्र के समक्ष मंहुलियां की गई। वरघोड़ा गुरु ज्ञान मंदिर में पहुँचकर एक धर्मसभा में तब्दील हो गया। धर्मसभा का संचालन करते श्रीसंघ अध्यक्ष मनोहरलाल छाजेड़ ने प्रभु महावीर के उपदेशों का

आज के समय में भी महत्व बताते महावीर के मार्ग पर चलने की बात कहीं। युवा कलाकार विभाष ए जैन ने प्रभु महावीर पर लिखी स्वरचित काव्य गीत गाकर खूब तालिया बटोरी । शाम को स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया जिसका लाभ समाजसेवी प्रकाशचंद्र केश्रीमलजी रांका परिवार ने लिया।

राणापुर । परम पूज्य राष्ट्रसंत गच्छाधिपति श्री आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. पावन प्रेरणा से विरेंद्र कुमार रतनलालजी जैन की ओर से रानापुर नगर में मधुकर शीतल नीर के नाम से स्थाई वाटर कूलर (प्याऊ) लगाया गया । उद्घाटन कार्यक्रम में विशेष रुप से श्रीसंघ अध्यक्ष श्री दिलीप सकलेचा, श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद् की प्रदेश इकाई की अध्यक्ष श्रीमती पद्मा सेठ, श्री सोहनलाल सेठ, श्री चन्द्रसेन कटारिया, श्रभ रमेशचन्द्र नाहर, श्री मोतीलाल सालेचा, श्री इंदरमल कटारिया, श्री प्रकाश सालेचा, श्री रजनीश नाहर सहित अन्य अतिथिगण उपस्थित थे ।

भगवान आदिनाथ का जन्म व दीक्षा कल्याणक दिवस धूमधाम से मनाया

पारा । प्रथम तीर्थंकर भगवान आदेश्वर दादा का जन्म एवं दीक्षा दिवस पारा में धूमधाम एवं अनेक धार्मिक गतिविधियों के साथ मनाया गया ।

पारा परिषद के महामंत्री सुशील छाजेड़ ने बताया कि अलसुबह सर्वप्रथम भक्तामर पाठ, गुरुगुण इक्कीसा, गुरुगुणानुवाद तथा गौतम इक्कीसा से धार्मिक कार्यक्रमों की शुरूआत हुई । इसके पश्चात् चैत्य प्रवाड़ी निकाली गई। मंदिरजी के धार्मिक कार्यक्रमों के बाद 10 बजे भगवान आदिनाथ के चित्र के साथ शोभायात्रा निकाली गई जिसमें समाज के प्रत्येक घर से गहुली की गई। शोभयात्रा पुन: श्रीगुरुज्ञान मंदिर पहुंची जहां धर्मसभा का आयोजन किया गया । पारा श्रीसंघ महामंत्री राजेंद्र कोठारी ने चैत्यवंदन करवाकर कार्यक्रम की शुरूआत की । स्वागत भाषण श्रीसंघ अध्यक्ष मनोहर छाजेड़ ने दिया । कुक्षी से पधारे नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रमेश धाड़ीवाल ने प्रदेश के दौरे पर पधारे अभा, श्री वृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक संघ के अध्यक्ष श्री वाघजी भाई वोरा अहमदाबाद, उपाध्यक्षद्वय श्री अरविंद भाई, श्री मोतीलाल दसेड़ा, संगठन मंत्री श्री रमेश जी व्होरा नड़ियाद, महामंत्री श्री सुरेंद्र लोढ़ा मंदसौर, मप्र इकाई के अध्यक्ष श्री सुरेश तांतेड़ राजगढ़, परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोक श्रीश्रीमाल इंदौर, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री राजेंद्र दंगवाड़ा, यतींद्र भवन पालिताणा के ट्रस्टी तथा दौरा प्रभारी श्री

मुकेश जैन का सकल श्रीसंघ से परिचय करवाया । इसके बाद राष्ट्रीय अल्प बचत मंत्री श्री प्रकाश छाजेड़ पारा, श्रीसंघ एवं परिषद परिवार द्वारा पधारे सभी अतिथियों का स्वागत किया गया । कार्यक्रम का संचालन श्री सुरेश कोठारी ने किया एवं राजेंद्र कोठारी ने आभार माना ।

राष्ट्रीय अध्यक्ष वाघजी वोरा ने धर्मसभा को संबोधित करते पारा श्रीसंघ की जमकर तारीफ की। अपने उद्‌बोधन में श्री वोरा ने पारा को एक झंड़ा और एक डंडा वाला श्रीसंघ बताया और हर क्षेत्र में अग्रणी रहने के लिए पारा समाज एवं परिषद को बधाई दी।

पारा श्रीसंघ द्वारा सुबह का स्वामीवात्सल्य आयोजित किया गया वहीं प्रकाश चंद्र छाजेड़ की ओर से दोपहर में ठंडाई का लाभ लिया गया दोपहर में ही महिलाओं ने सामुहिक सामायिक का आयोजन किया, साथ ही आदिनाथ पंच कल्याणक पूजा ज्योति प्रकाश रांका परिवार की ओर से पढ़ाई गई । शाम को स्वामीभक्ति का लाभ प्रकाशचंद्र राजमल तलेसरा परिवार द्वारा लिया गया । प्रतिक्रमण के बाद चौविसी का आयोजन किया गया । बालिका परिषद द्वारा भगवान की आकर्षक अंगरचना की गई ।

इस अवसर पर बस स्टेण्ड पर श्री आदिनाथ प्याऊ की स्थापना की गई । जिसका शुभारंभ डॉ. के एस डोंडवा, चौकी प्रभारी, श्री बी आर बघेल, प्रधान आरक्षक श्री रूपसिंह भूरिया, पत्रकार श्री वासुदेव शर्मा, श्री दीपेश जैन, श्री ओमप्रकाश सोनी, श्री अमृत लाल राठौर, श्री सौरभ जोशी आदि की उपस्थिति में सरपंच श्रीमती इन्दूबाला डामोर ने किया, श्री राजेन्द्र तरुण परिषद के सदस्यों ने भी पशुओं के लिए पानी की व्यवस्था के लिए पात्रों को वितरण किया ।

झकनावदा (मनीष कुमट)– प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी प. पूज्य वर्तमान आचार्य जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से झकनावदा स्थानीय श्री आदिनाथ जैन मंदिर में श्री आदिनाथ जन्म कल्याणक महोत्सव बड़ी ही धूम-धाम से मनाया गया। मंदिरजी में प्रात: से ही भक्तों का ताता लग गया भक्तजन सुबह से मंदिर में कतार लगाकर भगवान केसरीयानाथ की केसर पूजन की भक्तों ने बढ-चढ कर आरती का चढावा लिया इस अवसर पर प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी राजगढ मित्र मण्डल ने पैदल श्री संघ राजगढ से झकनावदा निकाला जिसमें सैकड़ों भक्तों ने बढ़चढ कर हिस्सा लिया पैदल संघ की अगवानी में श्री जसकरण मन्नालाल कोठारी परिवार द्वारा नगर प्रवेश पर पैदल यात्रियों का पैर धोकर तिलक लगाकर स्वागत् किया व वहीं सेठिया परिवार ने फल फ्रूट का स्टाल लगाकर स्वागत् किया व संघ का स्वागत् बेण्ड बाजों व ढोल के साथ परिषद् साथियों द्वारा गरबा नृत्य कर किया व

संघ को नगर के प्रमुख मार्गो में घुमाते हुए मंदिरजी पर जाकर भगवान की आरती कर संघ प्रमुख का श्रीसंघ अध्यक्ष श्री मनोहरलाल राठोर, व्यवस्थापक श्री कनकमल माण्डोत द्वारा शाल श्रीफल माला पहनाकर किया गया श्री आदिनाथ जन्म कल्याणक महोत्सव में बामनीया, पेटलावद रिंगनोद करवड टाण्डा, राजगढ, धार, झाबुआ, पारा आदि श्री संघों ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर कान्तिलालजी भण्डारी राजगढ़, विनय भण्डारी, प्रणय भण्डारी, अजीत मेहता आदि उपस्थित थे। इस शुभ अवसर पर स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया।

ध्वजारोहण सम्पन्न

पैदमीरम तिर्थ। अति प्राचीन श्री पेदमीरम तीर्थ में नूतन द्विखंडीय त्रिशिखरीय मेघनाद मण्डप सहित जिनालय का प्रथम वर्ष ध्वजारोहण दिनांक 21 फरवरी 16 को अपार जनमेदिनी की उपस्थिती में सानंद संपन्न हुआ।

इस अवसर पर तीनों अमर ध्वजा के लाभार्थी परिवार द्वारा पूजा एवं स्वामीवात्सल्य का आयोजन रखा गया। जिसका पधारे हुए भक्तों ने लाभ लिया।

अमर ध्वजा के लाभार्थी

मूलनायकजी श्री आदिनाथ भगवान की ध्वजा शा महेन्द्रकुमारजी छगनलालजी कबडी परिवार भीमावरम-सायला

श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ भगवान की ध्वजा शा नथमलजी खुमाजी अंबागोय चौहान परिवार, नरसापुर-बागरा

श्री नाकोडा पार्श्वनाथ भगवान की ध्वजा छगनराजजी नगरराजजी वजावत परिवार तणुकु आहोर ने लाभ लिया उक्त जानकारी श्री महेन्द्र सी. कबड़ी ने दी।

पारा। पूज्य आचार्य श्री के 33 वें पाटोत्सव के उपलक्ष्य में अपने गृह नगर पारा में गुरु गुणानुवाद सभा में गुरुदेव श्री के सकल संघों पर असीम आशीर्वाद की संक्षिप्त व्याख्या श्री विभाष जैन पारा ने अपने शब्दों में एक स्वरचित काव्य पाठ के माध्यम से की। साथ ही इस काव्य पाठ को बागरा में विराजित आचार्य श्री के पावनश्री चरणों में उपस्थित होकर उन्हें समर्पित किया।

पाटोत्सव पर गुरु गुणानुवाद, सामायिक एवं सात यात्रा का आयोजन

राजगढ (दिनेश मामा) – प.पू. राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. के 33 वें. गच्छाधिपति पाटोत्सव पर साध्वीश्री पुण्यदर्शनाश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में गुणानुवाद सभा, सामूहिक सामायिक एवं चैत्य परिपाटी कर सामूहिक आरती का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर गुणानुवाद सभा में साध्वी श्री पुण्यदर्शनाश्रीजी ने कहा कि मेरे पूज्य गुरुदेव सरल स्वभावी, साहित्य सृजक, समाज एकता शिल्पी, प्रतिष्ठाचार्य एवं संघ शिरोमणी हैं। वे बडे ही धीर, गंभीर एवं साहित्य प्रेमी हैं। आचार्य श्री अपने यशस्वी संयम जीवन काल में अनेकों स्तवन, सज्झाय, स्तुति की रचना कर जिन शासन को महिमा मंडन किया। साथ ही अनेकों जिन मंदिरों व गुरु मंदिर की अंजनशालाका प्रतिष्ठा कर इतिहास बनाया। गुरुदेवश्री द्वारा अनेक श्रावक श्राविकाओं को दीक्षा अंगीकार कर त्रिस्तुतिक जैन

श्रीसंघ में इतिहास बनाया है जो अनुमोदनीय है । आचार्य श्री के गुणगान करने के लिए हमारे पास शब्द कम पड़ जायेंगे फिर भी उनके कार्य की गुणगाथा कम नहीं होगी । जैसे आचार्यश्री का संयम जीवन आगे बढता जा रहा है उसी गति से गुरुदेवश्री का प्रभाव श्रीसंघ में बढता जा रहा है । इस अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी श्री बाबूलाल मामा, श्री कांतिलाल भण्डारी, श्री विनोद डांगी, श्री हर्ष बाफना आदि ने भी गुरुदेवश्री के संयम जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके साथ बीते क्षणों का संस्मरण सुनाया । साथ ही इस अवसर पर 150 श्रावक श्राविकओं ने सामूहिक सामायिक की जिन्हें प्रभावना श्री अनिलकुमार मनोहरलालजी खजांची परिवार द्वारा वितरित की गई । दोपहर में आचार्यश्री की दीर्घायु की मंगलकामना करते हुए श्री राजेन्द्रसूरि स्वर्गारोहण पुण्य भूमि पर श्री जयंतसेन बहु मण्डल द्वारा श्री अष्टप्रकारी पूजन पढायी गयी ।

जैन पाठशाला प्रभारी श्री रोहित जैन ने बताया कि सायंकाल 7 बजे तरुण परिषद द्वारा पाठशाला के बच्चों के साथ चैत्य परिपाटी नगर के प्रमुख मार्गों से होती हुई श्री महावीरजी मंदिर पहुंची । जहाँ पर मूलनायक श्री महावीर स्वामी भगवान की सामुहिक आरती कर गुरुदेवश्री की पुण्यभूमि पर सामुहिक गुरुवंदन कर पाठशाला के विद्यार्थियों को प्रभावना वितरित की गई । साथ ही दूसरे दिन पाठशाला के 50 बच्चों द्वारा सामुहिक सामायिक की गई । इसके पूर्व प्रात: परिषद भवन पर श्री मांगीलाल मिश्रीमलजी सराफ परिवार की ओर से दो क्विंटल मिठाई का वितरण किया गया एवं तरुण परिषद द्वारा शासकीय हॉस्पिटल सरदारपुर पर मरीजों का फल, मिठाई एवं बिस्किट वितरित किये गये एवं जीवदया करते हुए चिटियों व सूक्ष्म जीवों को अन्न खिलाया गया एवं परिषद भवन पर प्रबंधक दिलीपजी भण्डारी द्वारा

आकर्षक अक्षत गहुंली कर पक्षियों को चुगने हेतु रखी गई ।

शाखा परिषद अध्यक्ष श्री विनोद डांगी ने बताया कि राजगढ स्थित गुरुदेव श्रीमद विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की स्वर्गारोहण पुण्य भूमि से सिद्धाचल तीर्थ के प्रतीक स्वरूप शत्रुंजयातवार श्री मोहनखेडा तीर्थ की चौविहार बेला कर ऐतिहासिक सात यात्रा का शुभारम्भ साध्वीश्री दमिताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री पुण्यदर्शनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म.सा. के मंगलाचरण से हुआ । प्रात: 6 बजे श्री राजेन्द्र भवन से प्रथम सामुहिक यात्रा बैण्ड बाजों व जय जय श्री आदिनाथ के जयकारों के साथ आरंभ हुई जो नगर के प्रमुख मार्गों से होते हुए जय तलहटी पहुंची जहाँ पर प्रथम चैत्यवंदन, इसके पश्चात श्री जयंतसेन म्यूजियम पर श्री शांतिनाथ भगवान की मूर्ति स्थापित कर चैत्यवंदन पश्चात श्री मोहनखेडा तीर्थ पहुंचकर श्री रायण पगलियाजी पर चैत्यवंदन, मूलनायक श्री आदिनाथ भगवान के सम्मुख 9 स्वस्तिक, 9 खमासमणा, 9 लोगस्स सूत्र का काउसग्ग कर चैत्यवंदन कर व पुंडरिक स्वामीजी का चैत्यवंदन कर पुन: राजेन्द्र भवन राजगढ पहुंचकर तपस्वियों ने 1 यात्रा पूर्ण की । इसी प्रकार तपस्वियों द्वारा 2 दिन में चौविहार बेला कर 7 यात्रा पूर्ण की ।

पू. गुरुदेव श्री के 63 वें दीक्षा दिवस पर श्री महावीरजी मंदिर में राजेन्द्र जैन पाठशाला के 70 विद्यार्थियों द्वारा सामुहिक स्नात्र पूजन पढाया गया । इसके पश्चात परिषद परिवार की ओर से प्रभावना वितरित की गई एवं श्री शांतिनाथजी मंदिर में श्री जयंतसेन बहु मण्डल द्वारा भी स्नात्र पूजन पढायी गयी व श्री राजेन्द्र कॉलोनी में स्थित श्री नाकोडा मंदिर में कॉलोनी के बच्चों द्वारा भी स्नात्र पूजन पढायी गयी ।

अनवरत तपस्या-जाप का क्रम जारी

रतलाम : राष्ट्रसंत श्रीमद् जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. को समर्पित 'गुरु रहे सदा स्वस्थ' की मंगल कामना में रतलाम त्रिस्तुतिक श्रीसंघ द्वारा नीमवाला उपाश्रय में स्वसंचालित वार्षिक धर्मानुष्ठान के तहत नित्य धर्माराधना जारी है। जिसमें पौषध, सामायिक, प्रभु पूजन, प्रतिक्रमण तथा नवकार जाप श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ के जाप व श्रीमद् राजेन्द्रसूरिजी के जाप चल रहे हैं।

श्री संघ अध्यक्ष डॉ. ओ.सी. जैन व धर्मानुष्ठान संयोजक श्री पारसमल खेड़ावाला ने उक्त जानकारी देते हुए बताया कि 'गुरु रहे सदा स्वस्थ' धर्मानुष्ठान के तहत लगभग 250 से अधिक साधकों द्वारा उपाश्रय में नित्य साधना-आराधना की जा रही है। गुरुदेव के स्वास्थ्य को लेकर श्री संघ द्वारा देशभर में अनेक कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। स्थानीय श्रीसंघ द्वारा यह अनूठी धर्माराधना आयोजित की गई है, जो गुरुदेव के 80 से 81 वें वर्ष तक निरंतर जारी रहेगी। इस वार्षिक धर्मानुष्ठान के तहत अभी तक 114 दिनों में 1500 प्रतिक्रमण, 1300 सामायिक, 3800 से अधिक तथा छोटे बच्चों द्वारा 400 से अधिक प्रभु पूजन, नित्य नवकार महामंत्र में 10 लाख, प्रति वीदी 9 व प्रति सुदी 15 को श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु के 5 लाख व प्रति सुदी 7 को श्रीमद् राजेन्द्रसूरिजी के 3 लाख जाप व 100 से अधिक पौषध हो चुके हैं। रचनात्मक एवं संस्कारारोपण प्रभारी श्री अनोखीलाल भटेवरा ने एक अन्य जानकारी में बताया कि 15 वर्ष से कम उम्र के लगभग 50 बालक बालिकाओं द्वारा प्रभु पूजन की जा रही है। सर्वाधिक उपस्थिति के आधार पर इनको पूजा परिधान भेंट किए जाएंगे। गुरुदेव का वर्ष 2016 का चातुर्मास रतलाम में हो, इसके लिए लड़ी रूप में नित्य आयंबिल किए जा रहे हैं। बच्चों के स्कूल अवकाश में गायन, संगीत, प्रभु अंगरचना, गहूली आदि हेतु शिविर आयोजित किए जाना निश्चित हुआ है।

श्री खेड़ावाला ने बताया कि राष्ट्रसंतश्री से आगामी चातुर्मास रतलाम में किए जाने की विनंति हेतु रतलाम श्रीसंघ से काफी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं 22 अप्रैल (चैत्र सुदी 15) को भीनमाल (राज.) गए।

भेंट मिलेगी

'सामायिक-समभाव की साधना' नामक पुस्तक प्रतिदिन सामायिक करने वाले आराधक निम्नांकित पते पर पोस्ट कार्ड लिखकर या 09892007268 मो.नं. पर पुस्तक के नाम के साथ पता एस.एम.एस. कर भेंट मंगवा सकते हैं। श्री जे.के. संधवी द्वारा सम्पादित इस पुस्तक में सामायिक की विधि के साथ ही सामायिक बीमा योजना एवं सामायिक के बारे में विशेष जानकारी दी गयी है।

गिरिराज की यात्रा गुरुराज के साथ

प्रस्तोता : अशोक श्री श्रीमाल

वह कितना पावन और आल्हादकारी क्षण होगा जब अति उज्जवल अद्वितीय रत्नों की प्रभा से अत्यन्त शोभायमान सर्वत्र सिद्धों का आवास सिद्धाचल तीर्थ, गिरिराज की यात्रा का सुयोग गुरुराज, करुणा के सागर, संयम् मार्गदर्शक सुविशाल गच्छाधिपति, हृदय सम्राट पूज्य आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्त सेन सूरीश्वरजी महाराज सा. की पावन सान्निध्यता के साथ हो !

शहनाई, ढोल और जयकारों के बीच पूज्य श्री यात्रियों के साथ तलेटी पहुँचे । भावपूर्वक चैत्यवंदन तलेटी वंदन कर समीप ही समवसरण मंदिरजी के प्रांगण में 'गिरिराज वधामणा' का कार्यक्रम आरम्भ हुआ नव्वाणु यात्रा आयोजक परिवार 'लल्लुभाई जैचन्द्र दोशी अति हर्षोल्लासित था, महिला, पुरुष के हाथों में बधामणा के सजे थाल लेकर सभी राजशी वेशभूषा में आये थे। गुरुदेवश्री व मुनिभगवंतों ने वंदन-स्तुति से सभी को भाव विभोर कर दिया ।

नव्वाणु यात्रा के साथ-साथ छःरि पालक संघ और शत्रुन्जय तीर्थ पर ध्वजा फहराने का सौभाग्य अपने आप प्राप्त हो जाता है । आयोजक संघवी परिवार स-सम्मान ध्वजा चढाने के भाव लिये पूज्य गुरुदेव के साथ गिरिराज की यात्रा आरंभ कर रहा था, साथ ही था हजारों गुरुभक्तों का समूह, जो नव्वाणु यात्रा कर रहे थे, और वो भी जो थराद से गिरनार-शत्रुन्जय तीर्थ यात्रा पर आये थे । गिरिराज पर आगे-आगे शहनाई वादक शहनाई की मधुर ध्वनी से पर्वतराज को गुंजायमान कर रहे थे गुरुदेव की पालकी उँचाईयों को तै कर रही थी । गुरुदेव के विचारों की श्रृंखलाऐं उच्चतम भावों की ओर गतिमान है ।

मुनिभगवंतो का समूह भी लगातार साथ चल रहा है मेरा भी परम सौभाग्य है कि गिरिराज की यात्रा गुरुराज के साथ करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। ठीक 12 वर्ष पूर्व भी ऐसा ही अवसर तब भी मुझे मिला था उस समय पूज्य मुनिराज नित्यानंदजी म.सा. व सिद्धरत्न विजय जी म.सा. भी साथ-साथ थे। भौर होने में समय था पहाड़ से पालिताणा की ओर देखने पर नजारा कुछ और ही नजर आ रहा था । पूरे शहर की लाइटिंग ऐसे लग रही थी मानो आसमान बीच उतर गया हो, भावों ने शब्दों का रूप लिया, लबों पर आये शब्दों ने कविता का रूप ले लिया और आरंभ हो गया भावों का झरना ।

आज भी गुरुदेव नयनों के रास्ते हृदय में पर्वतराज की स्थापना कर रहे थे बादलों की

तरह उमडते-घुमडते भाव रत्न राशी के रूप मे संग्रहित होने लगे : सूर्य देवता भोर होने की दस्तक दे रहे थे । सम्पूर्ण रास्ते में जय-जय श्री आदिनाथ व दादा गुरुदेव के जय-जयकार के नारे गुंजायमान् थे। मार्ग में नव्वाणु यात्रियों का चढना-उतरना बदस्तुर जारी था । गुरुदेव के दर्शन से यात्री धन्य हो रहे थे ।

एक-एक कदम दादा को नजदीक ला रहा था ।

जैसे-जैसे उपर की ओर बढ़ रहे थे-नीचे दृष्टिपात करने पर गहरी-गहरी खाईयाँ (गड्ढे) नजर आ रहे थे । संकेत दे रहे थे प्राणी तु नरक-निगोट के गहरे गड्ढे से बाहर आगया और मानव रूप शिखर, तुझे मिला । इसके सहारे मोक्ष की चोटी पर पहुँच जा जहाँ अनंत-अनंत आत्मा पहुंची है । जीवन के इस गड्ढे में पुन: पहुँच गया तो पता नहीं कब वापस आयेगा-उपर की मजिंल आसान नहीं है, तेरा सम्बंध इन गड्ढों (नरक-निगोद) से अनंतोनंत वर्षो का रहा ये तुझे आसानी से नहीं छोडेंगे ये तुझे ललयामी नजर से देख रहें हैं ।

विचारों की श्रृंखलाओं के आलम्बन ने सिद्धाचलनिका प्रथमद्वार रामपोल तक पहुँचा दिया। डुंगर पर पहुंचने पर मन व आत्मा शांति का अनुभव कर रही थी। प्रभु शान्तिनाथजी का सामुहिक चैत्यवन्दन कर आगे की ओर बढ़ते हुए चारों ओर अतिप्रसन्नचित्त चेहरों का समूह दृष्टिगोचर हो रहा था । रायण का विशाल वृक्ष कितना पुण्य संयम कर रहा है - कहने को तो वनस्पतिकाय जीव है पर प्राणी मात्र का कल्याण करने वाले 'दादा' की कितनी असीम कृपा है इस जीव पर जो असंख्य वर्षो से दादा एवं दादा के भक्तों को छाया प्रदान कर रहा । अनेकों पुण्यशक्तियों की स्पर्शना अनुभव कर चुका यह वृक्ष ।

दादा के पगलिये की पूजा अर्चना, वंदना, चैत्यवंदन के स्वर चारों ओर गुंजायमान् थे । ठीक सामने पुंडरिक स्वामीजी का जिनालय पुंडरिक स्वामी प्रभु आदिनाथ के प्रथम गणधर थे जिन्होंने पांच करोड मुनियों के साथ इस भूमि पर सिद्धत्व को पाया । धन्य ऐसी सिद्ध आत्मा जिन्होंने इस भूमि को पावन किया और धन्य है यह भूमि जिन्होंने इस सिद्ध आत्मा को आंचल दिया -

पुण्डरिक स्वामीजी का चैत्यवंदन कर 'दादा के दरबार में जाने की लौ लगी थी दादा के दीदार से तन-मन रोमांचित हो उठा-अहा कैसी शान्तचित्त मुद्रा में दादा विराजमान है, शायद इसलिए इतने उँचे डुंगर पर बैठे ताकि प्राणीमात्र पर प्रभु की दृष्टि पड़ जाय और सभी प्राणियों का कल्याण हो ।

धन्य हो गई यह नयना जिन्होने दादा के दर्शन किये, धन्य हो गये थे, जब जिन्होंने दादा की स्तवना की, धन्य हो गया यह तन मन जो दादा के दरबार में उनके सम्मुख है ।

बहुत ही भक्ति भाव से पूज्य गुरुदेव के

साथ सभी मुनिभगवंत सह यात्रियों ने चैत्य वंदना की।

आज मेरा भी अति सौभाग्य था कि गुरुदेव मुझे यहाँ लाये, दर्शन करवाये - पूज्य गुरुदेव जिस प्रकार अंगुली थामे यहाँ साथ-साथ लाये यह साथ मोक्ष डगर तक निभाना, वहाँ भी आप इसी तरह ले जाना गुरु की पावन निश्रा में जिनेश्वर देव की पूजा अर्चना -दर्शन-वंदन अवश्य सद्गति देते हैं।

सभी मन में अपार हर्ष लिये बाहर नेमीनाथ प्रभु की डेरी पर आये! गिरनार के राजा जिन्होंने इस भूमि के कण-कण में सिद्ध को देखा-कहीं मेरे पैरों से इन सिद्ध आत्माओं की विराधना नहीं हो जाय-यहाँ तो पैर रखने का स्थान तक नहीं है यही विचार कर उनकी देह वापस लौट गई। ऐसा परमात्मा का चैत्यवंदन कर आत्मा में संतृप्ती आई।

अब बारी थी उस जिनालय पर ध्वजा लहराने की-विधान है जो पुण्यशाली छः रि पालक संघ लेकर शन्त्रुजय तीर्थ पर आता है उसे यहाँ ध्वजा फहराने का दुर्लभ अवसर प्राप्त होता है। आज थराद निवासी लल्लुभाई जैचन्द्र दोषी का परिवार अत्यन्त आनंदित है -उपकारी गुरुदेव ने यह लाभ दिलाया नव्वाणु यात्रा के साथ-साथ बारह गाँव के छःरि पालक संघ की पूर्णाहुति थी।

दादा के दरबार सम्मुख पूज्य गुरुदेव के पावन कर-कमलों से ध्वजा वासक्षेप तथा मंत्रोच्चारण हुए पश्चात विधिकारक ने सम्पूर्ण अष्ठ प्रकारी द्रव्य से विधि विधान के साथ पूजा कर' जय-जयकार नारों' की नांद के साथ सघंवी परिवार ने ध्वजा फहराई। दादा की यात्रा दर्शन वदंन से मन मे अति उल्लास था। यद्यपि आत्मा को इस स्थान से राग हो रहा था और शरीर अपना धर्म पालन कर रहा था-दादा को हृदय मे बिठाकर वापसी हो रही थी।

यात्रियों का आना जाना लगातार बढ़ रहा था आने वालों की संख्या मे बेतहासा वृद्धि हो रही थी।

गुरुदेव के चेहरे पर गजब की आभा थी-एकदम तरोताजा महसूस कर रहे थे चारों ओर नजरे घुमा रहे थे- पूरी पर्वतश्रृंखला के श्रृंगार को देख रहे थे सुवर्ण के शिखरों से शोभायमान यह पर्वत सब पर्वतों का स्वामी होने के कारण मानो मुकुटों से मंडित हो।

स्वर्ण के, चांदी के तथा रत्नों के शिखरों से आकाश को प्रभायुक्त और एक साथ भूमि और अंतरिक्ष को पावन गिरिराज पाप को निंकर करने वाला है।

स्वर्णगिरी-उदयगिरी, बजागिरी आदि 108 श्रेष्ठ व उन्नत शिखरों के कारण इसकी शोभा न्यारी है।

पूज्य गुरुदेव के साथ-पूज्य मुनिभगवंत श्री नित्यानंदजी म.सा. पूज्य श्री प्रसमसेनजी म.सा. पूज्य निपुण विजयजी म.सा. पूज्य श्री पवित्र रत्नजी म.सा. आदि ठाणा सहित

साध्वीजी भगवंत तथा साथ ही हमारे पुण्य प्रबलता से गुरुदेव के साथ मैं, अशोक श्रीश्रीमाल परिषद के राष्ट्रीय सह प्रचारक श्री बृजेशजी बोहरा नागदा, निरज सुराणा, राजेन्द्र रुनवाल जिनेन्द्र बाठियॉ साथ-साथ में गुरुदेव खजाने में प्रकृति की रंगलीला देख रहे थे। भावों-विचारों का पूँज हृदय स्थल रूपी एकत्रित हो रही थी

इस समस्त दृष्यों को देखकर हमारे मन में भी जिज्ञासाऐं उमड़, घुमड़ रही थी । एक बहुत ही सुनहरा पल था- गुरुदेव से जिज्ञासाओं को शान्त करने का अद्‌भुत व अविस्मरणिय पाठों को हम भी सहेजना चाहते थे । गुरुराज के साथ गिरिराज की यात्रा को सार्थकता की और ले जाना चाह रहे थे-हम हमारी जिज्ञासाऐं अभिव्यक्त कर रहे थे-निचें उतरते समय दाहिनी और पूर्व दिशा का नजारा अद्‌भुत था शत्रुंजय नदी सफेद रजत चादर ओढ़े नजर आ रही थी । पूर्व दिशा से सूर्य देवता अपनी स्वर्ण किरणों से सिद्धों को नमन कर रहे थे ।

गुरुवर के मुख से प्रस्फुटीत शब्दों का झरना बहने लगा-उधर देखा-सूर्य की स्वर्णीम किरणे शत्रुंजय नदी पर गिर रही है। ऐसा लग रहा मानों रजत की थाल मे स्वर्णीम अलंकारों को लेकर शत्रुंजय पर्वत के पैरों का पक्षाल कर रही है । समुद्र से मिलने के लिए आतुर पुण्य सलिला गिरिराज की स्पर्शना करती हुए प्राणियों के लिए पुण्य रेखा प्रतीत हो रही है ।

चन्द्रिका के समान उज्ज्वल जल तरंगों के शब्दों से सुशोभित शत्रुंजय नदी सचमुच में भाग्यशाली है-एक तरफ सूर्य की किरणें तो दूसरी तरफ दादा के आभा मण्डप की किरणें इस पर गिर रही हैं । मैने कहां गुरुदेव आज तो ये और भी भाग्यशाली है । क्योकि आद्यात्मिक ज्ञान रूपी सूर्य गुरुदेव (जयंत) की आभा मन्डल की शितल किरणों का भी वह रसपान कर रही है । गुरुदेव मुस्करा दिये गुरुदेव से यह पूछने पर कि इस भूमि पर बार-बार आने का मन क्यों करता है ?

गुरुदेव कहते-हमारी आत्मा का इन अनंत उपकारी सिद्ध आत्माओं से पूर्व भवों मे कभी-न-कभी नाता रहा है । इस शाश्वत भूमि पर भी यह आत्मा अनंतों बार आयी होगी- हमारा इस भूमि से इसीलिए लगाव रहना कि मन मोक्ष मार्ग का स्टेशन है, यहाँ पर विराजमान अनतानंत सिद्ध आत्मा यह स्टेशन और शक्ति दे रही कि, हे आत्मा तेरा अंतिम और मुख्य लक्ष्य यही है-इन सिद्ध आत्माओं में तूँ भी सम्मिलित हो बार-बार आने से हमें हमारा लक्ष्य सदैव स्मरण रहता है ।

गुरुदेव कहते है-शत्रुंजय से श्रेष्ठ अन्य कोई नही !

इस पर्वतराज पर जिनेश्वर प्रभु का सच्चे मन से ध्यान करने से परमानंद और परम सुख की प्राप्ति होती है ।

यहाँ शीतल और सुगन्धित जल से ही

श्री आदिनाथ प्रभु का पक्षाल करते है । वे इस शुभ कर्म के कारण निर्मल बन जाते है । पंचामृत से अभिषेक करने वाला जीव पचंम गति को प्राप्त कर सकता है ।

चन्दन से पूजा करने वाला अखण्ड लक्ष्मी से युक्त होकर किर्ती रूपी सुगन्ध के पात्र बनते है ।

केसर-कस्तूरी से पूजन करने वाला जगद् गुरु बनते है । प्रभु का सुगन्धित पुष्प से अत्यन्त आदर पूर्वक जो पूजन करता वह सुगन्धित देह वाला बनकर तीनों लोको में रहने वालों के लिए पूजनीय बना धूप-पूजा, दीप पूजा, वासक्षेप पूजा जिसकी सुगंन्ध और प्रकाश चारों और फेले ऐसे विश्वास बन सकते हैं ।

पूज्य गुरुदेव ने बताया कि इस तीर्थ क्षेत्र में एक और सिद्ध आत्मा-परम पावन धाम है,-मोक्ष महल का मार्ग है यहाँ पर हजारों की सख्या मे सयंमी आत्माऐं भी आती है । हम श्रावकों के लिए तो दोहरा लाभ-सिद्धभूमि के साथ-साथ गुरु भगवंतों के दर्शन-वंदन, प्रवचन आदि का लाभ मिल रहा है-इनकी सेवा हमें किस तरह अतिरिक्त लाभ देगी -

गुरुदेव फरमाते हैं कि शुभ भावना वाले उत्तम पुरुषों का अन्य स्थान पर किया हुआ पाप यहाँ धुल जाता पर इस तीर्थ भूमि पर किया गया पाप द्वेष वज्र लेप हो जाता है ।

अत: इस पावन भूमि पर दूसरों की निंदा, द्रोह करने का विचार पर स्त्री लोलुपता, पर द्रव्य पर दृष्टि, मिथ्यात्वियों का संसर्ग नही करना चाहिये ! मन को विकार रहित बनाना चाहिये ।

इस शत्रुंजय तीर्थ पर आकर जो साधुजनों की सेवा नही करता उनका धन, जीवन सब निरर्थक है ।

'सत्पुरुष द्वारा सुपात्र में दिया गया दान महान पुण्य का हेतु है ।'

इस पुण्य भूमि पर किया गया पुण्य बहु गुणित होता है।'

'जो लोग अन्न, जल, वस्त्र, उपाश्रय, आसन, पात्र से मुनियों की सेवा करते वे अपनी कांति से देवताओं को भी जीत लेते हैं, विशुद्ध भाव से सेवा करनेवाला तीसरे भव मे मोक्ष पाता है ।

'गुरु की आराधना स्वर्ग और विराधना नरक की और ले जाते हैं । सद्गुरु कौन ? सच्चा गुरु भक्त का कर्तव्य क्या है ?

सद्गुरु वह जो पाँच महाव्रतों को धारण करने वाला है - जो धीर है, सहनशील है, परीषकों को सहन करने वाले हैं, जो जिनाज्ञा के विरुद्ध एक कदम भी नहीं चलते हों - राग द्वेष रहीत हो, धर्म का उपदेश देकर सच्चा ज्ञान दे सके ।

गुरु दीपक है, वे आपके हृदय के मिथ्यात्व रूपी अन्धकार को दूर कर सकते हैं और सन्मार्ग का दर्शन करा सकते हैं और वे पथ प्रदर्शक बनकर सकुशल पार करा

सकते हैं। आजकल व्यक्ति भ्रम मे जीता है- उसे यह समझना चाहिये आत्मज्ञान सिर्फ सद्गुरु के पास मिलता है हर व्यक्ति आत्मज्ञान नहीं दे सकता अगर कुगुरु के हत्थे चढ़ गये तो तुम्हे भ्रमीत कर देगा । रुपया-धन माल चलता कर देगा । व्यक्ति को साधु और स्वादु की परख होना चाहिये- भौतिक सुख सुविधा और हाथ की सफाई मात्र भ्रम है । हीरा पाकर कंकर सहेजना निरी मुर्खता है । हमें हमारी आस्था श्रद्धा पर पूर्ण विश्वास होना चाहिये समर्पणता और समकितता किसी लक्ष्य के नजदीक ले जाती, वहीं विश्वास का डगमगाना भटकाव पैदा करती है ।

तथा सच्चा श्रावक सद्गुरु को छोड़ अन्यत्र कुगुरु के पास नही जाता है । अगर वह जाता है तो न केवल अपनी आस्था और श्रद्धा को धोखा दे रहा, बल्कि अपने आप को धोखा दे रहा होता है ।

सच्चा श्रावक विनयवान होता है वह आत्महित, प्राणीमात्र हीत और समाज हीत को सर्वोपरी रखता-व्यक्तिगत स्वार्थ से हमेशा दूर रहता है । अहंकार से दूर रहकर दूर दृष्टि अपनाता है। एक गुरु भक्त गुरु की भावना को समझता है । उनकी भावनाओं का सदैव आदर करता है । उन्हें ठेस नही पहुचाता है। सच्चा श्रावक संघ-समाज परिवार का नेतृत्व करता है । वह समाज के भविष्य में अपनी भूमिका निभाता है । यह सच है जो समाज के भविष्य में अपनी भूमिका निभाता है । यह सच है जो समाज को तोड़ना चाहता अथवा समाज के सकारात्मक कार्यो मे विध्न डालता है, वह व्यक्ति पहले टूटता है । संघ समाज तो जयवंता है ।

संघ, समाज व्यवस्था का एक हिस्सा है। सुश्रावक उन्नत समाज की रीढ़ है । हम अथवा हमारी व्यक्तिगत लालसा अल्प समय के लिए होती है । लेकिन इसका प्रभाव या यह कहें कि दुष्प्रभाव समाज पर गहरा असर छोड़ जाती है । यदि आप समाज के अग्रगण्य हैं जो आपको प्रत्येक कदम उठाने के पूर्व यह सोच लेना चाहिए कि इस के परिणाम संघ समाज का भावी पीढ़ी पर क्या होंगे ।

श्री बृजेशजी बोहरा के यह पूछने पर कि परिषद के लिए आपका क्या संदेश है तो पूज्य गुरुदेव श्री का कहना था, परिषद अनुशासन, संगठन की मजबूत संस्था और गुरु के प्रति समर्पित कार्यकर्ता की पूंजी है । जो सकारात्मकता, सक्रियंता और आपसी स्नेह इसे आगे बढ़ाते हैं ।

मैं परिषद एवं समाज में एक ऐसी सरंचना चाहता हूँ जिससे अंतिम पंक्ति का व्यक्ति भी बिना किसी बाधा के धर्म ध्यान में जुड सकें । उसे आर्थिक या अन्य परेशानी नहीं हो ।

वर्ग पहेली 48

– साध्वी श्रुतिदर्शनाश्री

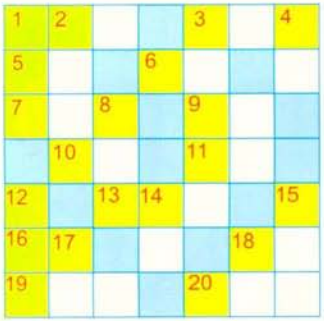

दाएं से बाएं

1. एक श्वांशोच्छवास में साढे सतरा बार जन्म-मरण जीव का (4)
3. धर्माराधना में अंतराय रूप काठिये कितने होते हैं? (3)
5. क्रिया के आठ दोष में तीसरा दोष कौनसा है। (2)
6. आयुर्वेद के अनुसार तीन दोषों में से एक का नाम ? (2)
7. आजकल सब्जियों में किसका उपयोग ज्यादा होता है ? (3)
9. मग्न का पर्यायवाची ? (2)
10. अष्टांग योगों में एक का नाम ? (2)
11. नदी के बहाव आने को कहते हैं ? (2)
12. 5 ज्योतिष्क देवों में से एक ? (3)
16. कपड़े धोने के साबुन का नाम ? (2)
18. आदिनाथ भगवान के पुत्र कितने थे ?(2)
19. एक जमीकंद का नाम ? (3)
20. कृष्ण वासुदेव कौन-से नाम के तीर्थंकर बनेंगे? (3)

ऊपर से नीचे-

1. नाम, द्रव्य, स्थापना भाव ये चार किसके भेद (प्रकार) हैं ? (3)
2. रहस्यमय बात कहलाती है? (4)
3. एक प्रसिद्ध ग्रन्थ का नाम जिसमें पीछे पुत्र आता है? (5)
4. जिद का पर्यायवाची ? (2)
8. सिद्ध भगवान आत्मा में क्या करते हैं? (3)
12. दावानल, आदि की उपमा किसे प्रदान की गई है ? (8)
14. क्रोध का विपरीत गुण कौनसा है? (2)
15. पशु महावीरस्वामी के प्रथम गणधर का नाम क्या था ? (3)
17. हिंसक एवं जंगली जानवर का नाम बताईये? (2)
18. सम्यक्त्व के पांच लक्षणों में से प्रथम लक्षण कौनसा ? (2)

उत्तर सीट-47

1 द	2 श	वै	3 का	4 लि	क		5 पे
6 या	म		7 जा	ल		8 का	प
		9 च			10 खो	प	रा
11 का	12 म	ना		13 बा	ज		ल
14 उ	र		15 रा	ई		16 थ	
17 स	न	18 त		19 स	20 त	स	ई
ग		21 त्व	चा		22 रू	प	

॥ तीर्थ मंडन श्री सुमतिनाथ स्वामिने नमः ॥
॥ गुरुदेव प्रभु श्रीमद्विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी गुरुभ्यो नमः ॥

प्रकृति की पावन गोद में निर्मित

राजेन्द्र नगर तीर्थ

तीर्थ प्रेरक -
सुविशाल गच्छाधिपति आचार्य देवेश
श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.

दर्शनार्थ अवश्य पधारें ।

इस परिसर की परिधि में...

- श्री सुमतिनाथ जिन मन्दिर
- श्री राजेन्द्रसूरि गुरु मंदिर (विश्व की सर्वप्रथम खड़ी प्रतिमा)
- जयन्तसेन साधना मन्दिर
- गुलाब बाग
- जयन्तसेन स्वाध्याय वाटिका
- धर्मशाला एवं भोजनशाला

निमन्त्रक

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मंदिर तीर्थ ट्रस्ट, देवीसपेटा, जिला–नेल्लोर (आ.प्र.)
मोबाईल : 09440279500

परिषद प्रांगण से

चौराऊ : परमपूज्य सुविशाल गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्चरजी 'मधुकर' के पावन सान्निध्य में तरुण परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक चौराऊनगर में सम्पन्न हुई । चौराऊसंघ द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष अभय बरबोटा का स्वागत किया गया । अभय जी द्वारा बैठक में आयोजित विषय सभा के बीच रखे गए । प्रवचन के पश्चात् आयोजित बैठक में गुरुदेव ने सभी पदाधिकारियों को धर्मलाभ दिया और आगे की रुपरेखा बताई । मुनि मंडल ने भी मार्गनिर्देश प्रदान किया ।

बैठक की अध्यक्षता श्री अभय बरबोटा ने की । बैठक में पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री प्रतिक जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष करण मोरखिया, राष्ट्रीय संगठन मंत्री विशाल गोखरू, राष्ट्रीय शिक्षा मंत्री साकेत गिरिया, राष्ट्रीय प्रचारमंत्री पवन कटारिया उपस्थित थे । आभार तरुण परिषद राष्ट्रीय महामंत्री अर्पित खाबिया ने माना । उक्त जानकारी पूर्व राष्ट्रीय सहमंत्री निलेश लोढा ने दी ।

तरूण परिषद की रा. पदाधिकारियों का राजगढ़ दौरा सम्पन्न

राजगढ : राष्ट्रसंत श्री जयन्त सेनसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन तरूण परिषद के राष्ट्रीय पदाधिकारीगण मध्यप्रदेश के चार दिवसीय प्रवास पर तरूण परिषद राजगढ शाखा की बैठक परिषद भवन पर सम्पन्न हुई ।

जिसमें राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अभय बरबोटा ने कहा कि तरूण परिषद संस्थापक पूज्य गुरुदेवश्री ने तरूण परिषद को सक्रिय एवं संगठन को गति प्रदान करते हेतु हमें प्रवास करने को कहा है इसी उद्देश्य को लेकर प्रवास हो रहा है । किंतु राजगढ शाखा पूर्व से ही सक्रिय शाखा है

जो समाज व नवयुवक परिषद के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कई सामाजिक एवं धार्मिक आयोजनों में सक्रियता के साथ अग्रसर है जो अनुमोदनीय है । साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा मंत्री श्री साकेतजी गिरिया ने कहा कि राजगढ में पाठशाला का भी आयोजन बहुत अच्छा चल रहा है जहाँ नगर के तीन क्षेत्र में अलग अलग जगह 150 विद्यार्थियों का अध्ययन चल रहा है जो अनुमोदनीय है । शाखा से इसी तरह आगे भी ज्ञानायतन संस्कार शिविर एवं राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित ज्ञानपीठ परीक्षा में अधिक से अधिक सम्मिलित हों । राष्ट्रीय महामंत्री श्री अर्पितजी खाबिया ने कहा कि शाखाऐं मानव सेवा के साथ जीवदया के कार्य भी कर तरूण परिषद को नई ऊचाई की ओर अग्रेसित करें । अभी ग्रीष्मकाल अवसर पर घर-घर पर पानी के पात्र बांटकर पक्षियों को जल से शीतलता प्रदान करें ।

इस अवसर पर नवयुवक परिषद राष्ट्रीय कार्यालय प्रभारी श्री दिनेश मामा ने परिषद को निर्देशित करते हुए कहा कि दोशभर की सभी शाखाओं को कॉमन मिनिमम प्रोग्राम देकर शाखाओं को सक्रियता प्रदान करें । जिससे शाखाऐं सक्रिय होकर उन कार्यों को उत्सुकता से सफलता प्रदान करेगी ।

बैठक के प्रारंभ अवसर पर श्री बरबोटा, श्री खाबिया, श्री साकेत गिरिया, श्री मामा का बहुमान शाखा परिषद की ओर से किया गया । साथ ही नगर के पूर्व राष्ट्रीय पदाधिकारी श्री प्रणय भण्डारी, श्री हार्दिक तातेड़ का भी बहुमान किया गया । एवं नवयुवक परिषद कार्यकारिणी सदस्य श्री कीर्ति भण्डारी ने राजगढ परिषद दवारा विगत समय में किये गये कार्यों की विवेचना की गई तथा आगमी कार्यो के बारे में अवगत कराया । परिषद के कार्यकारिणी सदस्य श्री दिलीप भण्डारी ने जीवदया के क्षेत्र में चल रहे शाखा के कार्यों के बारे में पदाधिकारियों को बताया । राष्ट्रीय पदाधिकारियों द्वारा शाखा को पक्षियों के पानी हेतु मिट्टी के पात्र वितरित किये गये । इस अवसर पर पाठशाला के सफल संचालन हेतु पाठशाला प्रभारी श्री रोहिल जैन का बहुमान राष्ट्रीय पदाधिकारियों द्वारा किया गया । कार्यक्रम का संचालन तरूण राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष एवं शाखा अध्यक्ष श्री हर्ष बाफना द्वारा किया गया । आभार हार्दिक तातेड़ द्वारा व्यक्त किया गया । इस अवसर पर शाखा के विनय भण्डारी, अमित भण्डारी, अर्पित सराफ, सोमिक मंडवाडा, हर्षल खजांची, अक्षय जैन, साहिल मामा आदि उपस्थित थे ।

हुबली : श्री राजेंन्द्र जैन नवयुवक परिषद हुबली के सहमंत्री संजय सेठ ने कर्नाटक के मुख्यमंत्री को लिख कर कर्नाटक में महावीर जयंती को सरकारी पैमाने पर मनाए जाने के निर्णय के लिए धन्यवाद दिया । पत्र में बताया गया की आपने भगवान महावीर के सन्देश 'जिओ और जीने दो' के महत्व को समझकर एवं जैन समाज की भावनाओं की कद्र कर इस बजट में जो निर्णय लिया है उसके लिए कर्नाटक का समस्त जैन समाज आपको तहेदिल से धन्यवाद देता है।

परिषद् ने मनाई महावीर जयंति

कुक्षी । तरुण परिषद की राष्ट्रीय इकाइयों द्वारा शाखाओं का प्रवास व संगठनात्मक कार्य करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अभयजी बरबोटा, महामंत्री श्री अर्पितजी खबिया, शिक्षामंत्री श्री साकेतजी, कोषाध्यक्ष श्री हर्षजी बाफना के नेतृत्व में तरुण परिषद शाखा कुक्षी का पुर्नगठन बड़े ही उल्लास, उमंग के साथ केन्द्रीय प्रतिनिधि श्री स्वस्तिक जैन, अध्यक्ष श्री अनिश जैन, उपाध्यक्ष श्री सिद्धार्थ जैन (मोदी), कोषाध्यक्ष सिद्धार्थ चौधरी, सचिव श्री ऋषभ व प्रचारमंत्री श्री महावीर जैन एवं सभी सदस्यगण को नियुक्त किया गया ।

श्री अभय बरबोटा ने बताया कि जो हमारी भावी पीढ़ी भटक रही है, उन्हें मधुकर संस्कार ज्ञानायातन में के भेजकर सुसंस्कारीत बनाए । शिक्षित बनाने हेतु यतिन्द्र जयन्त ज्ञानपीठ परीक्षा के माध्यम से बच्चों को धार्मिक शिक्षण हेतु प्रेरित करे । जीवदया हेतु इन सारे प्रकल्पों को लेकर प्रत्येक शाखा को जाग्रत किया जा रहा है । श्री पुराणिकजी ने बताया कि स्वाध्याय हमारे जीवन का अंग है । स्वाध्याय से ही हमारे जीवन को सुसंस्कारित बना सकते हैं । राष्ट्रीय इकाई के मंत्री श्री मनोहरलालजी पुराणिक, परिषद म.प्र. इकाई की शिक्षा मंत्री सु.श्री सवीता बहन, नवयुवक परिषद के अध्यक्ष सुशीलजी जैन, केंद्रिय सदस्य श्री जयेशजी चौधरी की उपस्थिति में चुनाव सम्पन्न हुए ।

राष्ट्रीय इकाईयों द्वारा श्री पुराणिकजी एवं सुश्री सविता बहन का बहुमान किया गया। राष्ट्रीय इकाईयों द्वारा जल पात्र भेंट किये गए । आभार अनीष जैन ने माना । उक्त जानकारी स्वस्तिक जैन ने दी ।

हुबली । हुबली शाखा अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् की स्थानीय शाखा एवं श्री पार्श्वनाथ जैन युवा मंडल ने मंगलवार को महावीर जन्म कल्याणक के उपलक्ष में बारदान गली में गौतम प्रसादी का आयोजन किया कार्यक्रम का शुभारंभ पुलिस निरीक्षक गणपति गुडाजी ने भगवान महावीर के छायाचित्र पर पुष्प अर्पित कर किया । साथ ही श्री जैन मरुधर संघ के अध्यक्ष पुखराज संघवी, सचिव अमृत जैन ने लोगों को प्रसादी वितरित कर कार्यक्रम की शुरुआत की । परिषद् द्वारा पुलिस निरीक्षक का सम्मान किया गया। इस दौरान अमृत जैन ने कहा कि परिषद् के सदस्यों ने अल्पकाल में ही कई सामाजिक सेवा कार्यों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया है । सभी युवा सदस्य सक्रिय होकर धार्मिक व सामाजिक कार्यों में हिस्सा लेते है। इस अवसर पर परिषद् के अध्यक्ष ललित मांडोत, सचिव मिलेश जैन, योगेश जैन, हर्षल जैन, अंशुल साकरिया, जिनेश कांकरिया, रिकेश जैन, राजेश जैन व अन्य सदस्य उपस्थित थे ।

सुरत : श्री राजेन्द्र जैन तरुण परिषद सुरत शाखा अनुकंपादान का भव्य आयोजन किया गया। जिसमें समाज सभी परिवारों से करीब 700 से अधिक टिफिन एकजित कर सुरत के अलग-अलग विस्तार में झुपड़पट्टी व पुटपाथ पर रहने वाले भुखे लोगों को मिठाई, भोजन, फल, बिस्कीट आदि वस्तु प्रदान की गई। परिषद के 50 सदस्यों ने इस कार्य में उत्साह से भाग लिया।

जैन सिद्धांतों का पालन कर बचा जा सकता है : बिमारियों से

राजगढ (दिनेश मामा) – प.पू. राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद परिवार द्वारा जीवन नेचर केयर एवं साईस सेन्टर, मुम्बई, के डॉक्टर श्री रमणिक भाई गढा, डॉ. श्री प्रवीण भाई डेढीया, डॉ श्री हरचंद भाई सैया, डॉ. श्रीमती नयना डेढीया, डॉ. श्रीमती पूर्वीबेन देवपुरिया द्वारा प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति पर रोगियों को मार्गदर्शन देकर रोग निदान किया गया । शिविर का आयोजन श्री राजेन्द्र भवन में किया गया । शिविर के शुभारंभ पर डॉ. रमणीक भाई, श्री कांतिलाल जैन, श्री कांतिलाल भण्डारी, श्री दिनेश मामा ने पूज्य गुरुदेवश्री के चित्र के सम्मुख दीपज्ज्वलन व माल्यार्पण कर किया गया ।

इस अवसर पर उपस्थित मरीजों एवं समाजजनों को प्राकृतिक चिकित्सा के बारे में डॉ. रमणीक भाई ने कहा कि आज हम आसाध्य बिमारियों से जकडते जा रहें हैं इन बिमारियों का कारण हमारे खान पान पर ध्यान नहीं देना है । यदि हम जैन धर्म के बताये सिद्धातों एवं नियमों को अपने जीवन में आत्मसात करलें तो इन गंभीर बिमारियों से बचा जा सकता है । इस अवसर पर डॉक्टरों की टीम दवारा समाजजनों को मार्गदर्शन एवं पंजीकृत मरीजों का ईलाज कर रोग निदान किया गया । इसमें आसाध्य रोग केंसर हार्ट, मधुमेह, अस्थमा, जोड़ों का दर्द, लकवा, साईटिका आदि बिमारियों का प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा रोग निदान बताया गया ।

शिविर प्रभारी श्री कीर्ति भण्डारी ने बताया कि इस शिविर में 80 मरिजों का पंजीयन कर उपचार मार्गदर्शन किया गया । अंत में सभी डॉक्टरों का बहुमान परिषद परिवार की ओर से किया गया । एवं कार्यक्रम के लाभार्थी श्री कांतिलाल कनकमलजी जैन, श्री प्रकाशचंदजी दुलीचंदजी कोठारी, श्री कमलचंदजी जैन रायपुरिया वाले एवं श्री कांतिलालजी फुलचंदजी भण्डारी व कार्यक्रम सहयोग प्रदान करने वाले परिषद साथियों का आभार व्यक्त किया गया । कार्यक्रम का संचालन श्री कांतिलालजी भण्डारी ने किया ।

पाठशाला के बच्चे पुरस्कृत

राजगढ : श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक, महिला, तरुण, बालिका परिषद दवारा संचालित जैन पाठशाला के विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने हेतु बच्चों की माह में सर्वाधिक उपस्थिति होने पर 21 विद्यार्थियों को चांदी के सिक्के लाभार्थी श्री शिखरचंद पूनमचंदजी काकड़ीवाला की ओर से वितरित किये गये । एवं उससे कम उपस्थिति वाले 35 विद्यार्थीयों को भी परिषद परिवार की ओर से स्मृति चिन्ह देकर पुरस्कृत किया गया । इस समय पाठशाला में 125 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं । साथ ही वैभव कॉलनी में संचालित पाठशाला में सर्वाधिक उपस्थिति वाले 5 विद्यार्थियों को भी चांदी के सिक्के लाभार्थी दवारा वितरित किये गये ।

गुरु राजेन्द्र जन्मभूमि

भरतपुर महातीर्थ

इस महातीर्थ परिसर में.....

- त्रिमंजिला विशाल महाप्रसाद
- गुरु राजेन्द्र शताब्दी अखण्ड ज्योत
- विश्व का सर्वप्रथम श्रीऋषभ केशरी माँ स्मृति मन्दिर
- सुविधायुक्त धर्मशाला एवं भोजनशाला की सम्पूर्ण व्यवस्था
- नूतन धर्मशाला, भोजनशाला, तीर्थ पेढ़ी का निर्माण कार्य गतिशील है।

तीर्थ संस्थापक एवं मार्गदर्शक
सुविशाल गच्छाधिपति
श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.

दर्शनार्थ अवश्य पधारिये!

निवेदक-
श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट
सेवर रोड़, भरतपुर (राज.) ☎ 05644-260405

आगरा से 44 कि.मी. दिल्ली एवं जयपुर से180 कि.मी. दूरी पर स्थित है।
मुम्बई एवं मेघनगर से जनता एक्सप्रेस, पश्चिम एक्सप्रेस व देहरादून एक्सप्रेस प्रतिदिन मिलती है।

जैन विश्व

जावरा : श्री जैन सोश्यल ग्रुप के मध्यप्रदेश रीजन संस्थापना समारोह में जावरा के श्री अनिल धारीवाल ने रीजन अध्यक्ष की शपथ गृहण की । इस अवसर पर अनेक राजनैतिक एवं सामाजिक अतिथि उपस्थित थे । सम्पूर्ण समारोह भव्य रूप से सम्पन्न हुआ ।

आलोट : ऑल इंडिया जैन जर्नलिस्ट एसोशिएशन (आईजा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हार्दिक हूंडिया द्वारा श्री संजय लोढ़ा (पेटलावद) को राष्ट्रीय मंत्री एवं श्री सन्दीप डाकोतिया (करही) को प्रदेश अध्यक्ष मनोनित किया गया ।

संजीत : खरतरगच्छ संघ की साध्वी श्री गुणरंजना श्री जी की निश्रा मे चार दिवसीय भक्ति महोत्सव धूमधाम से मनाया गया । दि: 27 मार्च 16 को रात्रि भक्ति का भव्य आयोजन किया गया एवं श्री जैन मंदिर प्रांगण में साध्वीजी द्वारा प्रतिदिन सुबह-शाम प्रवचन में नगर के जैन-अजैन बंधुओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया । संघ पूजा का आयोजन किया गया ।

बाड़मेर : होली के पर्व पर दिनांक 21 मार्च को 'सेव द वाटर सेव द लाइफ' अभियान की तरह 'जल है तो कल है' पोस्टर का विमोचन गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति में किया गया।

पुणे : श्री जय जिनेंद्र सेवा संघ, पूणे द्वारा श्री गिरिराज से गिरनार छ: री पालित संघ यात्रा का भव्य आयोजन किया गया । जिसमें दो गच्छाधिपति, 11 आचार्य, 35 साधु एवं 160 साध्वीजी द्वारा भव्य सान्निध्यता प्रदान कर विविध गच्छ-संघ की एक मंच पर एकता की मिसाल कायम की गई । 18 दिवसीय संघ में अनेक धार्मिक आयोजन एवं भक्ति का रमझट लगाया ।

पारा । आचार्यश्री नवरत्न सागर सूरीश्वरजी के देवलोक गमन पश्चात् श्वेताम्बर मालवा महासंघ एवं नवरत्न परिवार द्वारा आयोजित नवरत्न वंदन यात्रा पारा पहुँचने पर जैन श्रीसंघ द्वारा स्वागत किया गया एवं गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया । कार्यक्रम के दौरान पारा श्रीसंघ की ओर से परिषद के महामंत्री सुशील छाजेड़ ने बताया कि सभा में नवरत्न परिवार द्वारा पारा श्रीसंघ को आचार्य नवरत्न सागरजी म.सा. की तस्वीर भेंट की तथा नौ लाख सूरी मंत्र के जाप की सिद्ध वासक्षेप व रक्षा पोटली की प्रभावना दी गई।

अ.भा. श्री सौ. वृ. तपोगच्छीय श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री वाघजी भाई के दौरे के समापन पर दौरे करने वाले श्रीसंघ तथा परिषद के प्रमुख पदाधिकारियों के साथ मंदसौर में लिया गया चित्र

दांएं से–श्री राजेन्द्रजी सुराणा (दलौदा),
श्री राजेन्द्रजी दंगवाड़ा व शांतिलालजी गोखरु (बड़नगर),
श्री शांतिलालजी दसेड़ा (जावरा), श्री गजेन्द्रजी हींगड़ (मंदसौर), श्री रमेशभाई वोरा (नड़ियाद),
श्री सुरेशजी तांतेड़ (राजगढ़), श्री वाघजी भाई वोरा (राष्ट्रीय अध्यक्ष), श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा (मंदसौर),
श्री अशोकजी श्रीश्रीमाल (इन्दौर), श्री सुशीलजी गिरीया (उज्जैन), श्री अरविंदजी देसाई (अहमदाबाद),
श्री शशांकजी लुणावत (राजगढ़), श्री बृजेशजी बोहरा (नागदा), श्री सुधीरजी लोढ़ा (मंदसौर)

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी छेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी दहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला,फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा,फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार,फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार
  फर्म:शा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ, निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

कीर्ति स्तंभ के साथ ही मोहनखेड़ा तीर्थ पर निर्मित

श्री जयन्तसेन म्युजियम

कश्मीर से कन्याकुमारी तक परिभ्रमण करने वाली
गुरु राजेन्द्र शताब्दि अखण्ड ज्योत यात्रा
रथ में विराजित दादा गुरुदेव

श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

की परम प्रभावशाली प्रतिमा
इस म्युजियम में स्थापित है....
त्रिस्तुतिक संघ के प्रत्येक गांव से स्पर्शित एवं
लाखों गुरुभक्तों द्वारा पुजित इस भव्य प्रतिमा के
दर्शन मात्र से निश्चित आनन्द की अनुभूति होती है।
दर्शनार्थ अवश्य पधारें...

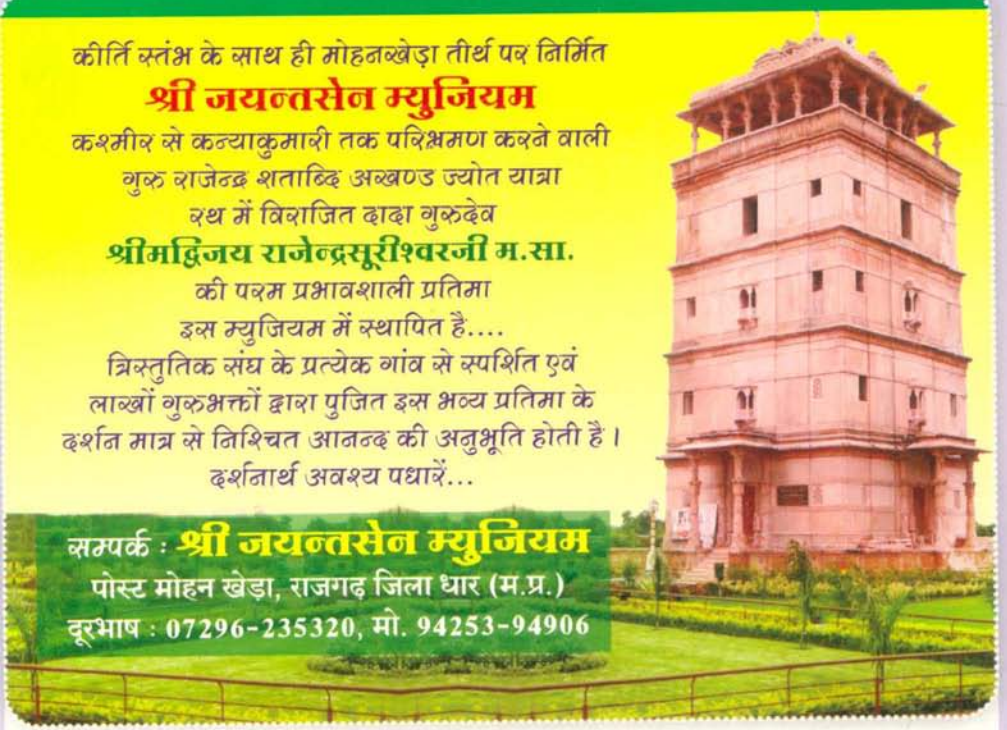

सम्पर्क : **श्री जयन्तसेन म्युजियम**
पोस्ट मोहन खेड़ा, राजगढ़ जिला धार (म.प्र.)
दूरभाष : 07296-235320, मो. 94253-94906

गुरु जन्मभूमि हमारी तीर्थभूमि..... दर्शनार्थ अवश्य पधारिये.....

राष्ट्रसंत, शासन सम्राट, सुविशाल गच्छाधिपति, वचनसिद्ध आचार्यदेव
श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. जन्म भूमि पेपराल महातीर्थ में दर्शनार्थ अवश्य पधारिये...

तीर्थ प्रेरक

शासन सम्राट आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न
मुनिराजश्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

साथ ही आप करेंगे मूलनायक मधुकर महावीरस्वामी भगवान की ६१ इंची विशाल प्रतिमाजी आदि जिनबिम्ब की मनोहारी प्रतिमाजी, दादा गुरुदेव की विशाल ५१ इंची प्रतिमाजी आदि गुरु परंपरा एवं आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की जीवित प्रतिमा जी के दर्शन। विश्व का प्रथम ऐसा मंदिर जिसकी स्पर्शना हेतु सीढी नहीं रेम्प के माध्यम से पहुँचा जा सकता है। सिद्धार्थ-त्रिशला, ऋषभ-केशरी एवं स्वरूप-पार्वती मातृ स्मृति मंदिर के दर्शन का लाभ।

तीर्थ परिसर में निर्माण हो चुका है....

साधु भगवंतों के ठहरने का उपाश्रय
श्री जयन्तसेनसूरि चैतन्य आराधना भवन
आचार्यश्री जन्मभूमि स्थित कुटिया पर विशाल स्मारक
जामराणी चबूतरा

तीर्थ परिसर में निर्माणाधीन है....

- मधुकर शान्ति यात्रिक भवन
- मधुकर उत्तम आराधना भवन
- मधुकर यतीन्द्र आराधना भवन

निवेदक : गुरु जयन्तसेनसूरि जन्मभूमि जैन शासन प्रभावक ट्रस्ट पेपराल (गुज.)

भारत सरकार पंजीयण क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/15-17
Posting Date at Mandsour on 3rd Day of Every Month. कुल पृष्ठ कवर सहित 136

दुनिया से सहारा क्या लेना, तेरा एक सहारा काफी हैं ।
देखूं तो क्या देखूं गुरुदेव, तेरा एक नजारा काफी हैं ।।

सुविशाल गच्छाधिपति, जैनाचार्य, परिषद् प्रेरणापुंज

राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

के चरण कमलों में संघवी शेषमलजी रामाणी परिवार का
कोटी - कोटी वंदना

संघवी शांतिलाल रामाणी

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष	: अ.भा. श्री सौधर्म वृहत्तपोगच्छीय जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ
राष्ट्रीय परामर्शदाता	: अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्
राष्ट्रीय संयोजक	: शाश्वत धर्म
चीफ आर्गनैजर	: आ.प्र. बुलियन गोल्ड सिल्वर एंड डायमंड मर्चन्ट्स एसोसिऐशन
शाश्वत अध्यक्ष	: नेल्लोर डिस्ट्रीक्ट बुलियन एंड डायमंड मर्चन्ट्स एसोसिऐशन
अध्यक्ष	: श्री जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक संघ - नेल्लोर

SHANTILAL & SONS
JEWELLERS
DIAMONDS • GOLD • SILVER
Nellore - 524 001 (A.P)

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001